शिक्षण मंच के रूप में सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन (बरेली जनपद के माध्यमिक व उच्चतर माध्यमिक स्कूलों के शिक्षकों के संदर्भ में)

लघु शोध प्रबन्ध

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय से
जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग विषय
में **एम० फिल०** उपाधि हेतु प्रस्तुत
मास्टर ऑफ फिलॉसफी (एम० फिल०)

शोधार्थी

सुकान्त तिवारी

नामांकन संख्या - 1531/20

शोध निर्देशक

डॉ. कुँवर सुरेंद्र बहादुर

BABASAHEB BHIMRAO AMBEDKAR UNIVERSITY
LUCKNOW
प्रज्ञा शील करूणा
ESTABLISHED 1996

जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग
मीडिया एवं संचार विद्यापीठ
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय,
(केंद्रीय विश्वविद्यालय)
विद्या विहार, रायबरेली रोड, लखनऊ - 226025

2022

घोषणा

मैं, सुकान्त तिवारी यह घोषणा करता हूँ कि मैंने **"शिक्षण मंच के रूप में सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन (बरेली जनपद के माध्यमिक व उच्चतर माध्यमिक स्कूलों के शिक्षकों के संदर्भ में)"** विषय पर शोध कार्य **डॉ. कुँवर सुरेंद्र बहादुर**, जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग, बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, (केन्द्रीय विश्वविद्यालय), लखनऊ के निर्देशन में पूर्ण किया है। एम0फिल0 उपाधि हेतु प्रस्तुत लघु शोध मेरा मौलिक कार्य है। प्रस्तुत लघु शोध इससे पहले इस विश्वविद्यालय में एम0फिल0 उपाधि हेतु प्रस्तुत नहीं किया गया है। प्रस्तुत लघु शोध पूर्ण रूप से प्लैग्यरिज्म मुक्त है।

दिनांक - 13/07/2022

स्थान - लखनऊ

Sukant Tiwari

शोधार्थी

सुकान्त तिवारी
जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग
बाबासाहेब भीमराव
अम्बेडकर विश्वविद्यालय,
(केंद्रीय विश्वविद्यालय) लखनऊ

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय) - नैक 'ए' ग्रेड
विद्या विहार, रायबरेली रोड, लखनऊ-226025

BABASAHEB BHIMRAO AMBEDKAR UNIVERSITY
(A Central University) – NAAC 'A' Grade
Vidya Vihar, Rae Bareli Road, Lucknow-226025

CERTIFICATE

This is to certify that the dissertation titled "शिक्षण मंच के रूप में सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन (बरेली जनपद के माध्यमिक व उच्चतर माध्यमिक स्कूलों के शिक्षकों के संदर्भ में)" submitted by **Mr. Sukant Tiwari** is an original research work and has not been previously submitted in part or full for the award of any other degree or diploma to this or any other University.

The dissertation submitted to Babasaheb Bhimrao Ambedkar University Lucknow, satisfies all the requirements as stipulated in the ***Master of Philosophy (M.Phil.) regulations - 2016*** as amended in 2019 and it is fit for submission and evaluation for the award of the degree of Master of Philosophy of the University.

Date 13.07.2022

Supervisor

Head of the Department

HoD
Deptt. of Mass Communication & Journalism
(School of Media and Communication)
Babasaheb Bhimrao Ambedkar University
Vidya Vihar, Rae Bareli Road
Lucknow-226025

Ouriginal

Document Information

Analyzed document	Abstract - Sukant Tiwari-converted.pdf (D140301895)
Submitted	2022-06-14T12:48:00.0000000
Submitted by	O. P. Saini
Submitter email	gbl.bbau@gmail.com
Similarity	3%
Analysis address	gbl.bbau.bbau@analysis.urkund.com

Sources included in the report

W	URL: http://imc.gov.in/WriteReadData/userfiles/file/2021/Sanchar%20Madhyam/Sanchar%20Madhyam%20JULY%20DEC%202020.pdf Fetched: 2022-06-14T12:50:27.0770000	1
W	URL: https://www.mayoclinic.org/healthy-lifestyle/tween-and-teen-health/in-depth/teens-and-social-media-use/art-20474437 Fetched: 2022-06-14T12:49:00.0000000	2
W	URL: http://www.uou.ac.in/sites/default/files/assignments/jan-2020/BED-17-EPC-1.pdf Fetched: 2022-06-14T12:50:23.1530000	1

Sukant Tiwari

आभार कथन

किसी भी कार्य की सफलता में मार्गदर्शन करने वाले व्यक्तियों का बहुत बड़ा हाथ होता है। अत: इस शोध कार्य के लिए मैं सर्वप्रथम अपने शोध निर्देशक डॉ. कुँवर सुरेंद्र बहादुर सर का आभार प्रकट करना चाहूँगा, जिनके पथ-प्रदर्शन के कारण ही मैं इस शोध कार्य को इसके अंजाम तक पहुँचाने में समर्थ हो सका हूँ। विभाग के वरिष्ठ प्रोफेसर व विभागाध्यक्ष डॉ. गोपाल सिंह सर और संकायाध्यक्ष डॉ. गोविन्द पाण्डेय सर को भी मैं धन्यवाद देना चाहता हूँ। विभाग के अन्य आचार्यों डॉ. महेंद्र कुमार पाधी सर, डॉ. अरविन्द सिंह सर, डॉ. लोकनाथ सर और डॉ. रचना गंगवार मैम का भी मैं विशेष आभारी हूँ।

विभाग के गैर शैक्षिक कर्मचारियों को भी मैं धन्यवाद देना चाहूँगा। साथ ही एम0फिल0 के मेरे सभी सहपाठियों आकांक्षा सिंह, अमन सिन्हा, श्याम प्रताप, अवनीश कुमार व अमित यादव और पीएच.डी. के सभी सीनियर्स विशेषकर श्वेता मैम, ज्योत्सना मैम, आशुतोष कुमार राय सर, सत्येंद्र कुमार मांझी सर, साहेब सर और ऐरिन आर्यन सर को भी मैं विशेष रूप से आभार व्यक्त करना चाहूँगा, जिन्होंने हमेशा मार्गदर्शन करने व हौसला बढ़ाने का काम किया तथा मुझे राह से भटकने नहीं दिया।

मैं अपने माता-पिता, बड़े भाइयों, बहनों एवं भाभी को भी धन्यवाद देना चाहूँगा, जिन्होंने मुझ पर भरोसा जताया तथा इस आभार कथन लिखने तक की यात्रा तय करने में सक्षम बनाया। इनके अलावा ज़िन्दगी के अब तक के सफर में मिलने, बिछड़ने और जीवन का हिस्सा बन जाने वाले सभी दोस्तों, शिक्षकों और बड़े भाइयों को भी धन्यवाद।

गोस्वामी तुलसीदास जी श्रीरामचरितमानस में लिखते हैं “राम कीन्ह चाहहिं सोइ होई”। अत: सबसे अंत में मेरे प्रभु मेरे राम को धन्यवाद, जिनकी कृपा मुझे हमेशा मिलती रही है।

विषय सूची

क्रमांक	अध्याय	पृष्ठ संख्या
अध्याय - 1	प्रस्तावना	1 - 21
अध्याय - 2	साहित्य समीक्षा	22 - 34
अध्याय - 3	शोध प्रविधि	35 - 38
अध्याय - 4	आँकड़ा संकलन एवं विश्लेषण	39 - 59
अध्याय - 5	निष्कर्ष एवं सुझाव	60 - 64
	संदर्भ सूची	65 - 69
	परिशिष्ट	70 - 81

अध्याय 1:
प्रस्तावना

भूमिका

जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं में शिक्षा का भी विशेष स्थान है। शिक्षा के माध्यम से ही व्यक्ति समाज के बुनियादी नियमों, सिद्धांतों और मूल्यों आदि के बारे में सीखता है। शिक्षा के व्यापक अर्थ की बात की जाए तो व्यक्ति जन्म से लेकर मृत्यु तक सीखता ही रहता है। वहीं शिक्षा के संकुचित अर्थ से तात्पर्य स्कूली शिक्षा से है। बदलते समय के साथ-साथ स्कूली शिक्षा का महत्व भी लगातार बढ़ता जा रहा है।

स्कूली शिक्षा में तमाम विषयों से संबंधित सामग्री का अध्ययन तो करवाया ही जाता है, साथ ही स्कूल का वातावरण भी शिक्षा में महती भूमिका निभाता है। किंतु अचानक से शुरू हुई कोविड-19 महामारी ने स्कूली शिक्षा को झकझोरकर रख दिया। दुनिया के लगभग सभी देशों को इस महामारी ने अपनी चपेट में लिया। भारत भी इससे अछूता नहीं रहा। इसने लोगों के जीवन व दिनचर्या को पूरी तरह से बदलकर रख दिया। चूँकि आपसी संपर्क से कोरोना वायरस वाली इस महामारी का प्रसार अधिक तेजी से होता है, इसलिए बचाव के लिए लॉकडाउन का सहारा लिया गया। भारत में भी 22 मार्च 2020 को 14 घंटों के जनता कर्फ्यू के बाद 24 मार्च 2020 को देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 25 मार्च से लॉकडाउन लगाए जाने की घोषणा कर दी। भारत में काफी लंबे समय तक लॉकडाउन की स्थिति रही। इस दौरान लोगों से आपात स्थिति में ही घर से बाहर निकलने की अपील की गई। स्कूल, कॉलेज, कार्यालय, जिम, मॉल व सिनेमाहॉल आदि स्थिति में सुधार होने तक बंद कर दिए गए।

कोविड-19 महामारी के कारण अनगिनत जानें गईं व न जाने कितने लोग बेरोजगार हो गए। इस दौरान नौकरी करने वालों को “वर्क फ्रॉम होम” व शिक्षकों और छात्रों को “एजुकेशन फ्रॉम होम” या यूँ कहें “डिजिटल शिक्षण प्रणाली” का सहारा लेना पड़ा। कक्षाएँ स्कूलों के भवनों से निकलकर कंप्यूटर, लैपटॉप व मोबाइल पर आ गईं। अध्यापन व पठन-पाठन के लिए गूगल मीट, ज़ूम, जीमेल, व्हाट्सएप आदि सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स का इस्तेमाल किया जाने लगा। इस महामारी ने शिक्षकों और छात्रों को भी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर सक्रिय होने के लिए मजबूर कर दिया। शिक्षण प्रणाली का यह रूप कुछ शिक्षकों को पसंद आया तो कुछ लोगों को इसमें समस्याएँ भी हुईं।

प्रौद्योगिकी की भी अपनी सीमाएँ हैं। इसके माध्यम से यूट्यूब व ऑनलाइन कोर्सेस के द्वारा शिक्षक अपने ज्ञान में वृद्धि कर सकते हैं और छात्रों के लिए

नए-नए उदाहरण भी आसानी से ढूँढ़ सकते हैं। प्रौद्योगिकी के प्रयोग से छात्रों को सिखाने के साथ ही शिक्षक भी नई चीजें सीखते हैं। किंतु डिजिटल शिक्षा प्रणाली के द्वारा प्रयोगात्मक विषय जैसे रसायन विज्ञान व भौतिक विज्ञान और गणित आदि विषयों की पढ़ाई ठीक प्रकार से नहीं हो पाती है। साथ ही नेटवर्क और कक्षा के दौरान छात्रों द्वारा कैमरा बंद कर लिए जाने जैसी समस्याओं का सामना भी शिक्षकों को करना पड़ा।

लगभग प्रत्येक प्रौद्योगिकी से कुछ फायदे होते हैं व कुछ नुकसान भी होते हैं। सोशल मीडिया के कारण कोरोना काल में भी पढ़ाई हुई, ख़बरें मिलीं व मनोरंजन हुआ। चूँकि घर से निकलना व अधिक लोगों से मिलना सुरक्षित नहीं था, ऐसे में सोशल मीडिया ने लोगों से संपर्क बनाए रखने में सहायता की। किंतु सोशल मीडिया का अधिक प्रयोग लोगों को आदी भी बना रहा है, जिसका प्रभाव मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य पर पड़ता है। अत: सोशल मीडिया के भी फायदे और नुकसान दोनों ही हैं।

theglobalstatistics.com वेबसाइट के लेख के मुताबिक भारतीय प्रतिदिन औसतन 2 घंटे 25 मिनट सोशल मीडिया पर बिताते हैं।[1] mayoclinic.org वेबसाइट के लेख में अमेरिका में 12-15 साल के 6500 से अधिक बच्चों पर हुए 2019 के एक अध्ययन का संदर्भ देते हुए बताया गया कि दिन में सोशल मीडिया पर तीन घंटे से अधिक बिताने वालों में मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं का खतरा बढ़ सकता है।[2]

कोरोना काल में कई शिक्षकों की नौकरियाँ चली गईं व कइयों का वेतन कम कर दिया गया। डिजिटल शिक्षा के कारण पठन-पाठन के तरीके बदले हैं व दिनचर्या भी परिवर्तित हुई है। शिक्षकों का जो समय कक्षाओं में बीतता था, अब मोबाइलों के साथ बीतने लगा। यदि वे न भी चाहें तो भी उन्हें मोबाइल व सोशल मीडिया का प्रयोग करना ही पड़ रहा था। प्रौद्योगिकी के फायदे तो हैं ही मगर अत्यधिक प्रयोग के कारण कई बार शिक्षकों के व्यवहार में भी परिवर्तन आ सकता है व अन्य समस्याएँ भी हो सकती हैं। प्रस्तुत शोध शिक्षण मंच के रूप में सोशल मीडिया के प्रभाव के अध्ययन से संबंधित है।

शिक्षा - व्यक्ति के जन्म से लेकर मृत्यु तक सीखने का क्रम सतत रूप से चलता रहता है। जन्म के तुरंत बाद बच्चा अपनी माँ व घर-परिवार के अन्य लोगों को देखकर सीखता है। थोड़ा बड़े होने के बाद स्कूल में जाकर सीखता

---

1 *India Social Media Statistics 2021.* (2021, December 14). The Global Statistics. https://www.theglobalstatistics.com/india-social-media-statistics

2 *Teens and social media use: What's the impact?.* (2019, December 21). Mayo Clinic. https://www.mayoclinic.org/healthy-lifestyle/tween-and-teen-health/in-depth/teens-and-social-media-use/art-20474437

है। इस प्रकार सीखने-सिखाने की यह प्रक्रिया जीवन पर्यंत चलती रहती है, जिसे शिक्षा कहा जाता है।

माता-पिता व शिक्षक आदि बच्चों को समाज और संस्कृति के नियमों, मूल्यों तथा सिद्धांतों से परिचित करवाते हैं, साथ ही अपने जीवन के अनुभवों के बारे में भी बताते हैं। अत: इस शिक्षा के कारण ही व्यक्ति अपने समाज व संस्कृति से जुड़ पाता है तथा उचित प्रकार से जीवन यापन कर पाता है।

चूँकि शिक्षा का क्षेत्र बहुत व्यापक है, इसलिए हर कोई इसे अपने नज़रिए से देखता है। अलग-अलग विद्वानों ने शिक्षा को अलग-अलग प्रकार से परिभाषित किया है। स्वामी विवेकानंद मनुष्य द्वारा अपने संपूर्ण व्यक्तित्व का प्रदर्शन किए जाने को शिक्षा कह रहे हैं तो शंकराचार्य शिक्षा को आत्म-साक्षात्कार बताते हैं। पर्सी नन ने व्यक्ति के पूर्ण विकास को शिक्षा बताया है, जिससे वह मानव जीवन में योगदान देने के लिए अपना सर्वोत्तम प्रदर्शन कर सके। जॉन डेवी के अनुसार, अपने पर्यावरण को नियंत्रित करने तथा अपने उत्तरदायित्वों को पूरा करने के योग्य बनाने वाली क्षमताओं का विकास ही शिक्षा है।[3]

भारतीय शिक्षा में गुरु-शिष्य परंपरा का अत्यंत महत्व रहा है। गुरुकुलों में आचार्य अपने शिष्यों को उपनिषद, वेद तथा धर्म आदि के बारे में उपदेश दिया करते थे। समय के साथ विद्यालयों ने गुरुकुलों का स्थान ले लिया। यहाँ अध्यापकों द्वारा विद्यार्थियों को हिंदी, अंग्रेजी, इतिहास, भूगोल व विज्ञान आदि विषयों की पढ़ाई करवाई जाने लगी।

शिक्षा शब्द संस्कृत भाषा की शिक्ष् धातु में अ प्रत्यय लगाकर बनाया गया है। शिक्ष् का अर्थ होता है सीखना व सिखाना। अत: शिक्षा का तात्पर्य सीखने-सिखाने की प्रक्रिया से है। यदि शिक्षा के व्यापक अर्थ की बात करें तो मनुष्य के जीवन में जन्म से मौत तक सीखने-सिखाने की प्रक्रिया निरंतर चलती ही रहती है। सबसे पहले बच्चा घर में माँ व परिवार के अन्य लोगों से सीखता है। इसके बाद स्कूल में शिक्षकों से सीखता है। साथ ही दोस्त, समाज व वातावरण आदि से भी सीखने को मिलता है। इसलिए सीखना-सिखाना कभी भी रुकता नहीं है। वहीं शिक्षा के सीमित अर्थ से तात्पर्य विद्यालय में करवाई जाने वाली पढ़ाई से है। इसमें शिक्षा ग्रहण करने के लिए निश्चित स्थान व समय होता है, जहाँ छात्रों को विभिन्न विषयों की जानकारी दी जाती है।[4]

---

[3] *Elements of education.* (2016). Vikas publishing house. https://rgu.ac.in/wp-content/uploads/2021/02/Download_624.pdf

[4] Jauhari, D. (2016). Education: concept, definition and scope. In *Contemporary India and education* (pp. 1-16). Uttarakhand Open University. https://elearning.uou.ac.in/pluginfile.php/196/mod_resource/content/1/BEDSEDE-A2.pdf

शिक्षा का क्षेत्र - संसार के प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षा की आवश्यकता होती है। इसी की सहायता से वह जीवन व्यतीत करता है व सभी आवश्यक कार्य करता है। इसी तरह सभी क्षेत्र भी शिक्षा से जुड़े हुए हैं क्योंकि यदि क्षेत्र के बारे में ज्ञान ही नहीं होगा तो उससे संबंधित कार्य भी नहीं हो सकेंगे। अत: शिक्षा का क्षेत्र बहुत व्यापक है।

शिक्षा जीवन की बुनियादी ज़रूरत है। व्यक्ति जब तक कुछ सीखेगा नहीं तब तक उसे कुछ करना भी नहीं आएगा। बच्चा कुछ भी माँ के पेट से सीखकर नहीं आता, बल्कि जन्म लेने के बाद दूसरों को देखकर सीखता है या उसे सिखाया जाता है। ज़िंदगी कैसे जीनी चाहिए, संसार में क्या-क्या होता है, क्या-क्या हो चुका है व समाज के नियम आदि सब कुछ व्यक्ति को बताया या सिखाया जाता है। अत: यह सब शिक्षा का क्षेत्र ही है। चूँकि संपूर्ण मानव जीवन ही शिक्षा से जुड़ा हुआ है, इसलिए किसी भी साधारण व्यक्ति के लिए यह संभव नहीं है कि वह अपने पूरे जीवनकाल में इसके सभी क्षेत्रों का अध्ययन कर सके। इसी कारण क्षमता, योग्यता व रुचि को ध्यान में रखते हुए विषय-वस्तु को अलग-अलग विषयों में विभाजित कर लिया जाता है। इससे व्यक्ति आसानी से अपनी रुचि के क्षेत्र का अध्ययन कर पाता है। शिक्षा के क्षेत्रों को निम्नलिखित भागों में बाँटा जा सकता है -

- **शिशु शिक्षा -** लगभग दो वर्ष से छह वर्ष तक के बालकों की शिक्षा को शिशु शिक्षा कहा जाता है। इन बालकों को प्राय: शिशुशालाओं में पढ़ाया जाता है।
- **बाल शिक्षा -** छह वर्ष के बाद से लगभग ग्यारह या बारह वर्ष तक के बच्चों की शिक्षा को बाल शिक्षा या प्रारंभिक शिक्षा कहा जाता है।
- **प्रौढ़ शिक्षा -** इसमें ऐसे वयस्कों को शिक्षा दी जाती है, जो किसी कारणवश अपने बचपन में शिक्षा प्राप्त नहीं कर सके, किंतु अब ज्ञान व कौशल के लिए या रोजगार पाने के लिए या किसी अन्य कारण से शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं।
- **व्यावसायिक शिक्षा -** समाज में विभिन्न प्रकार के व्यवसाय उपलब्ध हैं। लोग अपनी योग्यता व रुचि के अनुसार इनका चयन कर सकते हैं। अत: व्यावसायिक शिक्षा में छात्र को उसकी रुचि के व्यवसाय से संबंधित शिक्षा दी जाती है व छात्र को उस व्यवसाय के योग्य बनाने का प्रयास किया जाता है। इसका स्वरूप व्यावहारिक होता है।
- **अध्यापक शिक्षा -** विद्यालय में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। अध्यापक के पढ़ाने का तरीका व विद्यार्थियों के साथ उसका

व्यवहार छात्रों के भविष्य को प्रभावित करता है। अत: अध्यापक शिक्षा में शिक्षकों को कक्षा व स्कूल में उनके कार्यों को प्रभावी व सही तरीके से करने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है।

- **शिक्षा दर्शन -** कुछ सीखने-सिखाने के लिए मानव जीवन को समझना आवश्यक है। अत: जीवन को लेकर विभिन्न दृष्टिकोणों के आधार पर शिक्षा की प्रकृति, उद्देश्य व पाठ्यक्रम आदि के अध्ययन को शिक्षा दर्शन कहा जाता है।
- **शैक्षिक समाजशास्त्र -** व्यक्ति समाज में रहता है व समाज से ही सीखता है। समाज व विभिन्न सामाजिक समूह व्यक्ति के व्यवहार, विचार व कार्यों आदि को प्रभावित करते हैं। जिस प्रकार समाज व्यक्ति को प्रभावित करता है, उसी प्रकार समाज पर शिक्षा प्रभाव डालती है। अत: शिक्षा, समाज और मनुष्य एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। समाज की प्रकृति, समाज व विभिन्न सामाजिक समूहों तथा इनके साथ शिक्षा के सम्बन्ध आदि का अध्ययन शैक्षिक समाजशास्त्र कहलाता है।
- **शिक्षा मनोविज्ञान -** किसी व्यक्ति द्वारा नई जानकारी ग्रहण करने व सीखने की प्रक्रिया का अध्ययन शिक्षा मनोविज्ञान के अंतर्गत आता है। इसमें सीखने वाले की प्रकृति, रुचि, योग्यता, चेतना, कल्पना तथा चिन्तन आदि का अध्ययन भी किया जाता है।
- **शिक्षा का इतिहास -** हर वर्तमान का एक अतीत होता है, इसलिए वर्तमान को समझने के लिए उसके बीते हुए कल को जानना अति आवश्यक होता है। अतीत को जानकर व समझकर वर्तमान और भविष्य के लिए शिक्षा ली जा सकती है तथा बहुत सी ग़लतियों को दोहराने से बचा जा सकता है। अत: आदिकाल से वर्तमान काल तक की शिक्षा के स्वरूप, व्यवस्था और परिणामों आदि का विस्तृत अध्ययन इस क्षेत्र में किया जाता है। इस अध्ययन की सहायता से ही वर्तमान शिक्षा व्यवस्था व उसके स्वरूप में उचित व आवश्यक परिवर्तन किए जाते हैं।
- **तुलनात्मक शिक्षा -** इसके अंतर्गत विभिन्न शिक्षा व्यवस्थाओं का तुलनात्मक अध्ययन करके अपनी शिक्षा प्रणाली का मूल्यांकन किया जाता है। दूसरी शिक्षा पद्धतियों के गुण-दोष देखकर अपनी कमियों को दूर करने का प्रयास किया जाता है व अच्छाइयों को अपनाया जाता है।

इनके अतिरिक्त स्त्री शिक्षा, तकनीकी शिक्षा, शैक्षिक नियोजन, शिक्षण कला एवं तकनीकी, शैक्षिक प्रशासन एवं संगठन, तथा शैक्षिक समस्याएँ आदि भी शिक्षा के क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं।[5]

शिक्षा के प्रकार - व्यक्ति द्वारा नए-नए कौशलों को सीखने व अपने ज्ञान और समझ आदि को बढ़ाने के तरीकों को शिक्षा कहा जाता है। शिक्षा के निम्नलिखित 3 प्रकार हो सकते हैं[6] -

1) औपचारिक शिक्षा (Formal Education)
2) अनौपचारिक शिक्षा (Informal Education)
3) निरौपचारिक शिक्षा (Non formal Education)

1) औपचारिक शिक्षा (Formal Education) - स्कूलों, विश्वविद्यालयों व महाविद्यालयों में दी जाने वाली शिक्षा को औपचारिक शिक्षा कहा जाता है। इस प्रकार की शिक्षा में सीखने का स्थान, समय, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियाँ तथा शिक्षण के उद्देश्य आदि पूर्व नियोजित होते हैं। इसमें शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों का अध्ययन करवाया जाता है और फिर उनकी परीक्षा भी ली जाती है। परीक्षा पास करने पर प्रमाण पत्र भी दिए जाते हैं, जो नौकरी पाने में शिक्षार्थी के सहायक होते हैं। सामान्यत: औपचारिक शिक्षा का मुख्य उद्देश्य छात्र को व्यवसाय व उद्योग आदि में सफल बनाना होता है। इसमें धन व समय काफी खर्च होता है।

2) अनौपचारिक शिक्षा (Informal Education) - इस प्रकार की शिक्षा में सीखने का स्थान, समय, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियाँ, शिक्षण के उद्देश्य तथा विषय आदि पूर्व नियोजित नहीं होते हैं। मनुष्य अपने जन्म से लेकर मृत्यु तक अनौपचारिक शिक्षा ग्रहण करता रहता है। बच्चे का पहला पाठ जो वह अपने घर में सीखता है, वह भी अनौपचारिक ही होता है। दूसरों को देखकर, समाज, वातावरण व अपने अनुभवों आदि से भी व्यक्ति सीखता है, यह सब अनौपचारिक शिक्षा ही है। व्यक्ति अपने जीवन में सबसे अधिक अनौपचारिक शिक्षा ही प्राप्त करता है।

3) निरौपचारिक शिक्षा (Non formal Education) - ऐसी शिक्षा जो पूर्ण रूप से न तो औपचारिक है और न ही अनौपचारिक बल्कि इन दोनों का मिला-जुला रूप है। इस प्रकार की शिक्षा में औपचारिक शिक्षा की भाँति शिक्षण के उद्देश्य व पाठ्यक्रम तो पूर्व नियोजित होते हैं किंतु यह शिक्षा अनौपचारिक शिक्षा की भाँति विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों के

---

[5] Jauhari, D. (2016). Education: concept, definition and scope. In *Contemporary India and education* (pp. 1-16). Uttarakhand Open University. https://elearning.uou.ac.in/pluginfile.php/196/mod_resource/content/1/BEDSEDE-A2.pdf

[6] *Elements of education*. (2016). Vikas publishing house. https://rgu.ac.in/wp-content/uploads/2021/02/Download_624.pdf

परिसरों से बँधी नहीं होती। इसमें समय, स्थान व शिक्षण की विधियाँ सीखने वालों की सुविधा के अनुसार तय किए जाते हैं। प्रौढ़ शिक्षा, दूरस्थ शिक्षा आदि निरौपचारिक शिक्षा के उदाहरण हैं।

शिक्षण - एक व्यक्ति द्वारा किसी दूसरे व्यक्ति को ज्ञान प्रदान करने, उसके कौशल का विकास करने या उसे किसी कार्य के लिए उत्साहित करने की प्रक्रिया को शिक्षण कहा जाता है। शिक्षण का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थी के व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन लाना व उसके मस्तिष्क का विकास करना होता है। इस प्रक्रिया में शिक्षक महत्वपूर्ण भूमिका में होता है। इस प्रक्रिया के सफल होने के लिए शिक्षक व विद्यार्थी के बीच प्रत्यक्ष वार्तालाप आवश्यक होता है। सामाजिक परिस्थितियों व विभिन्न सामाजिक समूहों से शिक्षण की प्रक्रिया प्रभावित होती है। देश के शासन का स्वरूप, राजनीति, सामाजिक दर्शन, मूल्य, व संस्कृति आदि भी शिक्षण को प्रभावित करते हैं। शिक्षण के मुख्य तत्व शिक्षक, विद्यार्थी व पाठ्यक्रम होते हैं। यह तीनों ही शिक्षण के लिए समान रूप से आवश्यक हैं व इनके बिना शिक्षण की प्रक्रिया को पूर्ण नहीं किया जा सकता है। चूँकि देश का शासन व छात्र के अधिगम स्तर भी शिक्षण को प्रभावित करते हैं, इसलिए शासन व्यवस्था व अधिगम स्तर के आधार पर शिक्षण को कई भागों में विभाजित किया जा सकता है।

शासन व्यवस्था के आधार पर शिक्षण को निम्नलिखित 3 भागों में विभाजित किया जा सकता है[7] -

1) एकतंत्रात्मक प्रणाली का शिक्षण
2) लोकतांत्रिक प्रणाली का शिक्षण
3) हस्तक्षेप रहित शिक्षण

1) एकतंत्रात्मक प्रणाली का शिक्षण - इस प्रकार के शिक्षण में शिक्षक का स्थान मुख्य होता है व शिक्षक ही विद्यार्थियों की क्रियाओं को दिशा देने का काम करते हैं। शिक्षकों द्वारा पाठ पढ़ाया जाता है तथा छात्र केवल श्रोता के रूप में होते हैं।

2) लोकतांत्रिक प्रणाली का शिक्षण - इसमें जनता की इच्छा को प्रमुखता दी जाती है। अत: इसमें शिक्षक व छात्र दोनों अहम व सक्रिय भूमिका में होते हैं तथा दोनों के मध्य शाब्दिक व अशाब्दिक अंत:क्रिया भी होती है। इसमें विद्यार्थियों को तर्क करने व प्रश्न करने के अवसर भी दिए जाते हैं।

3) हस्तक्षेप रहित शिक्षण - इसमें विद्यार्थियों को अधिक महत्व दिया जाता है। शिक्षकों द्वारा एक मित्र की तरह कार्य करते हुए छात्रों को अधिक से

[7] Pradhan, P. (2019, October 3). *Shikshana ka arth aur paribhasha.* Hindivaani. https://hindivaani.com/शिक्षण-का-अर्थ-और-परिभाषा/

अधिक अवसर देने का प्रयास किया जाता है, जिससे वे अधिक सक्रिय रह सकें व अपनी समस्याओं का हल स्वयं ढूँढ़ सकें। इस प्रकार के शिक्षण में शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों की सृजनात्मक क्षमताओं को विकसित करने की कोशिश की जाती है।

अधिगम स्तर के आधार पर भी शिक्षण को निम्नलिखित 3 भागों में बाँटा जा सकता है[8] -

1) स्मृति स्तर पर शिक्षण (Memory Level Teaching)
2) अवबोध/समझ स्तर का शिक्षण (Understanding Level Teaching)
3) विमर्शी/चिंतनशील स्तर का शिक्षण (Reflective Level Teaching)

1) स्मृति स्तर पर शिक्षण - यह शिक्षण छात्र के स्मृति स्तर पर आधारित होता है। इसमें शिक्षक मुख्य भूमिका में होता है तथा पाठ्य सामग्री पूर्व नियोजित होती है। शिक्षक द्वारा क्रमानुसार पाठ पढ़ाया जाता है व विद्यार्थी द्वारा उसे समझने के स्थान पर रटने व याद करने की कोशिश की जाती है। यह शिक्षण का प्रथम व निम्न स्तर है।

2) अवबोध/समझ स्तर का शिक्षण - यह स्मृति स्तर के बाद का शिक्षण है। इसमें तथ्यों को रटने के स्थान पर उन्हें समझने की कोशिश की जाती है। इसमें शिक्षक द्वारा छात्रों को तथ्यों व सिद्धांतों के मध्य के सम्बन्धों के बारे में विस्तार से जानकारी दी जाती है तथा सिद्धांतों का प्रयोग करना भी सिखाया जाता है।

3) विमर्शी/चिंतनशील स्तर का शिक्षण - इसमें छात्र की सोचने की शक्ति का विकास कर उसमें सृजनात्मक पहलुओं को विकसित करने की कोशिश की जाती है। यह शिक्षण विद्यार्थियों की समझ का इस प्रकार विकास करता है कि वह किसी सिद्धांत या तथ्य का आलोचनात्मक विश्लेषण कर सके तथा किसी समस्या को समझकर उसका समाधान ढूँढ़ सके।

भारतीय शिक्षा पद्धति - प्राचीन भारत की शिक्षा में आध्यात्मिकता पर अधिक बल दिया जाता था। समय के साथ इसमें काफी बदलाव हुए। वैदिक काल में गुरुकुल व आश्रम शिक्षा के मुख्य केंद्र हुआ करते थे, जहाँ ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद आदि की शिक्षा दी जाती थी तथा पूजा, यज्ञ, हवन व कर्मकाण्ड आदि सिखाया जाता था। इसके अलावा दर्शन, व्याकरण, ज्योतिष, विज्ञान व छंद आदि का अध्ययन भी करवाया जाता था। विद्यार्थी गुरु के आश्रम में रहकर ही शिक्षा ग्रहण करते थे। गुरु का स्थान सर्वश्रेष्ठ माना

---

[8] Waghmare, P. (2021, October 28). *Levels of teaching: Memory level, understanding level & reflective level.* Testbook. https://testbook.com/learn/levels-of-teaching/

जाता था। इसके बाद बौद्ध धर्म ने भी शिक्षा पर अपनी छाप छोड़ी। इसमें मठों व विहारों में शिक्षा दी जाती थी। शिक्षा के मुख्य उद्देश्य बौद्ध धर्म का प्रचार, सत्य व अहिंसा के आधार पर मानव समाज की स्थापना, मोक्ष प्राप्ति तथा चरित्र निर्माण आदि थे। इस दौरान हस्तशिल्प, भवन निर्माण कला, मूर्तिकला, चित्रकला, विज्ञान, चिकित्सा शास्त्र व व्यावसायिक शिक्षा आदि विषयों पर भी जोर दिया गया।[9]

भारत पर अनेकों बार विदेशी आक्रांताओं द्वारा आक्रमण किए गए तथा भारतीय संस्कृति को नुकसान पहुँचाने की कोशिश की गई। भारत में जब मुस्लिम शासन का उदय हुआ तो भारतीय शिक्षा भी इससे प्रभावित हुई। इस्लाम के अनुयायियों ने अपने मजहब के प्रचार-प्रसार के लिए मकतब एवं मदरसे शुरू किए। इस दौरान इस्लाम के प्रचार के साथ-साथ कला, संगीत, कृषि, चिकित्सा व शिल्पकला आदि विषयों पर भी ध्यान दिया गया। भारत में जब अंग्रेजी शासन की शुरुआत हुई तो उन्होंने भी शिक्षा की सहायता से अपने धर्म व संस्कृति का प्रचार करने के प्रयत्न किए। इसका प्रभाव यह हुआ कि भारतीय शिक्षा में अंग्रेजी का बोलबाला हो गया। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय शिक्षा पद्धति में बदलाव तो हुए किंतु भारतीय शिक्षा से अंग्रेजी का प्रभाव पूर्ण रूप से नहीं गया। वर्तमान में स्वतंत्रता प्राप्ति के 75 साल बाद भी देश की शिक्षा पर अंग्रेजी का प्रभाव बरकरार है। इसीलिए कहा भी जाता है "अंग्रेज चले गए लेकिन अंग्रेजी छोड़ गए"।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत सरकार द्वारा शिक्षा पद्धति में सुधार करने के प्रयास किए गए। इसके लिए समय-समय पर कई आयोग व समितियों का गठन किया गया। सबसे पहले 1948 में विश्वविद्यालय शिक्षा को लेकर डॉ. एस. राधाकृष्णन की अध्यक्षता वाले विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग का गठन किया गया। 1952 में डॉ. ए. लक्ष्मणस्वामी मुदालियर की अध्यक्षता में माध्यमिक शिक्षा आयोग गठित हुआ, जिसका उद्देश्य माध्यमिक शिक्षा की स्थिति का अध्ययन करना था। इसके बाद 14 जुलाई 1964 को डॉ. दौलत सिंह कोठारी की अध्यक्षता में स्कूली शिक्षा प्रणाली को नया आकार देने के लिए एक शिक्षा आयोग का गठन किया गया। इस आयोग ने 29 जून 1966 को अपनी रिपोर्ट पेश की। इस आयोग ने प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा 10 वर्ष, उच्चतर माध्यमिक शिक्षा 2 वर्ष तथा व्यावसायिक शिक्षा 3 वर्ष की किए जाने का सुझाव दिया। इस आयोग के सुझावों को मूर्त रूप देने के लिए स्वतंत्र भारत की प्रथम राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968 लाई गई, जिसमें 10+2+3

[9] *Contemporary India and education*. (n.d.). (n.p.). http://www.mgahv.in/Pdf/Dist/gen/shiksha_0003_18_03_16.Pdf

के शैक्षिक ढाँचे को पूरे देश में लागू करने की बात कही गई।[10] इस शिक्षा नीति में विज्ञान, अनुसंधान शिक्षा, कृषि शिक्षा व व्यावसायिक शिक्षा पर बल दिया गया। किसी भी देश के लिए वहाँ का हर एक नागरिक समान होता है, अत: सभी बच्चों को जाति, धर्म, लिंग व स्थान आदि के आधार पर भेदभाव किए बिना शिक्षा देने की बात भी कही गई। इस नीति का उद्देश्य देश की प्रगति को बढ़ाना व शिक्षा की गुणवत्ता को उच्चतर स्तर पर ले जाना था। इस शिक्षा नीति के लागू होने के बाद भारतीय शिक्षा में काफी बदलाव आया व व्यापक प्रसार हुआ।

किसी भी देश या समाज के विकास के लिए शिक्षा सबसे आवश्यक शर्त है। शिक्षा की सहायता से ही किसी संस्कृति या विचार आदि का प्रसार किया जाता है। यही कारण है कि प्रत्येक राष्ट्र की अपनी एक विशिष्ट शिक्षण प्रणाली होती है तथा इसमें समय-समय पर परिवर्तन भी किए जाते हैं। भारत में भी प्रथम राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968 के लागू होने के कुछ साल बाद इसमें बदलाव किए जाने की आवश्यकता महसूस की गई। इसी कारण 1985 में तत्कालीन शिक्षा व्यवस्था का विश्लेषण व समीक्षा कर "Challenge of Education - A Policy Perspective" डॉक्यूमेण्ट प्रकाशित हुआ, जिसके आधार पर नई शिक्षा नीति का प्रारूप तैयार किया गया। मई 1986 में संसद द्वारा इस प्रारूप को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के रूप में मंजूरी दे दी गई। इस नीति में 10+2+3 के शैक्षिक ढाँचे को पूरे देश में लागू करवाने व मुक्त विश्वविद्यालय (Open Universities) प्रणाली के विस्तार पर ध्यान देने की बात कही गई। साथ ही ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड भी लांच किया गया। 1986 की शिक्षा नीति की समीक्षा के लिए मई 1990 में आचार्य राममूर्ति की अध्यक्षता में समिति बनी। जुलाई 1991 में एन. जनार्डन रेड्डी की अध्यक्षता में एक और समिति बनी, जिसके सुझावों के आधार पर 1992 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में संशोधन किए गए।[11] राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में नारी शिक्षा और प्रौढ़ शिक्षा पर बल दिया गया तथा शिक्षा क स्तर को ऊपर उठाने का प्रयास किया गया।

समय किसी का इंतजार नहीं करता है। समय के साथ ही दुनिया भी बहुत तेजी से बदल रही है व यहाँ हर दिन नए-नए प्रयोग हो रहे हैं तथा तकनीक का विकास हो रहा है। 21वीं शताब्दी को न्यू मीडिया का युग भी कहा जाता है। अत: भारत को विकास के पथ पर अग्रसर करने हेतु अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए एक बार पुन: देश की शिक्षा नीति में

---

[10] *History of education policy in India.* (n.d.). e-pg pathshala. http://epgp.inflibnet.ac.in/epgpdata/uploads/epgp_content/S000033SO/P000300/M013097/ET/145258955205ET.pdf

[11] *National Policy on Education (1986)*. (n.d.). Amu. https://old.amu.ac.in/emp/studym/100003933.pdf

बदलाव किए जाने की आवश्यकता महसूस की गई। अत: नई शिक्षा नीति के कार्यान्वयन के लिए 31 अक्टूबर 2015 को स्वर्गीय टीएसआर सुब्रह्मण्यम की अध्यक्षता में एक समिति का गठन भारत सरकार द्वारा किया गया। इस समिति ने 27 मई 2016 को अपनी रिपोर्ट मंत्रालय को सौंप दी। इसके उपरांत 24 जून 2017 को नई शिक्षा नीति का प्रारूप तैयार करने के लिए डॉ. के. कस्तूरीरंगन की अध्यक्षता में एक समिति बनाई गई। इस समिति ने 31 मई 2019 को अपनी रिपोर्ट पेश की।[12] इसके पश्चात आवश्यक प्रक्रिया के बाद 29 जुलाई 2020 को देश के प्रधानमंत्री की अध्यक्षता वाले मंत्रिमंडल ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को मंजूरी प्रदान कर दी। इस नई शिक्षा नीति में 10+2 के पुराने शैक्षिक ढाँचे को समाप्त कर 5+3+3+4 के शैक्षिक ढाँचे को लागू किए जाने की की बात कही गई है। इस नीति के अनुसार विद्यार्थियों के लिए संस्कृत व अन्य प्राचीन भारतीय भाषाओं के विकल्प उपलब्ध रहेंगे व विद्यार्थी स्वेच्छा से चुनाव कर सकेंगे। इसके अलावा छात्रों की शारीरिक शिक्षा पर भी ध्यान दिया जाएगा। छठवीं कक्षा से पाठ्यक्रम में व्यावसायिक शिक्षा को जोड़ने व इंटर्नशिप की व्यवस्था किए जाने की बात भी इस नई शिक्षा नीति में कही गई है।[13]

21वीं शताब्दी के भारत की आवश्यकताओं की पूर्ति करने के उद्देश्य से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लाई गई है। इसकी सफलता के लिए आवश्यक है कि भारत के सभी राज्य इस नीति को सफल बनाने व देश को आगे ले जाने में सहयोग करें।

शिक्षा में सूचना-संचार प्रौद्योगिकी - वर्तमान युग सूचना एवं तकनीक की क्रांति का युग है। हर दिन नई-नई तकनीकों का विकास हो रहा है, जो विश्व को एक वैश्विक गाँव बनाने की ओर अग्रसर हैं। इन तकनीकों ने मानव जीवन को काफी सरल बनाया है। इसकी सहायता से कम परिश्रम में प्रतिफल प्राप्त किया जा सकता है। इन तकनीकों ने शिक्षा के क्षेत्र को भी प्रभावित किया है। शिक्षा प्रक्रिया के प्रत्येक स्तर पर प्रौद्योगिकी का प्रयोग किया जा रहा है। पुरातन काल में गुरुओं द्वारा मौखिक रूप से ही अपने शिष्यों को ज्ञान दिया जाता था। फिर जब पुस्तकें छापे जाने की तकनीक का अविष्कार हो गया तब सारा ज्ञान याद रखे जाने की आवश्यकता समाप्त हो गई। पुस्तकों के माध्यम से उसी जानकारी को अधिक समय तक सुरक्षित रखने में भी आसानी होने लगी।

---

[12] *Timeline - Formulation of National Education Policy*. (n.d.). Education. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/nep_timeline.pdf

[13] Ministry of Education. (2020, September 14). *Highlights of New Education Policy-2020* [Press release]. https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1654058

समय के साथ जब रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा, कंप्यूटर व इंटरनेट आदि के अविष्कार हुए तो इन्होंने शिक्षा के क्षेत्र को और अधिक सरल बनाने में सहायता की। वर्तमान समय में रेडियो, टेलीविजन, इंटरनेट, कंप्यूटर और मोबाइल आदि की सहायता से एक स्थान पर बैठे हुए शिक्षक देश-दुनिया के किसी भी स्थान पर रह रहे विद्यार्थियों से संपर्क कर सकते हैं, उनकी पढ़ाई करवा सकते हैं। साथ ही इंटरनेट और तमाम वेबसाइट्स पर जानकारी संग्रहित की जा सकती है, जिसे जब मन करे खोलकर पढ़ा जा सकता है। इसके अलावा दूरस्थ शिक्षा, मुक्त शिक्षा तथा प्रशन पत्र व प्रमाण पत्र आदि के निर्माण में भी प्रौद्योगिकी का प्रयोग किया जा रहा है। अत: सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी ने शिक्षा व शिक्षण कार्य को बहुत आसान तो बनाया ही है, साथ ही अधिक प्रभावी भी बना दिया है। प्रौद्योगिकी की सहायता से शिक्षा की पहुँच भी बहुत अधिक लोगों तक हो गई है।

मीडिया - अंग्रेजी भाषा के मीडियम शब्द के बहुवचन को मीडिया कहा जाता है, जिसका अर्थ होता है माध्यम। अत: मीडिया शब्द का प्रयोग संचार के साधनों के लिए किया जाता है। इन साधनों में समाचारपत्र, पत्रिकाएँ, रेडियो, सिनेमा व टेलीविजन आदि सम्मिलित किए जाते हैं। मीडिया की सहायता से किसी संदेश को एक विशाल जनसंख्या तक पहुँचाने का कार्य किया जाता है। बिना माध्यम के न तो कोई संदेश भेजा जा सकता है व न ही प्राप्त किया जा सकता है। किसी एक व्यक्ति, समूह या देश की सरकार के लिए यह संभव नहीं है कि वह देश के हर एक व्यक्ति तक व्यक्तिगत तौर से अपनी बात पहुँचा सके। अत: सरकारों व राजनेताओं व कंपनियों आदि के द्वारा मीडिया की सहायता से ही आम जनता के साथ संवाद किया जाता है। मीडिया की सहायता से ही लोगों को अपने समाज व देश आदि से संबंधित सूचनाएँ प्राप्त होती हैं व मनोरंजन भी होता है। बड़े-बड़े कॉर्पोरेट संगठनों द्वारा अपने उत्पाद व सेवाओं की जानकारी लोगों तक पहुँचाने के लिए मीडिया का सहारा लिया जाता है। इन संगठनों द्वारा अलग-अलग मीडिया में विज्ञापन दिए जाते हैं व जनता तक पहुँचने की कोशिश की जाती है।

लोगों तक सूचना व मनोरंजन पहुँचाने के साथ ही मीडिया लोगों को शिक्षित करने का कार्य भी करता है। समाज में फैली कुप्रथाओं व बुराइयों से पर्दा उठाने व लोगों को जागरूक करने का कार्य भी मीडिया का है। समाज में प्रचलित कई कुरीतियों जैसे - जातिवाद, पर्दा प्रथा, बहु-विवाह, सती प्रथा व कई प्रकार के धार्मिक अविश्वासों को लेकर समाज के लोगों का दृष्टिकोण बदलने का कार्य भी मीडिया ने किया है। परम्परागत समाजों को आधुनिकता

की ओर अग्रसर करने का कार्य भी मीडिया द्वारा किया गया है। मीडिया समाज के लोगों को एक दूसरे से जोड़कर भी रखता है। मीडिया के बिना लोगों को देश-दुनिया के हालातों की जानकारी नहीं मिल पाएगी। मीडिया के पास समाज के लगभग हर वर्ग के लिए उपयोगी जानकारी है। वर्तमान में मीडिया लोगों के जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है।

मीडिया के प्रकार - सामान्यत: मीडिया के तीन प्रकार माने जाते हैं, जो निम्नलिखित हैं -

1) लोक मीडिया
2) प्रिंट मीडिया
3) इलेक्ट्रॉनिक मीडिया

1) लोक मीडिया - लगभग प्रत्येक समाज व संस्कृति में अपने मनोरंजन व संचार के लिए कुछ माध्यम प्रचलित होते हैं, इन्हें ही लोक मीडिया कहा जाता है। यह आम लोगों का मीडिया है। इसे पारम्परिक मीडिया भी कहा जाता है। लोक मीडिया के द्वारा समाज व संस्कृति की लोक कथाओं आदि का प्रसार-प्रचार किया जाता है। कई लोक माध्यमों द्वारा समाज में फैली कुरीतियों पर भी प्रश्न उठाए जाते हैं व नैतिक शिक्षा देने का कार्य भी किया जाता है। इसमें क्षेत्रीय लोगों की ही भागीदारी होती है। यह मीडिया काफी सस्ता होता है व स्थानीय भाषाओं में होने के कारण समाज के लोगों पर गहरा प्रभाव डालता है। इसकी सहायता से देश की परम्पराओं व संस्कृतियों को संरक्षित रखा जाता है व उनका प्रसार-प्रचार किया जाता है। भारतीय लोक माध्यमों में संवाद भी होता है और संगीत तथा नृत्य भी। ये लोगों का मनोरंजन तो करते ही हैं, साथ ही उन्हें शिक्षित भी करते हैं।

लोक माध्यमों के उदाहरण हैं - महाराष्ट्र का तमाशा, कर्नाटक का यक्षगान, उत्तर भारत की नौटंकी, बंगाल व उड़ीसा का जात्रा, गुजरात का भवाई तथा तमिलनाडु का थेरूकूथु आदि। इनके अलावा कठपुतली, रासलीला, रामलीला, कीर्तन तथा नुक्कड़ नाटक आदि भी प्रचलित लोक माध्यम हैं।[14]

2) प्रिंट मीडिया - इसमें मुद्रित रूप में सूचनाओं को प्रसारित किया जाता है। समाचारपत्र, पत्रिकाएँ, पर्चे व पुस्तकें आदि प्रिंट मीडिया के उदाहरण हैं। यह मास मीडिया के शुरुआती रूपों में से एक है। मुद्रित सामग्री होने के कारण इसे सबूत के तौर पर प्रयोग किया जा सकता है तथा काफी लम्बे समय तक सम्भाल कर रखा जा सकता है। सामान्यत: प्रिंट मीडिया की सूचनाएँ एक दिन पुरानी होती हैं। इसके प्रकाशन की समय सीमा तय होने के कारण

[14] Kumar, K.J. (2018). *Mass Communication in India* (4th Rev. ed.). Jaico.

इसमें तुरंत घटित घटनाओं को जगह नहीं दी जा सकती है। प्रिंट मीडिया में प्रयोग होने वाली भाषा जन सामान्य की भाषा होती है, जिससे वह हर व्यक्ति को सरलता से समझ आ सके। समाचारपत्र, पत्रिकाओं, पर्चों व पुस्तकों आदि का प्रकाशन किसी विशेष पाठक वर्ग को लक्षित करके भी किया जा सकता है, जिससे बात सिर्फ उन्हीं लोगों तक पहुँचे जिन तक पहुँचानी है। प्रिंट मीडिया की कमजोरी यह है कि इसके प्रयोग के लिए पाठकों का साक्षर होना अनिवार्य है व साथ ही इसकी पहुँच भी सीमित होती है।

भारत में सबसे पहले 1566 में गोवा में पहली प्रिंटिंग प्रेस की स्थापना हुई। यहीं से भारत में पुस्तक प्रकाशन के इतिहास का आरंभ माना जाता है। भारत में सबसे पहला समाचारपत्र शुरू करने का श्रेय जेम्स ऑगस्टस हिकी को जाता है, जिन्होंने 1780 में बंगाल गजट नामक अखबार निकाला। इसे हिकीज गजट के नाम से भी जाना जाता है।[15]

3) इलेक्ट्रॉनिक मीडिया - इस मीडिया के अंतर्गत ऑडियो, वीडियो तथा ऑडियो-वीडियो आदि प्रकार के माध्यम आते हैं। अत: जिस मीडिया के प्रयोग के लिए इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की सहायता ली जाती है, उसे इलेक्ट्रॉनिक मीडिया कहा जाता है। इसमें रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा व मल्टीमीडिया आदि को सम्मिलित किया जाता है। प्रिंट मीडिया के विपरीत यह मीडिया 24 × 7 काम करता है। इसके द्वारा तुरंत घटित हुई घटनाओं की जानकारी व उससे संबंधित दृश्य लोगों तक पहुँचाए जा सकते हैं। प्रिंट मीडिया की भाँति इसके दर्शकों का साक्षर होना अनिवार्य नहीं है बल्कि सुनकर व दृश्य देखकर भी दर्शकों को आवश्यक जानकारी समझ आ जाती है। इसकी भाषा भी साधारण होती है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की पहुँच भी काफी अधिक लोगों तक होती है। एक साथ कई लोग इसका लाभ ले सकते हैं। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया से जानकारी लेने के लिए लोगों का वहाँ उपस्थित रहना अनिवार्य होता था जहाँ इलेक्ट्रॉनिक उपकरण हैं, किंतु इंटरनेट व मोबाइलों के अविष्कार ने लोगों की इस समस्या को भी दूर कर दिया है। अब मोबाइल और इंटरनेट की सहायता से लोग जहाँ चाहें वहाँ से टेलीविजन व रेडियो आदि के कार्यक्रम देख और सुन सकते हैं। अब उन्हें टेलीविजन देखने के लिए उसके सामने बैठे रहने की आवश्यकता नहीं है व रेडियो सुनने के लिए उसे साथ लेकर नहीं घूमना होता। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में लिखित व मौखिक सामग्री के साथ ही दृश्य सामग्री भी होती है, जिससे दर्शकों को समझने में आसानी रहती है। वर्तमान में विभिन्न डिजाइनिंग

[15] Ibid.

सॉफ्टवेयर्स उपलब्ध होने के कारण सामग्री को रोचक बनाकर पेश किया जा सकता है, जिससे दर्शक उसकी ओर आकर्षित हो सकें।

सिनेमा की शुरुआत 1895 से मानी जाती है जब लुमियर बंधुओं ने पेरिस के ग्रैंड कैफे रेस्तरां में सिनेमेटोग्राफ शो का प्रदर्शन किया। भारत में सिनेमा की शुरुआत 1896 में हुई जब मुम्बई के वाटसन होटल में सिनेमेटोग्राफ शो का प्रदर्शन किया गया।[16] रेडियो जो कि एक श्रव्य माध्यम है, इसकी शुरुआत 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में हुई। 1915 में विश्वविद्यालयों द्वारा खबरों के प्रसारण के लिए रेडियो का इस्तेमाल किया गया। भारत में सर्वप्रथम रेडियो का प्रसारण 20 अगस्त 1921 को किया गया। वर्तमान में इसकी पहुँच देश के अधिकांश हिस्से तक है। टेलीविजन प्रसारण को लेकर 1920 के दशक में प्रयोग शुरू हो गए थे। भारत में टेलीविजन 1959 में आया।[17] टेलीविजन एक दृश्य-श्रव्य माध्यम है। इसकी पहुँच भी काफी अधिक है किंतु रेडियो से कम है। टेलीविजन में आवाज के साथ दृश्य भी दिखाए जाते हैं, इस कारण यह लोगों के मध्य सबसे लोकप्रिय है।

न्यू मीडिया - प्रत्येक दिन प्रौद्योगिकी का विकास हो रहा है। इसके साथ ही लोगों के जीवन जीने व संचार आदि करने के तरीके भी बदल रहे हैं। पहले लोग दूर रह रहे लोगों से चिट्ठी लिखकर संचार करते थे, जिसमें काफी अधिक समय खर्च होता था। टेलीफोन के अविष्कार ने चिट्ठी लिखने की आवश्यकता को समाप्त कर दिया। टेलीफोन की सहायता से लोग दूर बैठे लोगों से बोलकर संवाद करने लगे। इसके बाद मोबाइल, इंटरनेट और वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग की तकनीक ने संचार करने के तरीके को पूरी तरह से बदलकर रख दिया। आज लोग एक स्थान से दूसरे स्थान पर बैठे लोगों से न सिर्फ संवाद कर सकते हैं बल्कि उन्हें देख भी सकते हैं। इंटरनेट, कंप्यूटर और मोबाइल आदि ने एक नए प्रकार के मीडिया को जन्म दिया है। इस मीडिया में प्रिंट व इलेक्ट्रॉनिक दोनों प्रकार के मीडिया की विशेषताएँ सम्मिलित हैं। कोई इसे न्यू मीडिया के नाम से जानता है तो कुछ लोग इसे डिजिटल मीडिया का नाम देते हैं। चूँकि यह मीडिया इंटरनेट, मोबाइल व कंप्यूटर आदि की सहायता से ही कार्य करता है, इसलिए यह इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के अंतर्गत ही आता है।

डिजिटल मीडिया में सभी प्रकार के मीडिया का अभिसरण होता है, इस कारण इसे मल्टीमीडिया भी कहा जा सकता है। 20वीं शताब्दी के अंतिम

---

[16] Ganti, T. (2004). *Bollywood: A Guidebook to Popular Hindi Cinema* (1st ed.). Routledge.

[17] Kumar, K.J. (2018). *Mass Communication in India* (4th Rev. ed.). Jaico.

दौर में डिजिटल मीडिया की शुरुआत हुई तथा 21वीं शताब्दी का आरंभ होते-होते यह मीडिया प्रचलन में आ चुका था। यही कारण है कि 21वीं सदी को न्यू मीडिया या डिजिटल मीडिया का युग कहा जाता है। वर्तमान समय में लगभग हर समाचार चैनल, अखबार, रेडियो व बड़ी-बड़ी कॉर्पोरेट कंपनियों ने अपनी वेबसाइट्स बनाई हुई हैं, जिनके द्वारा लोगों तक सूचना पहुँचाने का कार्य किया जाता है। यहाँ तक कि देश-प्रदेश की सरकारें भी अपनी वेबसाइट्स की सहायता से ही जनता के साथ संवाद करती हैं व उन तक अपनी योजनाओं और कार्यों की जानकारी पहुँचाती हैं। अब सिनेमा देखने के लिए सिनेमाहॉल जाने की आवश्यकता नहीं होती और न ही टेलीविजन के आगे बैठे रहने की। सिनेमा और टेलीविजन भी एक छोटे से मोबाइल में प्रवेश कर चुके हैं, जिसके जरिए लोग फिल्मों व टेलीविजन के कार्यक्रमों को आसानी से देख सकते हैं। इंसान को गलतियों को पुतला कहा जाता है। अत: लगभग हर व्यक्ति द्वारा गलतियाँ की ही जाती हैं। इसलिए सभी प्रकार के मीडिया में भी हर रोज़ कई गलतियाँ जाती हैं। प्रिंट मीडिया में यदि कोई अशुद्धि हो जाती है, तो उसे नए संस्करण में ही सुधारा जा सकता है। अशुद्धि वाला संस्करण जिन लोगों के पास पहुँच जाता है, उनके साथ वह अशुद्धि हमेशा रहती है। इसी तरह इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के पारम्परिक साधनों रेडियो, टेलीविजन व सिनेमा में हुई गलती भी आसानी से ठीक नहीं हो पाती है। किंतु डिजिटल मीडिया अशुद्धि को तुरंत व आसानी से ठीक कर सकने की सुविधा प्रदान करता है। किसी समाचार चैनल या अखबार की वेबसाइट के किसी लेख में अशुद्धि हो जाए तो उसे तुरंत संपादित करके सही किया जा सकता है।

डिजिटल मीडिया का क्षेत्र - न्यू मीडिया या डिजिटल मीडिया लगभग सभी पारम्परिक मीडिया का मिला-जुला रूप है। इसमें टीवी, रेडियो व प्रिंट आदि सबकी विशेषताएँ पायी जाती हैं। अत: डिजिटल मीडिया का क्षेत्र बहुत अधिक विस्तृत है। इसमें डिजिटल रेडियो भी आता है व ई-बुक्स आदि भी। वर्तमान समय में देश-प्रदेश की सरकारों के सभी विभागों, सरकारी व निजी विद्यालयों, बड़ी-छोटी कंपनियों, समाचार चैनलों आदि सबकी अपनी वेबसाइट्स हैं। रेडियो व टीवी के कार्यक्रम भी ऑनलाइन उपलब्ध हो जाते हैं।किताबें भी ई-बुक्स के रूप में मौजूद हैं। साथ ही खरीदारी, पैसों के लेनदेन आदि के लिए भी विभिन्न वेबसाइट्स व डिजिटल मीडिया का सहारा लिया जाता है। पठन-पाठन के लिए भी कई डिजिटल प्लेटफॉर्म्स उपलब्ध हैं। वर्तमान समय में सामाजिक मंच पर अपनी बात रखने के लिए व समाज के

लोगों से जुड़ने के लिए भी लोग सोशल मीडिया का सहारा लेते हैं, जो कि डिजिटल मीडिया का ही एक प्रकार है। इसके अलावा ऑनलाइन डिक्शनरी, सोशल नेटवर्किंग से जुड़ी विभिन्न सेवाएँ, ब्लॉग्स, सभी वेबसाइट्स व एप्लीकेशन्स आदि सब डिजिटल मीडिया के अंतर्गत ही आते हैं।

सोशल मीडिया - यह डिजिटल मीडिया का ही एक हिस्सा है। यह लोगों को अपनी बात रखने के लिए एक सामाजिक मंच प्रदान करता है। सोशल मीडिया की सहायता से लोग समाज के विभिन्न मुद्दों पर अपने विचार रख सकते हैं व दूसरों के विचारों पर अपनी राय दे सकते हैं। सोशल मीडिया लोगों को एक दूसरे से जोड़ने का कार्य भी करता है। फेसबुक, ट्वीटर, व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम, यूट्यूब व टेलीग्राम आदि सोशल मीडिया के लोकप्रिय उदाहरण हैं।

Merriam-webster.com के अनुसार, "सोशल मीडिया इलेक्ट्रॉनिक संचार का एक रूप है, जिसके माध्यम से उपयोगकर्ता ऑनलाइन समुदाय बनाते हैं व अपने विचार, जानकारी, व्यक्तिगत संदेश तथा अन्य सामग्री साझा करते हैं।"[18]

Dictionary.cambridge.org के अनुसार, "ऐसी वेबसाइट्स और कंप्यूटर प्रोग्राम्स जो लोगों को कंप्यूटर या मोबाइल की सहायता से इंटरनेट पर संचार करने व जानकारी साझा करने की अनुमति प्रदान करते हैं, सोशल मीडिया के अंतर्गत आते हैं।"[19]

सोशल मीडिया का महत्व - वर्तमान समय में मोबाइल, कंप्यूटर व इंटरनेट मानव जीवन का बहुत आवश्यक हिस्सा बन चुके हैं। इनके बिना लोग अधूरा महसूस करने लगे हैं। अब आमतौर पर लोगों के पास मोबाइल और इंटरनेट उपलब्ध होता है, साथ ही इसमें सोशल मीडिया एप्लीकेशन भी होते ही हैं। आज बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक की सोशल मीडिया पर मौजूदगी है। सोशल मीडिया की सहायता से लोगों को सामाजिक मुद्दों की जानकारी मिलती है, जिससे वे इन मुद्दों पर अपनी राय रख पाते हैं।

theglobalstatistics.com वेबसाइट के लेख के मुताबिक भारतीय प्रतिदिन औसतन 7 घंटे 19 मिनट इंटरनेट का प्रयोग करते हैं तथा औसतन 2 घंटे 36 मिनट सोशल मीडिया पर बिताते हैं। वर्तमान में भारत में लगभग 467 मिलियन सोशल मीडिया उपयोगकर्ता व लगभग 658 मिलियन इंटरनेट

---

[18]Merriam-Webster. (n.d.). Social media. *In Merriam-Webster.com dictionary*. Retrieved January 20, 2022, from https://www.merriam-webster.com/dictionary/social%20media

[19] Dictionary.cambridge. (n.d.). Social media. *In dictionary.cambridge.org dictionary*. Retrieved January 20, 2022, from https://dictionary.cambridge.org/dictionary/english/social-media

उपयोगकर्ता हैं।[20] Jagranjosh.com के एक लेख के अनुसार, जनवरी 2021 तक भारत में 448 मिलियन सोशल मीडिया उपयोगकर्ता थे। इसी लेख में बार और बेंच की रिपोर्ट का हवाला देते हुए भारत में 53 करोड़ व्हाट्सएप उपयोगकर्ता, 44.8 करोड़ यूट्यूब उपयोगकर्ता, 41 करोड़ फेसबुक उपयोगकर्ता, 21 करोड़ इंस्टाग्राम उपयोगकर्ता और 1.75 करोड़ ट्विटर के उपयोगकर्ता होने की जानकारी दी गई।[21]

देश की बहुत बड़ी आबादी सोशल मीडिया का उपयोग कर रही है। सोशल मीडिया की सहायता से लोग अपने दोस्तों व रिश्तेदारों आदि से जुड़ सकते हैं व उनके साथ संचार कर सकते हैं। सोशल मीडिया लोगों को अपडेट रहने में भी सहायता करता है। देश-दुनिया से संबंधित तमाम सूचनाएँ व खबरें लोगों तक सोशल मीडिया के जरिए पहुँचती हैं। तमाम कॉर्पोरेट संगठनों द्वारा अपने उत्पादों और सेवाओं के विज्ञापन भी सोशल मीडिया पर किए जाते हैं, जिससे वे अधिक लोगों तक पहुँच सकें। देश की बड़ी-छोटी राजनैतिक पार्टियाँ भी सोशल मीडिया के जरिए लोगों तक पहुँच बनाने की कोशिश करती हैं। आज के समय में सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर अधिक फॉलोअर्स व मित्र होना एक उपलब्धि की तरह हो गया है। अपने नाम के अनुरूप सोशल मीडिया समाज के हित के लिए भी कार्य करता है। देश-दुनिया के कई आंदोलन सोशल मीडिया की सहायता से शुरू हुए व सफल भी हुए। मी टू, ब्लैक लाइव्स मैटर तथा 2012 के दामिनी रेप केस को लेकर हुए आंदोलनों से लोगों को सोशल मीडिया ने जोड़ा। 2021 में हुए किसान आंदोलन में भी सोशल मीडिया ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सोशल मीडिया पर सूचनाएँ बहुत तेजी से फैलती हैं, जिस कारण यहाँ फेक समाचारों की भी भरमार है। यह फेक समाचार लोगों में गलतफहमी पैदा करते हैं व इनके कारण कई बार लोग गलत कदम भी उठा लेते हैं। सोशल मीडिया पर हर व्यक्ति अपने विचार रखने के लिए स्वतंत्र है, इस कारण कई बार लोगों के विचारों के मध्य टकराव की स्थिति भी बन जाती है। अत: सोशल मीडिया लोगों के लिए बहुत उपयोगी है, यदि इसका सावधानीपूर्वक व सीमित उपयोग किया जाए।

सोशल मीडिया और शिक्षा का संबंध - शिक्षा मानव जीवन की मूलभूत आवश्यकता है। इसी तरह सोशल मीडिया लोगों के जीवन का महत्वपूर्ण

---

[20] *India Social Media Statistics 2022 | Mobile & Internet Statistics.* (2022, February 26). Theglobalstatistics. https://www.theglobalstatistics.com/india-social-media-statistics/

[21] Sharma, R. (2021, June 30). *World social media Day 2021: History and significance*. Jagranjosh. https://www.jagranjosh.com/current-affairs/world-social-media-day-2021-history-and-significance-1625038111-1

भाग बनता जा रहा है। आज बच्चों से लेकर बुजुर्ग तक सोशल मीडिया का प्रयोग कर रहे हैं या करना चाहते हैं। व्हाट्सएप, फेसबुक, यूट्यूब, टेलीग्राम व इंस्टाग्राम आदि सबसे अधिक लोकप्रिय सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स हैं। इनके अलावा ऑनलाइन मीटिंग्स व कॉन्फ्रेंस आदि के लिए गूगल मीट, जूम व माइक्रोसॉफ्ट टीम्स आदि का इस्तेमाल किया जाता है। kentquakers.org.uk वेबसाइट के एक लेख के अनुसार गूगल मीट और जूम वीडियो आधारित सोशल मीडिया की श्रेणी में आते हैं।[22] kubbco.com वेबसाइट के एक लेख में भी जूम को सोशल मीडिया बताया गया है।[23] सोशल मीडिया ने लगभग सभी क्षेत्रों को प्रभावित किया है व शिक्षा का क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं रहा है। यूट्यूब पर लगभग सभी विषयों से संबंधित पाठ्य सामग्री उपलब्ध रहती है। इसी तरह टेलीग्राम पर भी समूह बनाकर विभिन्न विषयों की सामग्री साझा की जा रही है। व्हाट्सएप पर शिक्षक व छात्र समूह बनाकर पाठ्य सामग्री साझा कर सकते हैं व संचार कर सकते हैं। इन प्लेटफॉर्म्स को इस्तेमाल करना भी काफी आसान है। गूगल व यूट्यूब आदि पर इनके प्रयोग किए जाने से संबंधित सभी जानकारी सरलता से उपलब्ध हो जाती है।

सोशल मीडिया का प्रयोग मोबाइल और इंटरनेट की सहायता से किया जाता है। वहीं लगभग हर माँ-बाप का मानना होता है कि मोबाइल उनके बच्चे को बिगाड़ता है या बिगाड़ देगा। किंतु 2020 में कोविड-19 महामारी के कारण लगे देशव्यापी लॉकडाउन ने मोबाइल और छात्रों को एक साथ लाकर खड़ा कर दिया। लॉकडाउन के कारण जब स्कूल बंद थे, उन दिनों में ऑनलाइन शिक्षण ही एकमात्र विकल्प था। अत: न चाहते हुए भी माता-पिता को अपने बच्चों को मोबाइल व इंटरनेट कनेक्शन देना पड़ा। स्कूलों के भवनों में होने वाली कक्षाएँ अब मोबाइल पर होने लगीं। इस दौरान कक्षाओं से संबंधित जानकारी, नोट्स, गृहकार्य व अन्य आवश्यक जानकारी साझा करने के लिए व्हाट्सएप व टेलीग्राम आदि पर समूह बनाए गए। इसके अलावा ऑनलाइन कक्षाओं के लिए गूगल मीट, जूम, माइक्रोसॉफ्ट टीम्स व गूगल क्लासरूम आदि वीडियो आधारित सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स का सहारा लिया गया। अत: ऐसा कहा जा सकता है कि कोरोना काल में सोशल मीडिया ही पठन-पाठन का एक मात्र जरिया था। सोशल मीडिया के अभाव में पढ़ाई पूर्ण रूप से ठप पड़ सकती थी।

---

[22] *Video-based social media*. (n.d.). Kentquakers. https://kentquakers.org.uk/video-based-social-media/

[23] Gismondi, A. (2021, January 5). *Top 27 Social Media Apps for Your 2021 Strategy.* kubbco. https://www.kubbco.com/top-27-social-media-apps-for-your-2021-strategy/

शोध समस्या

पिछले डेढ़ साल में ऑनलाइन शिक्षण प्रणाली का चलन बढ़ा है। कोरोना महामारी के कारण यही एक रास्ता था जिससे पठन-पाठन की प्रक्रिया चलती रहे। पारंपरिक स्कूली कक्षाओं से निकलकर डिजिटल कक्षाओं तक आने की तैयारी के लिए शिक्षकों को ज़्यादा समय भी नहीं मिला। इस कारण ऐसे शिक्षक जो तकनीक से ज़्यादा परिचित नहीं हैं, उन्हें डिजिटल कक्षाओं में कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। इसके अलावा कमज़ोर नेटवर्क जैसी परेशानियों का सामना भी शिक्षकों को करना पड़ रहा है। इस शोध के द्वारा शोधार्थी डिजिटल शिक्षण के दौरान शिक्षकों के सामने आने वाली समस्याओं का अध्ययन करना चाहता है।

अध्याय 2 :
साहित्य-समीक्षा

साहित्य की समीक्षा शोध कार्य में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह अनुसंधान कार्य के लिए उचित योजना बनाने व उसके क्रियान्वयन में शोधकर्ता का निर्देशन करती है। यह शोधकर्ता को उसके क्षेत्र में हो चुके शोध कार्य से परिचित कराती है। यह शोधकर्ता को समस्या को परिभाषित करने व उद्देश्य निर्धारित करने में सक्षम बनाती है। यह अध्ययन माध्यमिक व उच्चतर माध्यमिक स्कूलों के शिक्षकों पर सोशल मीडिया के प्रभाव से संबंधित है। इस विषय से संबंधित कुछ प्रमुख अध्ययनों की समीक्षा निम्न है -

पारम्परिक शिक्षण पद्धति में शिक्षकों की भूमिका सामग्री निर्माता की रही है, जो विषय से संबंधित पाठ्य सामग्री का निर्माण करते थे व अपने छात्रों को जानकारी दिया करते थे। 21वीं शताब्दी में अध्यापकों की भूमिका में बदलाव आया है। वर्तमान दौर में शिक्षक न सिर्फ अपने विद्यार्थियों को सिखाते हैं बल्कि उनके साथ में स्वयं भी नई-नई चीजें सीखते हैं। प्रौद्योगिकी की सहायता से अध्यापक अपनी पाठ्य सामग्री को और अधिक समृद्ध बना सकते हैं, सर्च इंजन्स की सहायता से विद्यार्थियों के लिए नए-नए उदाहरण खोज सकते हैं। शिक्षक सामग्री निर्माता तो थे ही, किंतु अब वे सामग्री उपभोक्ता भी हैं।[24] रचनात्मकता व उत्पदाकता के लिए नई चीजें सीखना आवश्यक है। प्रौद्योगिकी शिक्षकों को यह अवसर उपलब्ध करवाती है। ऑनलाइन पाठ्यक्रमों, यूट्यूब चैनलों व टेलीग्राम समूहों आदि की सहायता से शिक्षक तेजी से अपने ज्ञान में वृद्धि कर सकते हैं। अब अध्यापक विशेषज्ञों के समूहों से जुड़कर अपना ज्ञान साझा कर सकते हैं तथा विभिन्न प्लेटफॉर्म्स की सहायता से विद्यार्थियों के सवालों के जवाब दे सकते हैं। इससे विद्यार्थियों को अपनी समस्या का समाधान भी त्वरित गति से प्राप्त हो जाता है और अध्यापक या छात्र किसी को भी सवाल करने व उसके जवाब देने के लिए स्कूल खुलने का इंतजार करने की आवश्यकता नहीं होती है।

प्रोफेसर रजनी पाठक और डॉ. प्रतिमा शिवरे (2020) अपने शोध आलेख में लिखती हैं कि विद्यार्थियों को लगता है कि डिजिटलीकरण के कारण उनकी पढ़ाई में अधिक स्पष्टता आ रही है तथा इसकी सहायता से उनकी शिक्षा उत्कृष्ट हो रही है। प्रौद्योगिकी के उपयोग से शिक्षण कार्य बेहतर हो रहा है। शिक्षक भी प्रौद्योगिकी का लाभ लेने के पक्ष में हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि यह ज्ञान को व्यापक स्तर पर साझा करने का बहुत अच्छा तरीका है। उन्हें लगता है कि शिक्षण में प्रौद्योगिकी के उपयोग से विद्यार्थियों की पढ़ाई में

[24] *The Role of the Teacher in the Digital Age*. (2018, February 7). Euruni. https://www.euruni.edu/blog/future-prof-online-learning/

अधिक स्पष्टता आएगी। डिजिटलीकरण के कारण पठन-पाठन के तरीके बदल रहे हैं तथा छात्रों में रचनात्मकता बढ़ रही है।[25] शिक्षक और विद्यार्थी दोनों ही अपने ज्ञान को बढ़ाने के लिए इंटरनेट और मोबाइल का इस्तेमाल कर रहे हैं। ये नई तकनीकें शिक्षकों व विद्यार्थियों को एक नया मंच दे रही हैं। प्रौद्योगिकी के इस्तेमाल से अध्यापक अपनी पाठ्य सामग्री को बेहतर बना सकते हैं तथा उसे रचनात्मक तरीके से पेश कर सकते हैं। प्रौद्योगिकी के कारण अध्यापकों के लिए शिक्षण कार्य भी सरल हो रहा है।

प्रौद्योगिकी की सहायता से शिक्षण के क्षेत्र में परिवर्तन लाया जा सकता है व सीखने और सिखाने के एक नए दृष्टिकोण को समझा जा सकता है। अमेरिका के पूर्व शिक्षा सचिव जॉन किंग के अनुसार, "शिक्षा में प्रौद्योगिकी के सबसे महत्वपूर्ण पहलुओं में से एक यह है कि इसमें विद्यार्थियों को समान अवसर उपलब्ध कराने की क्षमता है।"[26] किसी सामान्य पुस्तकालय में विद्यार्थियों के बैठने के लिए कुछ निश्चित स्थान ही हो सकता है, वहीं डिजिटल पुस्तकालय में स्थान की कोई समस्या नहीं होती है। इसी तरह एक स्थान पर बैठा छात्र अन्य देशों-प्रदेशों के डिजिटल पुस्तकालयों में उपलब्ध पुस्तकें पढ़ने का लाभ ले सकता है, यह सब संभव होता है प्रौद्योगिकी के कारण। अत: प्रौद्योगिकी शिक्षकों और छात्रों के लिए बेशुमार अवसर उपलब्ध करवाती है।

आर. राजा और पी. सी. नागसुब्रमणि (2018) अपने शोध आलेख में लिखते हैं कि शिक्षा के क्षेत्र में कंप्यूटर के आ जाने से अध्यापकों के लिए अध्यापन व विद्यार्थियों के लिए शिक्षा ग्रहण करना दोनों सरल हो गए हैं। प्रौद्योगिकी के प्रयोग ने पठन-पाठन को काफी सुखद बनाया है। डिजिटल कैमरों, पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन और कंप्यूटर आदि की सहायता लेकर शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों को आसानी से व आकर्षक ढंग से पढ़ाया जा सकता है। वे लिखते हैं कि वर्तमान समय में ऑनलाइन शिक्षण शिक्षा प्रणाली का महत्वपूर्ण भाग बन चुका है। वहीं शिक्षा में प्रौद्योगिकी के नकारात्मक पक्ष को लेकर वे कहते हैं कि इससे लेखन क्षमता में कमी आ रही है व बहुत से छात्र ऐसे भी हैं जो नई कंप्यूटर प्रौद्योगिकी खरीदने में सक्षम नहीं हैं।[27] शिक्षण में प्रौद्योगिकी का उपयोग इसे रोचक तो बना ही रहा है व विद्यार्थियों को खासा पसन्द भी आ

---

[25] Pathak, R., & Sheorey, P. (2020). Impact of Digital Technology on Teaching-Learning. *Journal of critical reviews, 7*(11). http://www.jcreview.com/fulltext/197-1595749755.pdf

[26] U.S. department of education. (2017). *Reimagining the Role of Technology in Education: 2017 National Education Technology Plan Update*. Tech.ed.gov. https://tech.ed.gov/files/2017/01/NETP17.pdf

[27] Raja, R., & Nagasubramani, P. C. (2018). Impact of modern technology in education. *Journal of Applied and Advanced Research, 3*(Suppl.1), S33-S35. https://updatepublishing.com/journal/index.php/jaar/article/view/6790/pdf

रहा है। डिजिटल उपकरणों के इस्तेमाल से ज्ञान का स्थानांतरण भी बड़ी सरलता से हो जाता है। डिजिटलीकरण के अपने फायदे हैं तो कई नुकसान भी हैं। किसी डिजिटल उपकरण का इस्तेमाल अधिक किया जाए तो वह स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है।

हुसैन उज़ुनबॉयलु (Hüseyin Uzunboylu) और रहमे उइगरेर (Rahme Uygarer) (2017) ने अपने शोध में पाया कि उनके शोध में भाग लेने वाले उत्तरदाता न सिर्फ इलेक्ट्रॉनिक पुस्तकों के उपयोग के बारे में जानकारी रखते हैं बल्कि इनके उपयोग से संतुष्ट भी हैं। वे लिखते हैं कि इलेक्ट्रॉनिक पुस्तकों व स्त्रोतों का प्रयोग करने से विद्यार्थी एक समय में कई स्त्रोतों तक पहुँच बना पाते हैं। अत: प्रौद्योगिकी उन्हें असीमित शिक्षण मंच प्रदान कर रही है। मल्टीमीडिया का प्रयोग विद्यार्थियों को उनके अध्ययन से जुड़ने के लिए प्रेरित भी करता है। हुसैन और रहमे का कहना है कि अध्यापकों को तकनीकी की जानकारी होनी चाहिए व कक्षाओं में इसका इस्तेमाल भी करना चाहिए। वे वर्तमान पीढ़ी को डिजिटल पाठक कह रहे हैं।[28] इलेक्ट्रॉनिक पुस्तकों व स्त्रोतों का सबसे बड़ा लाभ यह है कि एक समय पर इन्हें कई लोग प्रयोग कर सकते हैं। साथ ही इनमें दिए गए संदर्भ भी तमाम सर्च इंजन्स और इंटरनेट की सहायता से पाठकों से सिर्फ एक क्लिक की दूरी पर होते हैं। चूँकि वर्तमान दौर डिजिटल मीडिया का है, इस कारण नई पीढ़ी का इससे बहुत अधिक लगाव है। इसलिए अध्यापकों के लिए आवश्यक है कि अपने विद्यार्थियों के साथ तालमेल बिठाने के लिए वह भी डिजिटल मीडिया व प्रौद्योगिकी से जुड़ें।

सहयोगात्मक प्रयोग के दौरान व शिक्षकों द्वारा अपनी बात के समर्थन के लिए जब कंप्यूटर और डिजिटल प्रौद्योगिकी का प्रयोग किया जाता है तो काफी प्रभावी होता है। शिक्षकों और शिक्षार्थियों को अपने अध्ययन को प्रभावी बनाने के लिए डिजिटल तकनीकों का इस्तेमाल करना चाहिए। शिक्षण में डिजिटल तकनीकों के प्रयोग को सामान्य शिक्षण का विकल्प न मानकर इसके पूरक के रूप में देखा जाना चाहिए। भारत में ऑनलाइन शिक्षा तभी सफल हो पाएगी जब शिक्षा क्षेत्र और इसके लोगों की मानसिकता में परिवर्तन आएगा [Prof. Nivedita Jha & Prof. Veena Shenoy

[28] Uzunboylu, H., & Uygarer, R. (2017). An Investigation of the Digital Teaching Book Compared to Traditional Books in Distance Education of Teacher Education Programs. *EURASIA Journal of Mathematics Science and Technology Education, 13*(8), 5365-5377. https://doi.org/10.12973/eurasia.2017.00830a

(2016)]।[29] डिजिटल तकनीकों के सहारा लेकर पाठ्य सामग्री को रोचक बनाकर पेश किया जा सकता है तथा अपनी बात को संबंधित आँकड़े व तस्वीरें लगाकर समझाया जा सकता है और नए-नए उदाहरण ढूँढ़े जा सकते हैं। स्कूलों में ब्लैक और व्हाइट बोर्ड की जगह पर डिजिटल बोर्ड का इस्तेमाल किया जा सकता है, इससे अध्यापकों को तो आसानी होगी ही और विद्यार्थी भी आकर्षित होकर अधिक ध्यान लगाने की कोशिश करेंगे। अत: ऐसा नहीं है कि डिजिटल तकनीकों के विकास से स्कूली शिक्षण समाप्त हो जाएगा बल्कि ये नई तकनीकें स्कूली शिक्षण को अधिक आकर्षक और प्रभावी बनाने में सहायता करेंगी।

मिंग-हंग लिन (Ming-Hung Lin), हुआंग-चेंग चेन (Huang-Cheng Chen) और कुआंग शेंग ल्यू (Kuang-Sheng Liu) (2017) ने अपने शोध में पाया कि पारम्परिक शिक्षण की अपेक्षा डिजिटल शिक्षण अधिक सकारात्मक और प्रभावी है व ज्यादा अच्छे परिणाम देने वाला है। वे लिखते हैं कि वर्तमान समय में मोबाइल तो लोगों के बीच खासा लोकप्रिय है ही, वहीं इंटरनेट ने भी समय और स्थान जैसी बाधाओं को काफी हद तक समाप्त कर दिया है। डिजिटल शिक्षण के लिए भी इनका उपयोग हो रहा है। किंतु डिजिटल शिक्षण को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए आवश्यक है कि इसके लिए शिक्षण गतिविधियों को लेकर योजना तैयार की जाए और डिजिटल उपकरणों को प्रयोग में लाना शुरू किया जाए। वे कहते हैं कि डिजिटल शिक्षण को वर्तमान शिक्षण प्रणाली के साथ मिलाकर प्रयोग किया जाना चाहिए। इससे अध्यापकों व विद्यार्थियों दोनों को लाभ होगा। इन्होंने अपने शोध में पाया कि डिजिटल शिक्षण शिक्षार्थियों के सीखने की क्षमता का बढ़ाता है।[30] नई पीढ़ी तकनीक प्रेमी है। इस कारण उन्हें मोबाइल और इंटरनेट की सहायता से सीखने में अधिक आनंद आता है। मोबाइल और इंटरनेट के माध्यम से सीखना आसान भी है। अत: डिजिटल शिक्षण को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक है कि शिक्षकों को भी नई तकनीकों से परिचित करवाया जाए तथा पर्याप्त उपकरण उपलब्ध करवाए जाएँ।

ओलुवासेई ई. अलासोलुय (Oluwaseyi E. Alasoluy) (2021) ने नाइजीरिया के लागोस में किए गए अपने अध्ययन में पाया कि अधिकांश

---

[29] Jha, N., & Shenoy, V. (2016). Digitization of Indian Education Process: A Hope or Hype. *IOSR Journal of Business and Management, 18*(10), 131-139. https://www.iosrjournals.org/iosr-jbm/papers/Vol18-issue10/Version-3/N181003131139.pdf

[30] Lin, M. H., Chen, H. C., & Liu, K. S. (2017). A Study of the Effects of Digital Learning on Learning Motivation and Learning Outcome. *EURASIA Journal of Mathematics Science and Technology Education, 13*(7), 3553-3564. https://www.ejmste.com/download/a-study-of-the-effects-of-digital-learning-on-learning-motivation-and-learning-outcome-4843.pdf

शिक्षक कक्षा आधारित शिक्षण से ऑनलाइन शिक्षण में स्थानांतरण को लेकर जागरूक हैं। किंतु शिक्षकों द्वारा कक्षाओं में डिजिटल उपकरणों का उपयोग कम ही किया जा रहा है। कोरोना महामारी के कारण जब स्कूल बंद हुए तो डिजिटल शिक्षण में उन लोगों को आसानी हुई जो पहले से सॉफ्टवेयर्स और एप्लीकेशन्स का इस्तेमाल करना जानते थे। शोध में पाया गया कि कुछ अध्यापकों को डिजिटल उपकरणों का इस्तेमाल करने में समस्या हुई क्योंकि उन्हें इन उपकरणों की तकनीकी जानकारी नहीं थी व सीखने के लिए पर्याप्त समय भी नहीं था।[31] कोरोना महामारी के कारण जब स्कूल बंद हुए तो अचानक ही स्कूली शिक्षण डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर स्थानांतरिक कर दिया गया, जिससे शिक्षकों को प्लेटफॉर्म्स व उपकरणों को समझने के लिए पर्याप्त समय नहीं मिला। इस कारण ऑनलाइन कक्षाएँ लेने में समस्याएँ हुईं। वहीं कुछ अध्यापक पहले से डिजिटल उपकरणों का इस्तेमाल करते थे, इस कारण उन्हें अपेक्षाकृत कम परेशानी उठानी पड़ी।

कुछ वरिष्ठ शिक्षकों को ऑनलाइन कक्षाओं व डिजिटल उपकरणों का इस्तेमाल सीखने के लिए सहायता और प्रशिक्षण की आवश्यकता थी। इससे पठन-पाठन का कार्य भी काफी प्रभावित हुआ क्योंकि डिजिटल उपकरण का इस्तेमाल करने में आने वाली समस्याओं के कारण अध्यापन कार्य ठीक से नहीं हो पाया। डिजिटल शिक्षण के लिए आवश्यक है कि शिक्षकों को प्रौद्योगिकी का प्रयोग करना तेजी से सीखना होगा [Nur Fitri Handayani & Abdul Gafur (2020)]।[32] अध्यापकों को डिजिटल शिक्षण की तैयारी करने के लिए पर्याप्त समय नहीं मिला। इस कारण उन्हें डिजिटल उपकरणों व प्लेटफॉर्म्स को इस्तेमाल करने में परेशानी हुई। ऐसे में डिजिटल शिक्षण के दौरान शिक्षकों के सामने दो चुनौतियाँ थीं, एक बच्चों को पढ़ाना तथा दूसरी डिजिटल उपकरणों का प्रयोग। संस्थानों द्वारा अध्यापकों को प्रशिक्षण देकर यह समस्या दूर की जा सकती थी।

कोरोना महामारी के दौरान शिक्षकों व शिक्षार्थियों दोनों को अध्ययन और अध्यापन में तमाम चुनौतियों का सामना करना पड़ा। अचानक आई इस महामारी ने स्कूली शिक्षण पर व तमाम तैयारियों पर पुनर्विचार करने के लिए मजबूर कर दिया। महामारी के चलते आई इस चुनौती को समस्या और

---

[31] Alasoluy, O. E. (2021). Teachers' Awareness and Competence in the Switch from Classroom-Based to Online Teaching During COVID-19 Pandemicin Lagos, Nigeria. *Interdisciplinary Journal of Education Research, 3*(2), 23-31. https://injer.org/injer/article/view/21378/13949

[32] Handayani, N. F., & Gafur, A. (2020). Professionalism of Civics Teachers Facing Educational Challenges in the Era of the Covid-19 Pandemic. *International Journal of Multicultural and Multireligious Understanding, 7*(10), 527-534. https://ijmmu.com/index.php/ijmmu/article/view/2183/1764

अवसर दोनों के रूप में देखा जा सकता है [Linda Darling-Hammond & Maria E. Hyler (2020)]।[33] कोविड-19 के चलते स्कूल बंद होने से शिक्षकों के सामने डिजिटल शिक्षण बड़ी चुनौती था तो वहीं विद्यार्थियों के लिए घर में बंद हो जाना। साथ ही शिक्षकों व विद्यार्थी दोनों के पास ही पर्याप्त संसाधन उपलब्ध नहीं थे। इस महामारी ने स्कूली शिक्षण के विकल्प सोचने पर मजबूर कर दिया। डिजिटल शिक्षण में समस्या तो हुई किंतु आने वाले समय में डिजिटल उपकरणों को उपयोग लाभ पहुँचाएगा। जिन उपकरणों का उपयोग अभी मजबूरी में सीखा है, हालात सामान्य हो जाने पर उन्हें स्कूली शिक्षण के दौरान भी इस्तेमाल करके शिक्षण को अधिक आकर्षक और प्रभावशाली बनाया जा सकेगा। इसलिए महामारी के कारण आई इन चुनौतियों में कोई समस्या ढूँढ़ रहा है तो कुछ लोगों को इसमें अवसर भी दिख रहे हैं।

कोविड काल में दूरस्थ शिक्षण को दौरान विद्यार्थियों को कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ा। कुछ छात्रों को समय के प्रबंधन में समस्या हुई तो कुछ को पढ़ाई में ध्यान लगाने में, वहीं कुछ छात्र ऐसे भी थे जिन्हें तकनीकी समस्याओं का सामना करना पड़ा। छात्रों द्वारा जूम एप्लीकेशन पर होने वाली चर्चा को अच्छा बताया गया, वहीं अपने व्याख्याताओं के बारे में कहा गया कि उनमें डिजिटल साक्षरता की कमी थी। अधिकांश विद्यार्थी स्कूली शिक्षण के पक्ष में दिखे [Suzanne Lischer et al. (2021)]।[34] डिजिटल शिक्षण के दौरान जूम और गूगल मीट आदि की सहायता से ऑनलाइन कक्षाएँ चलीं। चूँकि अध्यापकों के लिए ये प्लेटफॉर्म्स नए थे, इसलिए उन्हें इनका इस्तेमाल करने में समस्याएँ हुईं। विद्यार्थियों को भी कई प्रकार की परेशानियाँ हुईं। उन्हें अपने साथियों व अध्यापकों के साथ संचार करने में भी समस्या हुई।

जर्मनी में शिक्षण क्षेत्र में अपने पेशे की शुरुआत कर रहे 165 शिक्षकों पर किए गए एक अध्ययन के अनुसार 90% अध्यापकों ने कहा कि वे छात्रों व उनके माता-पिता के साथ लगातार संपर्क में रहे। कुछ विद्यार्थी जिन्हें अतिरिक्त सहायता की आवश्यकता थी, उनकी मदद करने की बात भी शिक्षकों ने स्वीकारी। अध्ययन में शामिल होने वाले सिर्फ 20% अध्यापकों ने

---

[33] Hammond, L. D., & Hyler, M. E. (2020) Preparing educators for the time of COVID … and beyond. *European Journal of Teacher Education, 43*(4), 457-465, DOI: 10.1080/02619768.2020.1816961

[34] Lischer, S., Safi, N., & Dickson, C. (2021). Remote learning and students' mental health during the Covid-19 pandemic: A mixed-method enquiry. *Nature public health emergency collection*. https://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC7784617/

सप्ताह में कम से कम एक बार ऑनलाइन क्लास लेने की बात स्वीकारी, जबकि 70% ने यह माना कि उन्होंने ऑनलाइन शिक्षण के लिए डिजिटल उपकरणों का उपयोग नहीं किया। वहीं अधिकांश शिक्षकों ने छात्रों को कार्य देने, प्रतिक्रिया देने व पढ़ाई के लिए नई सामग्री देने की बात कही [Johannes König et al. (2020)]।[35] कोरोना काल में अध्यापकों ने विद्यार्थियों की सहायता की व उन्हें पाठ्य सामग्री भी उपलब्ध करवाई। किंतु शिक्षक डिजिटल उपकरणों का इस्तेमाल करने से बचते दिखाई दिए। लगातार ऑनलाइन कक्षाएँ लेने वाले व ऑनलाइन मूल्यांकन करने वाले शिक्षक कम ही थे। इसके पीछे कई कारण हो सकते हैं, जैसे - डिजिटल उपकरण की कमी या उपकरण के प्रयोग से संबंधित जानकारी न होना आदि।

चिली में छात्र शिक्षकों पर किए गए एक अध्ययन के अनुसार शिक्षार्थियों के साथ सीधे संपर्क की कमी और अचानक कक्षाओं से ऑनलाइन शिक्षण पर स्थानांतरित होने जैसे कारकों के कारण प्रतिभागियों की सीखने की प्रक्रिया प्रभावित हुई। चुनौतियों का सामना करने के बावजूद छात्र शिक्षकों ने माना कि यह अनुभव उनके आगे के जीवन में काम आएगा। अध्ययन में शामिल कुल 12 प्रतिभागियों ने जूम, गूगल क्लासरूम, माइक्रोसॉफ्ट टीम्स और गूगल मीट जैसे प्लेटफॉर्म्स का उपयोग किया। इनमें से आधे प्रतिभागियों ने समकालिक (synchronous) रूप से काम किया व आधों ने ईमेल और अन्य प्लेटफॉर्म्स की सहायता से विद्यार्थियों को कार्य भेजने व उनके संदेह दूर करने जैसे कार्य किए। अध्ययन में भाग लेने वाले 55% प्रतिभागियों ने माना कि यह उनके लिए सीखने का एक अवसर था [Paulina Sepulveda-Escobar & Astrid Morrison (2020)]।[36] कोविड-19 महामारी के कारण उत्पन्न हुई परिस्थितियों से शिक्षण क्षेत्र के लोगों को समस्याएँ तो हुईं किंतु पारंपरिक पेशेवर ज्ञान और कौशल का विस्तार करने का अवसर भी मिला। इन स्थितियों ने शिक्षकों को ऐसे सॉफ्टवेयर्स और उपकरणों से परिचित करवाया जिनकी सहायता लेकर शिक्षण सामग्री तैयार की जा सकती है और डिजिटली भी समकालिक (synchronous) रूप से पढ़ाया जा सकता है। डिजिटल कक्षाएँ लेने व पाठ्य सामग्री तैयार करने के लिए शिक्षकों को कई एप्लीकेशन्स और उपकरणों का सहारा लेना पड़ा,

[35] König, J., Biela, D. J. J., & Glutsch, N. (2020). Adapting to online teaching during COVID-19 school closure: teacher education and teacher competence effects among early career teachers in Germany. *European Journal of Teacher Education, 43*(4), 608-622. https://doi.org/10.1080/02619768.2020.1809650

[36] Escobar, P. S., & Morrison, A. (2020). Online teaching placement during the COVID-19 pandemic in Chile: challenges and opportunities. *European Journal of Teacher Education, 43*(4), 587-607. https://doi.org/10.1080/02619768.2020.1820981

जिससे उनके प्रौद्योगिकीय ज्ञान में वृद्धि हुई। कोविड के कारण बनी इन परिस्थितियों के कारण अध्यापकों के ज्ञान और शिक्षण कौशल की भी परीक्षा हो गई।

डिजिटल शिक्षण को सफल बनाने के लिए आवश्यक है कि शिक्षक अपनी तकनीकी क्षमता के अलावा विभिन्न उपकरणों के साथ प्रभावी ढंग से पढ़ाने के कौशल का भी विकास करें। तकनीकी और सॉफ्टवेयर से संबंधित ज्ञान आसानी से हासिल किया जा सकता है और इनका प्रयोग भी सीखा जा सकता है किंतु ऑनलाइन सामाजिकीकरण करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य हो सकता है। वहीं संचार की सार्थकता के लिए सामाजिक सामंजस्य को बढ़ावा देना भी महत्वपूर्ण है [Lily K.L. Compton (2009)]।[37] ऑनलाइन शिक्षण कक्षा आधारित शिक्षण से काफी अलग है क्योंकि कक्षा में पढ़ाने के लिए अपने विषय का ज्ञान होना पर्याप्त है। वहीं ऑनलाइन शिक्षण में विषय के साथ-साथ डिजिटल उपकरणों के बारे में जानकारी होना व डिजिटली सामाजिकीकरण करने की कला होना भी आवश्यक है। विभिन्न प्लेटफॉर्म्स, जैसे - यूट्यूब और गूगल आदि पर तमाम सॉफ्टवेयर्स और तकनीकी उपकरणों से संबंधित जानकारी उपलब्ध है। जिनकी सहायता से कोई भी व्यक्ति आसानी से इन सबका प्रयोग सीख सकता है। वहीं ऑनलाइन विद्यार्थियों व साथी शिक्षकों के साथ सामंजस्य बिठाना व्यक्ति विशेष पर निर्भर करता है, अत: यह अधिक चुनौतीपूर्ण कार्य है व अधिक महत्वपूर्ण भी है। यदि साथियों व शिक्षार्थियों के साथ तालमेल ही नहीं बैठेगा तो शिक्षण कार्य प्रभावी ढंग से नहीं हो पाएगा।

कोरोना महामारी के कारण लगे लॉकडाउन के चलते शिक्षकों व छात्रों के परस्पर संवाद करने, सीखने व सिखाने के तरीके बदल गए। सभी अध्यापक और विद्यार्थियों द्वारा डिजिटल शिक्षण के साथ सामंजस्य बैठाने का प्रयास किया जा रहा है। इससे शिक्षकों व छात्रों के अभिभावकों के साथ संवाद करने के तरीकों में भी परिवर्तन आया। स्कूल बंद होने के कारण उत्पन्न व्यवधानों के कारण शिक्षण के पुराने तरीकों को एक नया रूप देने के मौका मिला है। डिजिटल शिक्षण के कारण परस्पर संवाद कम होने के चलते शिक्षकों का पेशेवर विकास प्रभावित हुआ है [Maria Assunção Flores &

[37] Compton, L. K. L. (2009). Preparing language teachers to teach language online: a look at skills, roles, and responsibilities. *Computer Assisted Language Learning, 22*(1), 73-99. https://doi.org/10.1080/09588220802613831

Marília Gago (2020)]।[38] डिजिटल शिक्षण विद्यार्थियों व शिक्षकों सभी के लिए नया था, इस कारण इसके साथ सामंजस्य बैठाने व इसे सीखने की प्रक्रिया में विद्यार्थी और शिक्षक लगभग समान ही थे। नए शिक्षकों के साथ समस्या यह थी कि वे खुद को पारम्परिक शिक्षण के लिए तैयार कर के आए थे मगर उनके सामने डिजिटल शिक्षण की चुनौती आकर खड़ी हो गई।

प्रारंभ में समकालिक ऑनलाइन शिक्षण मंचों को प्राथमिकता दी जा रही थी, जहाँ छात्रों की पसंद के आधार पर ऑनलाइन प्लेटफॉर्म में से चुनाव करने का विकल्प भी था। एक व्याख्याता के अनुसार, समकालिक ऑनलाइन शिक्षण के लिए उनके छात्रों की पसंद जूम थी, किंतु इंटरनेट संबंधित समस्याओं के कारण उन्हें असमकालिक (Asynchronous) शिक्षण का सहारा लेना पड़ा। जब पठन-पाठन की व्यवस्था बदली तो मूल्यांकन करने की विधि पर भी समस्या उत्पन्न हुई। इस दौरान मूल्यांकन के लिए ओपन-बुक और ऑनलाइन क्विज़ का भी सहारा लिया गया। अत: शिक्षकों को पढ़ाने में तो कठिनाई हुई ही, साथ ही अपने विद्यार्थियों का मूल्यांकन करने में भी समस्या हुई। कोविड-19 महामारी के कारण शिक्षकों में शिक्षा में समानता को लेकर जागरूकता आई है [Nurfaradilla Mohamad Nasri et al. (2020)]।[39] समकालिक ऑनलाइन शिक्षण के लिए जहाँ गूगल मीट, जूम और माइक्रोसॉफ्ट टीम्स आदि जैसे प्लेटफॉर्म्स का उपयोग किया गया तो वहीं असमकालिक शिक्षण के लिए भी इंस्टैंट मैसेजिंग प्लेटफॉर्म्स, जैसे व्हाट्सएप और टेलीग्राम आदि कई विकल्प उपलब्ध थे। नेटवर्क और सीमित इंटरनेट आदि से संबंधित समस्याओं के चलते शिक्षकों द्वारा असमकालिक शिक्षण का भी सहारा लिया गया और व्हाट्सएप व टेलीग्राम आदि के माध्यम से छात्रों तक पाठ्य सामग्री पहुँचाई गई। इस दौरान छात्रों व शिक्षकों ने परस्पर संवाद के लिए समकालिक और असमकालिक दोनों प्रकार के प्लेटफॉर्म्स का प्रयोग किया। स्कूली कक्षाओं के दौरान ली जाने वाली परीक्षाओं से विद्यार्थियों की समझ व स्तर को लेकर सही मूल्यांकन हो जाता था, किंतु डिजिटल शिक्षण के दौरान विद्यार्थियों के उचित मूल्यांकन में भी काफी समस्या आई।

---

[38] Flores, M. A., & Gago, M. (2020). Teacher education in times of COVID-19 pandemic in Portugal: national, institutional and pedagogical responses. *Journal of Education for Teaching, 46*(4), 507-516. https://doi.org/10.1080/02607476.2020.1799709

[39] Nasri, N. M., Husnin, H., Mahmud, S. N. D., & Halim, L. (2020). Mitigating the COVID-19 pandemic: a snapshot from Malaysia into the coping strategies for pre-service teachers' education. *Journal of Education for Teaching, 46*(4), 546-553. https://doi.org/10.1080/02607476.2020.1802582

डिजिटल शिक्षण को लेकर अलग-अलग विषयों के शिक्षकों के विचार अलग-अलग हैं। प्रयोगिक विषयों जैसे - भौतिक विज्ञान व रसायन विज्ञान आदि के शिक्षक स्कूली शिक्षण को प्राथमिकता देने की बात करते हैं, वहीं सामान्य विषयों, जैसे - हिंदी व अंग्रेजी आदि के शिक्षकों के मध्य डिजिटल शिक्षण को लेकर मिले-जुले विचार हैं। सामान्यत: वे भी स्कूली शिक्षण को ही प्राथमिकता देते दिखे। शिक्षकों पर डिजिटल शिक्षण के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रकार के प्रभाव देखे गए (Mostafa Nazari & Haniye Seyri 2021)।[40] प्रयोगिक विषयों के शिक्षक स्कूली कक्षाओं में अपने विषय से संबंधित प्रयोग करके विद्यार्थियों को अधिक बेहतर समझा सकते हैं। ऑनलाइन कक्षाओं में प्रयोग की वीडियो तो दिखाई जा सकती है, किंतु प्रयोग करके या करवा के नहीं दिखाया जा सकता। इस कारण प्रयोगिक विषयों के शिक्षक डिजिटल शिक्षण को प्राथमिकता नहीं देते हैं। किंतु ऑनलाइन शिक्षण के कारण शिक्षकों के मध्य प्रौद्योगिकी को लेकर विचार बदले हैं। इस दौरान शिक्षकों व विद्यार्थियों के रिश्तों में भी सुधार आया देखा गया है। मगर ऑनलाइन कक्षाओं के साथ एक समस्या ये रही कि अपने विषय में महारत हासिल किए अनुभवी शिक्षकों को भी ऑनलाइन कक्षाओं के लिए तैयारी करनी पड़ी व डिजिटल उपकरणों का प्रयोग सीखना पड़ा।

कोविड-19 महामारी के चलते शिक्षकों को बिना किसी पूर्व तैयारी के पारम्परिक शिक्षण से डिजिटल शिक्षण पर आना पड़ा। डिजिटल शिक्षण के लिए प्रौद्योगिकी का ज्ञान होना मूलभूत आवश्यकता थी। इस दौरान कुछ अध्यापकों को समस्याएँ और हताशा भी हुई। 32 नए शिक्षकों पर किए गए एक अध्ययन में भाग लेने वाले अधिकांश प्रतिभागियों ने बताया कि घर से शिक्षण कार्य करना उनके लिए कठिन था। एक प्रतिभागी ने कहा कि वह जूम से परिचित नहीं थी। कई प्रतिभागियों को परिवार और शिक्षण कार्य में सामंजस्य बैठाने में समस्या हुई व अध्ययन में भाग लेने वाले कुछ शिक्षकों को डिजिटल उपकरणों की कमी से संबंधित समस्या हुई। वहीं कुछ शिक्षकों को इसमें अवसर भी दिखाई दिए कि वे डिजिटल उपकरणों की सहायता से अपनी पाठ्य सामग्री को अधिक रचनात्मक बनाकर पेश कर सकते थे तथा साथी शिक्षकों के बीच तकनीकी विशेषज्ञ के रूप में अपनी पहचान बना सकते थे (Nurit Dvir & Orna Schatz-Oppenheimer 2020)।[41]

---

[40] Nazari, M., & Seyri, H. (2021). Covidentity: examining transitions in teacher identity construction from personal to online classes. *European Journal of Teacher Education*. https://doi.org/10.1080/02619768.2021.1920921

[41] Dvir, N., & Oppenheimer, O. S. (2020). Novice teachers in a changing reality. *European Journal of Teacher Education, 43*(4), 639-656. https://doi.org/10.1080/02619768.2020.1821360

डिजिटल शिक्षण के दौरान घर और स्कूल का अंतर लगभग समाप्त हो गया था व घर ही स्कूल बन गया था। इस कारण कुछ शिक्षकों को समस्या हुई क्योंकि शिक्षण कार्य के दौरान उनके परिवार के सदस्य उनके सामने होते थे व उन्हें परिवार और कार्य में सामंजस्य बैठाना पड़ रहा था। साथ ही कुछ शिक्षक डिजिटल प्लेटफॉर्म्स से परिचित नहीं थे। कुछ शिक्षक जो डिजिटल उपकरणों के इस्तेमाल से परिचित थे, उन्होंने इस मौके का लाभ उठाया व साथी शिक्षकों की भी सहायता की।

डॉ. केवल आनन्द काण्डपाल (2020) ने अपने लेख में कहा है कि वर्तमान समय में लगभग हर आयु वर्ग के लोग सोशल मीडिया को पसंद करने लगे हैं। वे आगे कहते हैं कि लॉकडाउन ने लोगों की दिनचर्या को प्रभावित किया है, जिसके चलते इस दौरान सोशल मीडिया का प्रयोग बढ़ा है। शिक्षकों द्वारा बच्चों की पढ़ाई के लिए डिजिटल शिक्षा प्रणाली का उपयोग किए जाने की बात भी इस लेख में की गई है। सोशल मीडिया के बारे में डॉ. काण्डपाल कहते हैं, "यह एक अच्छा सेवक है परन्तु बहुत बुरा स्वामी भी है।"[42] लॉकडाउन के कारण लोग घर से बाहर जा नहीं सकते थे, इस कारण मनोरंजन के लिए व लोगों से बात करने के लिए सोशल मीडिया का काफी उपयोग किया गया। सोशल मीडिया व डिजिटल उपकरणों का प्रयोग नियंत्रण में रहकर किया जाए तो यह बहुत काम आ सकते हैं, वहीं अधिक इस्तेमाल ये नुकसान भी पहुँचाते हैं।

डॉ. राजेश कुमार ठाकुर (2021) अपने लेख में लिखते हैं कि शुरुआती दौर में ऑनलाइन कक्षाएँ लेना शिक्षकों के लिए आसान नहीं था। ब्लैक बोर्ड से डिजिटल बोर्ड पर आना चुनौतीपूर्ण कार्य था। डॉ. ठाकुर आगे लिखते हैं कि डिजिटल शिक्षण में सॉफ्टवेयर्स की सहायता से पढ़ा पाना आसान नहीं है क्योंकि सभी अध्यापक तकनीक को लेकर इतने दक्ष और प्रशिक्षित नहीं हैं।[43]

Prabhavathy Amma Pappathy V A (2018) अपनी पीएच.डी. थिसिस में कहते हैं कि दूरस्थ शिक्षा के साथ प्रौद्योगिकी का संबंध हमेशा रहा है। इन्होंने अपने शोध में पाया कि अनुदेशात्मक फेसबुक के माध्यम से शिक्षण व सीखने की प्रक्रिया जटिल अवधारणाओं को समझने के लिए आसान बनाती

---

[42] Kandpal, K.A. (2020, April 21). *Mahamari aur social media ki bhoomika*. Educationmirror. https://educationmirror.org/2020/04/21/role-of-social-media-in-the-time-of-covid19/

[43] Thakur, R. (2021, April 30). *Covid-19 ke karan shiksha par kya asar pada?* Educationmirror. https://educationmirror.org/2021/04/30/impact-on-education-due-to-covid-19-situation-in-india/

है। इस शोध से यह भी पता चला कि स्मार्ट फोन और निर्देशात्मक फेसबुक के माध्यम से कहीं भी व कभी भी सीखने की अवधारणा पारंपरिक तरीकों की तुलना में अधिक प्रभावी है।[44] रेडियो, प्रिंट, टेलीफोन, ऑडियो-वीडियो टेप, टेलीविजन और कंप्यूटर आदि के प्रयोग के रूप में प्रौद्योगिकी शिक्षक और शिक्षार्थी के मध्य पुल का कार्य करती है। इसकी सहायता से अध्यापकों को अपने पाठों को व्यवस्थित करने और प्रस्तुत करने में भी आसानी होती है।

कोविड-19 महामारी के कारण विश्व के लगभग 190 देशों में स्कूल और विश्वविद्यालय बंद करने पड़े व ऑनलाइन और गृह शिक्षण जैसे विकल्पों का सहारा लेना पड़ा (UNESCO 2020)।[45] डिजिटल शिक्षण के लिए गूगल मीट, जूम, माइक्रोसॉफ्ट टीम्स, व्हाट्सएप व टेलीग्राम आदि प्लेटफॉर्म्स का उपयोग किया गया। इस दौरान कई अध्यापकों को डिजिटल शिक्षण पसंद आया और उन्होंने इसे लाभ के अवसर के रूप में देखा। वहीं कुछ शिक्षकों को डिजिटल उपकरणों का इस्तेमाल करने में समस्याएँ हुईं व नेटवर्क तथा सीमित इंटरनेट आदि की उपलब्धता के कारण परेशानी हुई। उत्पन्न चुनौतियों ने शिक्षण की प्रकृति व पठन-पाठन के तरीकों के बारे में विचार करने पर मजबूर कर दिया है, साथ ही अप्रत्याशित स्थितियों के लिए तैयार रहने की सीख भी दी है। इस महामारी ने पूरे विश्व के शिक्षकों को झकझोरकर रख दिया व कई ऐसी समस्याओं के समाधान खोजने के लिए प्रेरित किया, जिनका उन्होंने पहले सामना भी नहीं किया था। प्रस्तुत शोध कार्य के माध्यम से शिक्षकों पर सोशल मीडिया के प्रभाव और पठन-पाठन में इसकी उपयोगिता का अध्ययन करने का प्रयास किया जाएगा।

---

[44] PAPPATHY, V. A. P. A. (2018). *Effect of instructional face book on achievement in developmental psychology of distance mode prospective teachers* [Doctoral dissertation, Manonmaniam Sundaranar University]. Shodhganga.

[45] Murray, C., Heinz, M., Munday, I., Keane, E., Flynn, N., Connolly, C., Hall, T., & MacRuairc, G. (2020). Reconceptualising relatedness in education in 'Distanced' Times. *European Journal of Teacher Education, 43*(4), 488-502. https://doi.org/10.1080/02619768.2020.1806820

अध्याय 3 :
शोध प्रविधि

शोध के उद्देश्य

1 - शिक्षण कार्य में सोशल मीडिया की उपयोगिता का अध्ययन

2 - शिक्षकों पर सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन

3 - शिक्षकों के मध्य सोशल मीडिया की लोकप्रियता का अध्ययन

4 - पठन-पाठन में सोशल मीडिया के प्रयोग से होने वाले लाभ व हानि का अध्ययन

शोध प्रश्न

1 – महामारी के दौरान शिक्षण कार्य में किस तरह के बदलाव आए हैं ?

2 - अध्यापन में सोशल मीडिया के प्रयोग को लेकर अध्यापकों के क्या विचार हैं ?

3 – शिक्षकों को सोशल मीडिया ने किस प्रकार प्रभावित किया है ?

शोध की महत्ता

कोरोना महामारी ने पूरे विश्व को अपनी चपेट में लिया। शिक्षा का क्षेत्र भी इसकी जद में आने से बच नहीं पाया। यूनेस्को की रिपोर्ट के अनुसार कोरोना काल में लगभग 190 देशों में एक लंबे समय के लिए स्कूलों और विश्वविद्यालयों को बंद रखना पड़ा। जब स्कूल बंद थे तो डिजिटल शिक्षण ही पठन-पाठन का एक मात्र विकल्प था। माइक्रोसॉफ्ट टीम्स, जूम, गूगल मीट, व्हाट्सएप व टेलीग्राम आदि सोशल मीडिया व वीडियो आधारित सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स की सहायता से पठन-पाठन का कार्य हुआ। शिक्षण कार्य में सोशल मीडिया के प्रयोग से कई फायदे हैं तो कई नुकसान भी हैं। इस शोध के माध्यम से कोरोना काल के दौरान शिक्षण कार्य में सोशल मीडिया की भूमिका का अध्ययन किया जाएगा। इस अध्ययन से शिक्षकों पर सोशल मीडिया का प्रभाव समझने में सहायता मिलेगी तथा डिजिटल शिक्षा को लेकर शिक्षकों की राय की जानकारी भी मिलेगी। तमाम शिक्षकों में मोबाइल और इंटरनेट को लेकर जो पूर्वाग्रह थे, वे डिजिटल शिक्षण के कारण परिवर्तित हुए हैं या नहीं, इसकी जानकारी भी इस अध्ययन से मिलेगी। साथ ही डिजिटल शिक्षण के दौरान अध्यापकों के समक्ष आई समस्याओं की जानकारी भी इस अध्ययन से मिलेगी, जिससे आने वाले समय में उन समस्याओं को दूर करने

का प्रयास किया जा सकेगा। इसी प्रकार डिजिटल शिक्षण के कुछ सकारात्मक पहलुओं का ज्ञान भी होगा, जिनका उपयोग सामान्य दिनों में पारम्परिक शिक्षण के दौरान भी किया जा सकेगा। इसके अलावा इस विषय से संबंधित अध्ययन करने वाले शोधार्थियों के लिए भी यह शोध कार्य उपयोगी सिद्ध होगा।

शोध का विस्तार

प्रस्तुत शोध कार्य उत्तर प्रदेश के बरेली जनपद के माध्यमिक व उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों तक ही सीमित है। शोध कार्य के लिए हिंदी व अंग्रेजी माध्यम के 100 शिक्षकों से प्रश्नावली भरवाई गई है। इन उत्तरदाताओं का चयन सुविधाजनक प्रतिदर्श चयन (Convenience sampling) विधि से किया गया है। प्रतिदर्श में शामिल शिक्षकों को ई-मेल व व्हाट्सएप के माध्यम से प्रश्नावली भेजी जाएगी।

शोध की सीमाएँ

ऑनलाइन कक्षाओं के प्रबंधन के लिए जहाँ सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स का इस्तेमाल किया गया है तो वहीं ऑनलाइन कक्षाएँ मुख्यत: वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग प्लेटफॉर्म्स के द्वारा की गईं। इस कारण इस अध्ययन में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग प्लेटफॉर्म्स, जैसे - गूगल मीट, जूम और माइक्रोसॉफ्ट टीम्स को भी शामिल किया गया है। kentquakers.org.uk वेबसाइट के एक लेख में गूगल मीट और जूम को वीडियो आधारित सोशल मीडिया की श्रेणी में रखा गया है तथा kubbco.com वेबसाइट के एक लेख में जूम को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म बताया गया है। एकत्र किया जाने वाला प्राथमिक डाटा सर्वेक्षण आधारित है। प्राथमिक डाटा आमतौर पर कुछ सीमाओं के अधीन होता है। कई बार कुछ उत्तरदाताओं द्वारा सही जानकारी नहीं दी जाती है। प्रश्नावली तैयार करते समय सावधानी बरती गई है, जिससे त्रुटियों की संभावना कम हो।

शोध प्रविधि

इस शोध का प्रमुख उद्देश्य शिक्षण कार्य में सोशल मीडिया की उपयोगिता व शिक्षकों पर सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन करना है। इस शोध कार्य के लिए बरेली जनपद के हिंदी माध्यम के माध्यमिक व उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के 50 शिक्षकों और अंग्रेजी माध्यम के माध्यमिक व उच्चतर माध्यमिक स्कूलों के 50 शिक्षकों से प्रश्नावली भरवाई गई है। इन शिक्षकों का

चयन सुविधाजनक प्रतिदर्श चयन (Convenience sampling) विधि से किया गया है। प्रतिदर्श में शामिल शिक्षकों को ई-मेल व व्हाट्सएप के माध्यम से प्रश्नावली भेजी गई है। इस अध्ययन के लिए शोध की विवरणात्मक प्रविधि का प्रयोग किया गया है।

- प्राथमिक स्त्रोत – प्रश्नावली
- द्वितीयक स्त्रोत – संबंधित साहित्य का अवलोकन, ऑनलाइन वेबसाइट्स, समाचार पत्र-पत्रिकाओं के आलेख आदि।

अध्याय 4:
आँकड़ा संकलन एवं विश्लेषण

कोरोना काल में शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स व वीडियो बेस्ड सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स का इस्तेमाल किया गया। पठन-पाठन में इनके प्रयोग के कारण शिक्षण कार्य में कई बदलाव आए। कुछ शिक्षकों को ये बदलाव सकारात्मक लगे तो कुछ को नकारात्मक भी लगे। प्रस्तुत शोध में शिक्षण मंच के रूप में सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। शोध कार्य हेतु आँकड़ों का संकलन सर्वेक्षण विधि द्वारा किया गया है।

बोगार्ड्स के अनुसार, "सामाजिक सर्वेक्षण लोगों के एक विशेष समूह के रहन-सहन के तरीकों और कार्य करने की स्थितियों से सम्बंधित आँकड़ों का संग्रह है।"

मार्क अब्राम्स के अनुसार, "सामाजिक सर्वेक्षण एक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा किसी समुदाय की संरचना और गतिविधियों के सामाजिक पक्ष से सम्बंधित संख्यात्मक आँकड़े एकत्रित किए जा सकते हैं।"

एन. मोर्स के अनुसार, "सामाजिक परिस्थितियों, समस्याओं या जनगणना के लिए वैज्ञानिक व क्रमिक तरीके से की गई व्याख्या का एक तरीका है सर्वेक्षण।"[46]

अत: ये कहा जा सकता है कि किसी समुदाय या विशेष समूह को जानने व समझने के उद्देश्य से आँकड़े एकत्रित करने की प्रक्रिया ही सर्वेक्षण है।

सर्वेक्षण मुख्यत: दो प्रकार के होते हैं[47] -

1) **वर्णनात्मक सर्वेक्षण (Descriptive Survey) -** इस प्रकार के सर्वेक्षण में विषय से सम्बंधित वर्तमान परिस्थितियों या दृष्टिकोणों का वर्णन करने का प्रयास किया जाता है। यह सर्वेक्षण अभी "क्या मौजूद है" पर आधारित होता है।
2) **विश्लेषणात्मक सर्वेक्षण (Analytical survey) -** इस प्रकार के सर्वेक्षण में क्या के स्थान पर क्यों पर ध्यान केंद्रित किया जाता है तथा यह समझाने का प्रयास किया जाता है कि कोई भी परिस्थिति क्यों मौजूद है।

सर्वेक्षण द्वारा आँकड़ों के संकलन के लिए प्रमुख 5 तरीके हैं। इनमें से किसी एक या एक से अधिक का प्रयोग कर आँकड़ों का संकलन किया जा सकता है।[48]

---

[46] Das, S. (Ed.). (n.d.). *Methodology of social research*. http://ebooks.lpude.in/arts/ma_sociology/year_1/DSOC404_METHODOLOGY_OF_SOCIAL_RESEARCH_ENGLISH.pdf

[47] Wimmer, R. D., & Dominic, J. R. (2015). *Mass media research : An introduction.* (10th ed.) Cengage Learning.

[48] ibid.

1) **मेल सर्वेक्षण (Mail Survey) -** इसमें प्रतिदर्श में शामिल उत्तरदाताओं को डाक द्वारा प्रश्नावली भेजी जाती है तथा उनसे प्रश्नावली भरकर वापस भेजने का आग्रह किया जाता है। इस प्रकार के सर्वेक्षण में समय व धन की बचत तो होती है किंतु उत्तरदाताओं की प्रतिक्रिया दर काफी कम होती है।
2) **टेलीफोन सर्वेक्षण (Telephone Survey) -** इस प्रकार के सर्वेक्षण में शोधकर्ता द्वारा सर्वेक्षण में सहभागिता करने वाले लोगों से टेलीफोन पर प्रश्न किये जाते हैं। सर्वेक्षण का यह तरीका व्यक्तिगत साक्षात्कार से काफी मिलता जुलता है।
3) **व्यक्तिगत साक्षात्कार (Personal Interview) -** इसमें शोधकर्ता द्वारा प्रतिदर्श में शामिल व्यक्ति से मिलकर शोध से सम्बंधित प्रश्न पूछे जाते हैं तथा उनके उत्तरों को लिखा या रिकॉर्ड किया जाता है। जब शोधकर्ता द्वारा प्रश्न पहले से निश्चित किए गए एक क्रम में पूछे जाते हैं तो इसे **संरचित साक्षात्कार** कहा जाता है। जब साक्षात्कारकर्ता द्वारा व्यापक प्रश्न पूछे जाते हैं तथा उनके पास आवश्यक जानकारी हासिल करने हेतु प्रश्न बढ़ाने-घटाने व उनका क्रम बदलने की स्वतंत्रता होती है तो ऐसे साक्षात्कार को **असंरचित साक्षात्कार** कहा जाता है।
4) **समूह प्रशासित सर्वेक्षण (Group-administered Survey) -** इसमें उत्तरदाताओं के एक समूह को एकत्रित कर उन्हें एक प्रश्नावली की अलग-अलग प्रतियाँ दे दी जाती हैं या समूह साक्षात्कार में भाग लेने के लिए कहा जाता है।
5) **इंटरनेट सर्वेक्षण (Internet Survey) -** इसमें उत्तरदाताओं से टेलीफोन या ईमेल आदि से संपर्क कर सर्वेक्षण में शामिल होने का आग्रह किया जाता है। उत्तरदाताओं को ईमेल के माध्यम से प्रश्नावली भेज दी जाती है या प्रश्नावली का लिंक दे दिया जाता है।

प्रस्तुत शोध में वर्णनात्मक सर्वेक्षण का प्रयोग किया गया है तथा आँकड़ों के संकलन के लिए इंटरनेट सर्वेक्षण का तरीका अपनाया गया है। सर्वेक्षण में बरेली जनपद के माध्यमिक व उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के 100 अध्यापकों से प्रश्नावली भरवाई गई है, जिनमें 50 शिक्षक हिंदी माध्यम स्कूलों व 50 शिक्षक अंग्रेजी माध्यम स्कूलों के हैं। प्रतिभागियों में 68 पुरुष व 32 महिलाएँ शामिल हैं। प्रश्नावली के माध्यम से प्रतिभागियों से 22 प्रश्न पूछे गए। 17वें व 19वें प्रश्न को 3-3 भागों में पूछा गया। संकलित आँकड़ों का विश्लेषण निम्न प्रकार है -

1 - कोरोना महामारी के चलते लगाए गए लॉकडाउन के दौरान आपके स्कूल में होने वाली पढ़ाई पर क्या प्रभाव पड़ा? How did the lockdown affect your school's education?

100 responses

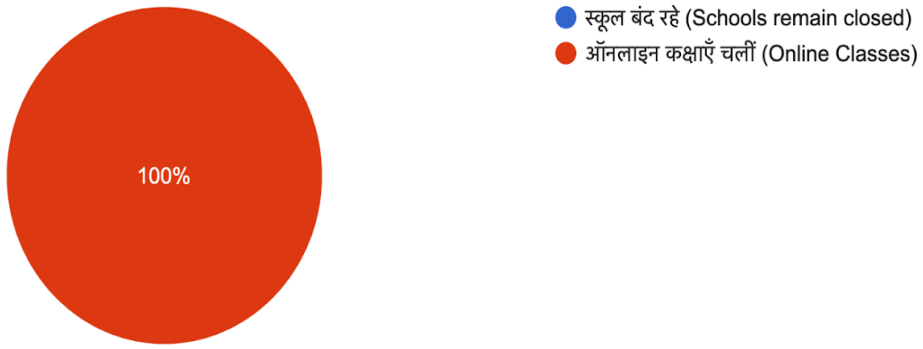

चित्र - 4.1

विश्लेषण - संकलित आँकड़े दिखाते हैं कि लॉकडाउन के दौरान सभी शिक्षकों के स्कूलों में ऑनलाइन पढ़ाई हुई।

2 - यदि ऑनलाइन कक्षाएँ चलीं तो आपने प्रतिदिन कितने घंटे ऑनलाइन शिक्षण कार्य किया ? If online classes were held, how many hours per day did you do online teaching?

100 responses

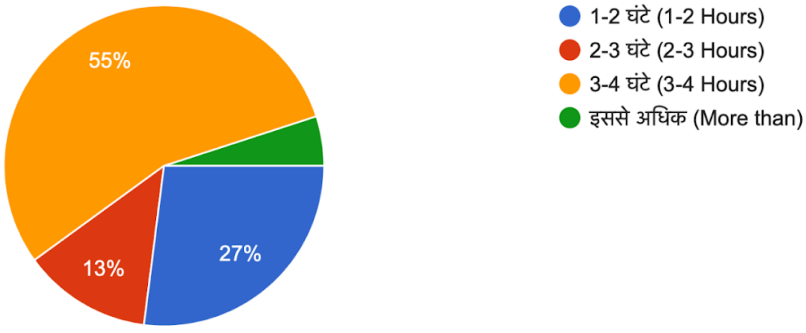

चित्र - 4.2

विश्लेषण - 27% शिक्षकों ने 1-2 घंटे, 13% ने 2-3 घंटे तथा 55% शिक्षकों ने 3-4 घंटे ऑनलाइन शिक्षण कार्य किया। वहीं 5% शिक्षक ऐसे भी हैं, जिन्होंने प्रतिदिन 4 घंटे से अधिक ऑनलाइन शिक्षण कार्य किया।

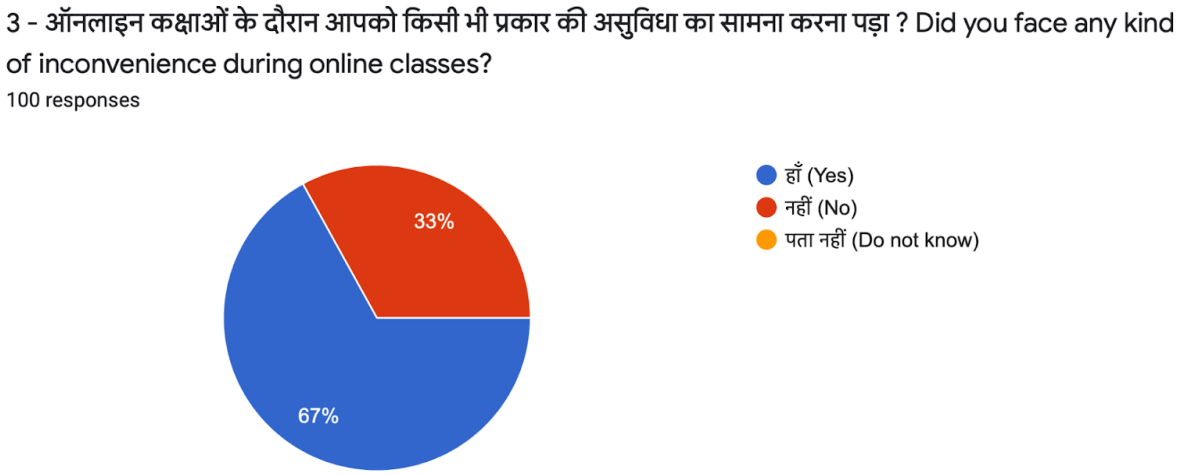

चित्र - 4.3

विश्लेषण - सर्वेक्षण में भाग लेने वाले 67% शिक्षकों ने ऑनलाइन कक्षाओं के दौरान असुविधा होने की बात स्वीकारी। हिंदी माध्यम स्कूलों के 50 में से 39 शिक्षकों को समस्याएँ हुईं जबकि अंग्रेजी माध्यम स्कूलों के 50 में से 28 अध्यापकों को ऑनलाइन कक्षाओं के दौरान दिक्कतों का सामना करना पड़ा।

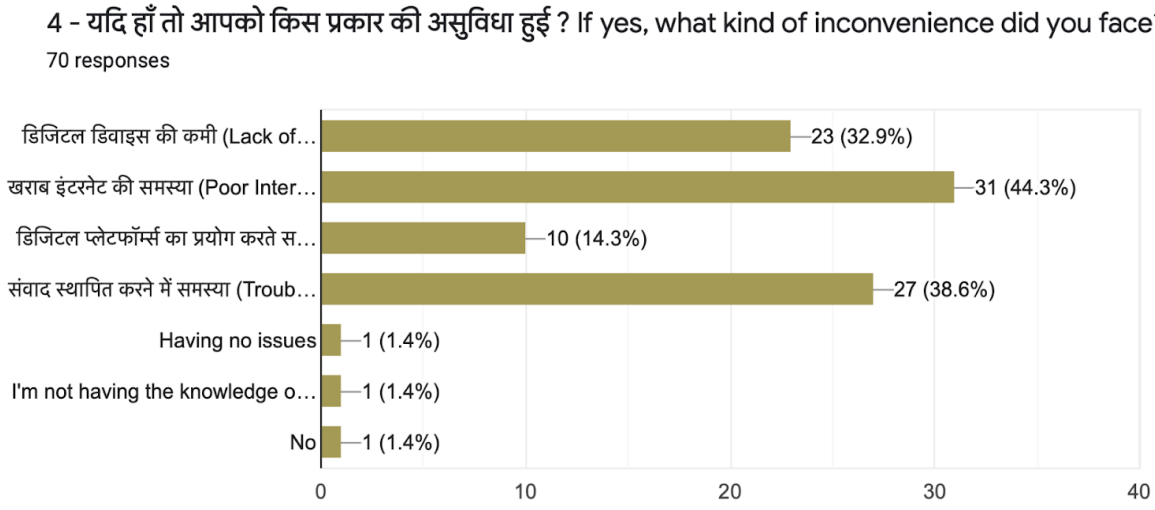

चित्र - 4.4

विश्लेषण - ऑनलाइन कक्षाओं के दौरान होने वाली असुविधाओं से संबंधित प्रश्न का 70 उत्तरदाताओं द्वारा उत्तर दिया गया, जिसमें से 39 हिंदी माध्यम स्कूलों के अध्यापक हैं। इनमें से 32.9% शिक्षकों को ऑनलाइन कक्षाओं के दौरान डिजिटल डिवाइस की कमी की समस्या, 44.3% को खराब इंटरनेट

की समस्या, 14.3% को डिजिटल प्लेटफॉर्म्स का प्रयोग करते समय भाषाई समस्या व 38.6% को संवाद स्थापित करने में समस्या हुई। इनमें 18.57% अध्यापकों को सिर्फ डिजिटल डिवाइस की कमी की समस्या, 24.28% को सिर्फ खराब इंटरनेट की समस्या, 2.85% को सिर्फ डिजिटल प्लेटफॉर्म्स का प्रयोग करते समय भाषाई समस्या व 28.57% को सिर्फ संवाद स्थापित करने में समस्या हुई। वहीं एक उत्तरदाता को डिजिटल प्लेटफॉर्म्स का प्रयोग करते समय भाषाई समस्या व संवाद स्थापित करने में समस्या हुई, एक को खराब इंटरनेट और संवाद स्थापित करने में समस्या हुई, एक को संवाद स्थापित करने में समस्या के साथ डिजिटल डिवाइस की कमी की समस्या हुई तथा एक को खराब इंटरनेट और संवाद स्थापित करने में समस्या के साथ ही डिजिटल प्लेटफॉर्म्स का प्रयोग करते समय भाषाई समस्या भी हुई। इसी प्रकार 4.28% उत्तरदाताओं को खराब इंटरनेट के साथ डिजिटल प्लेटफॉर्म्स का प्रयोग करते समय भाषाई समस्या हुई, 8.57% को डिजिटल डिवाइस की कमी की समस्या व खराब इंटरनेट की समस्या हुई तथा 4.28% को डिजिटल डिवाइस की कमी व खराब इंटरनेट और संवाद स्थापित करने में समस्या के साथ ही डिजिटल प्लेटफॉर्म्स का प्रयोग करते समय भाषाई समस्या का सामना करना पड़ा।

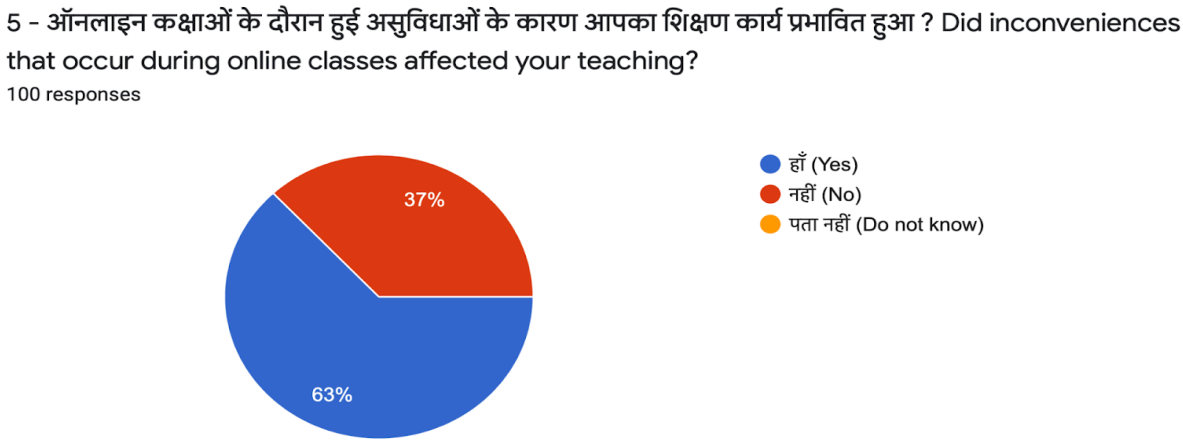

चित्र - 4.5

विश्लेषण - सर्वेक्षण में शामिल 63% लोगों ने माना कि ऑनलाइन कक्षाओं के दौरान हुई असुविधाओं के कारण उनका शिक्षण कार्य प्रभावित हुआ। ऐसे अध्यापक जिनका शिक्षण कार्य प्रभावित हुआ, उनमें 58.73% शिक्षक हिंदी माध्यम विद्यालयों व 41.26% शिक्षक अंग्रेजी माध्यम स्कूलों के हैं।

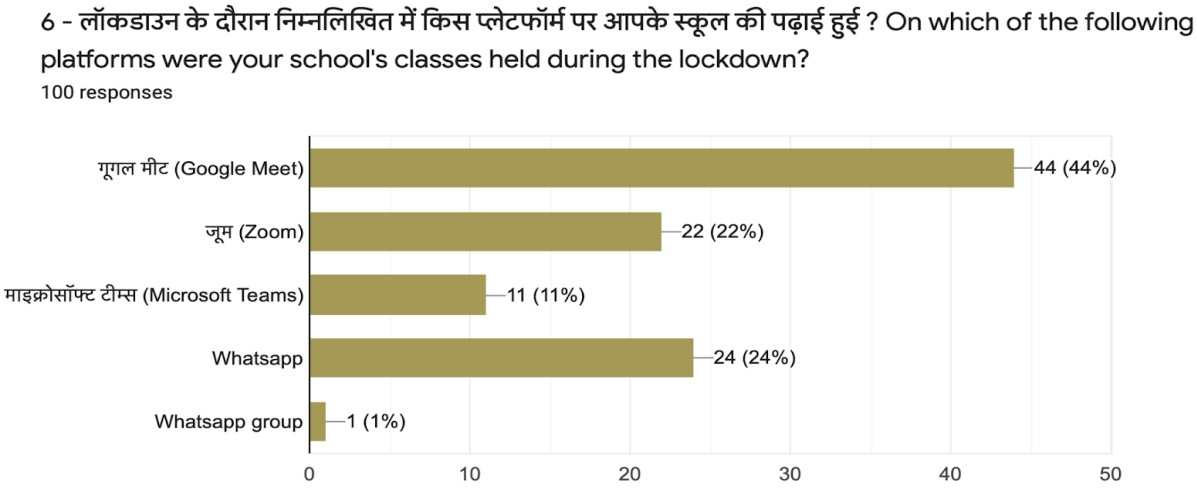

चित्र - 4.6

विश्लेषण - लॉकडाउन के दौरान 44% अध्यापकों ने गूगल मीट, 22% ने जूम, 11% ने माइक्रोसॉफ्ट टीम्स तथा 25% ने व्हाट्सएप समूह की सहायता से शिक्षण कार्य किया। इनमें 42% ने सिर्फ गूगल मीट व 20% ने सिर्फ जूम का इस्तेमाल किया तथा 2% उत्तरदाताओं ने शिक्षण कार्य के लिए गूगल मीट और जूम दोनों का प्रयोग किया।

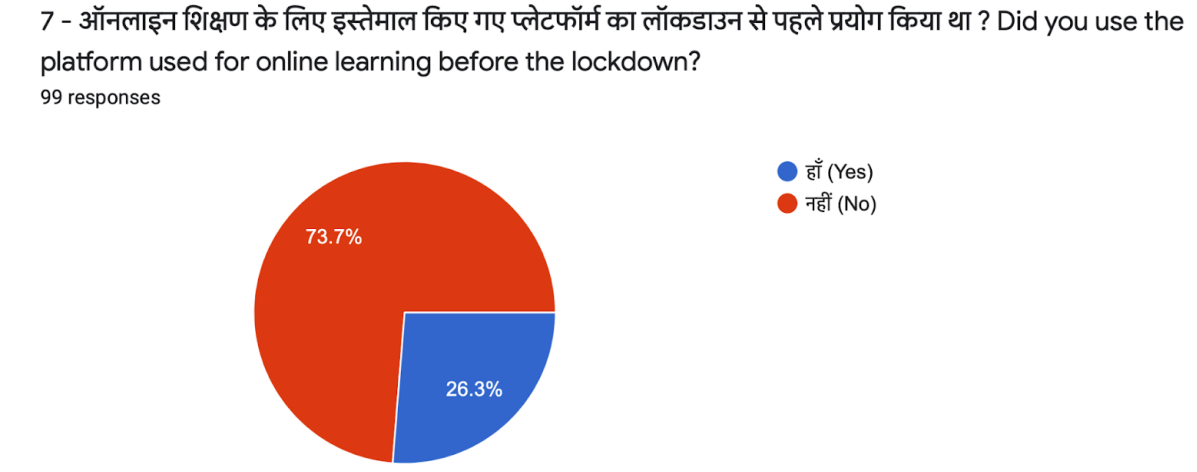

चित्र - 4.7

विश्लेषण - उत्तर देने वालों में से सिर्फ 26.3% अध्यापकों ने ही ऑनलाइन शिक्षण के लिए इस्तेमाल किए गए प्लेटफॉर्म का लॉकडाउन से पहले प्रयोग किया था। पहले इस्तेमाल करने वाले उत्तरदाताओं में से 17.17% अध्यापक हिंदी माध्यम स्कूलों के जबकि 9.09% शिक्षक अंग्रेजी माध्यम स्कूलों के हैं। सर्वेक्षण में शामिल एक उत्तरदाता द्वारा इस प्रश्न का उत्तर नहीं दिया गया।

8 - यदि नहीं तो इस प्लेटफॉर्म को समझने में आपको कितना समय लगा ? If not, how long did it take you to understand this platform?

77 responses

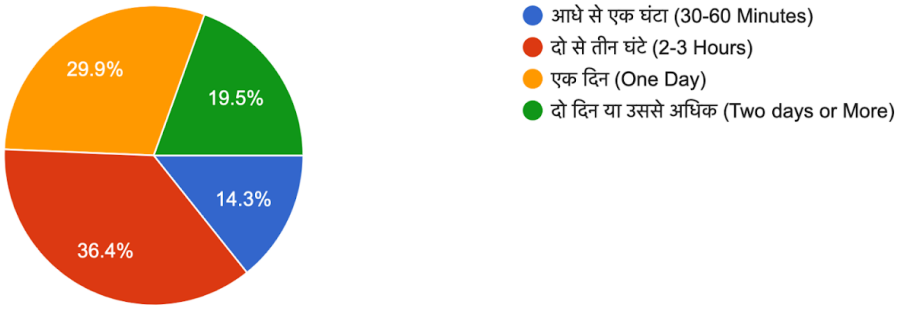

चित्र - 4.8

विश्लेषण - सर्वेक्षण में भाग लेने वाले 77 शिक्षकों द्वारा इस प्रश्न का जवाब दिया गया। 14.3% उत्तरदाताओं ने कहा कि ऑनलाइन शिक्षण के लिए इस्तेमाल किए गए प्लेटफॉर्म को समझने में उन्हें आधे से एक घंटे का समय लगा, 36.4% लोगों को दो से तीन घंटे लगे, 29.9% को एक दिन तथा 19.5% को दो दिन या उससे अधिक का समय लगा।

9 - ऑनलाइन शिक्षण के लिए इस्तेमाल किए गए प्लेटफॉर्म को आपने किसकी सहायता से समझा ? Who helped you to understand this plateform ?

100 responses

चित्र - 4.9

विश्लेषण - 33% उत्तरदाताओं ने कहा कि ऑनलाइन शिक्षण के लिए इस्तेमाल किए गए प्लेटफॉर्म का प्रयोग करना उन्होंने स्वयं सीखा। सर्वेक्षण में भाग लेने वाले 17% लोगों को संस्थान/स्कूल द्वारा ट्रेनिंग दी गई, 12% लोगों ने अपने परिवार के किसी सदस्य की सहायता से इस प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल सीखा तथा 38% लोगों ने इन प्लेटफॉर्म्स को समझने के लिए गूगल व यूट्यूब की सहायता ली।

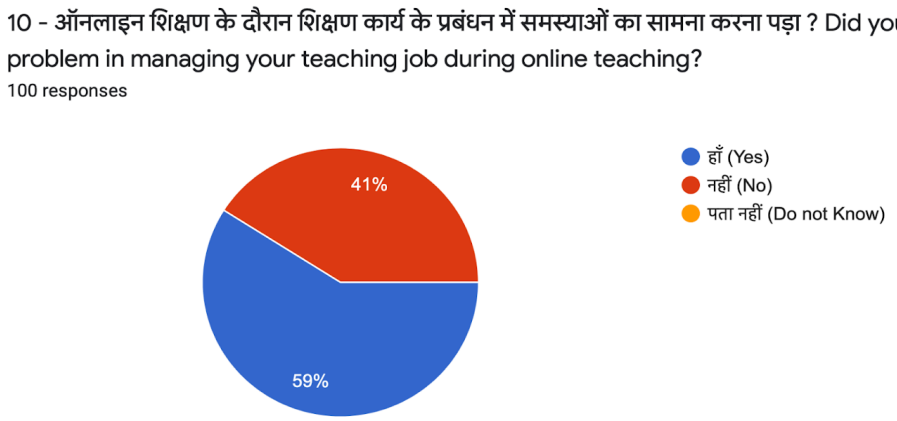

चित्र - 4.10

विश्लेषण - सर्वेक्षण में शामिल 59% अध्यापकों ने कहा कि ऑनलाइन शिक्षण के दौरान शिक्षण कार्य के प्रबंधन में समस्याओं का सामना करना पड़ा। ऐसे लोग जिन्हें शिक्षण कार्य के प्रबंधन में परेशानियाँ हुईं, उनमें 52.54% लोग हिंदी माध्यम स्कूलों के तथा 47.45% अध्यापक अंग्रेजी माध्यम स्कूलों के हैं।

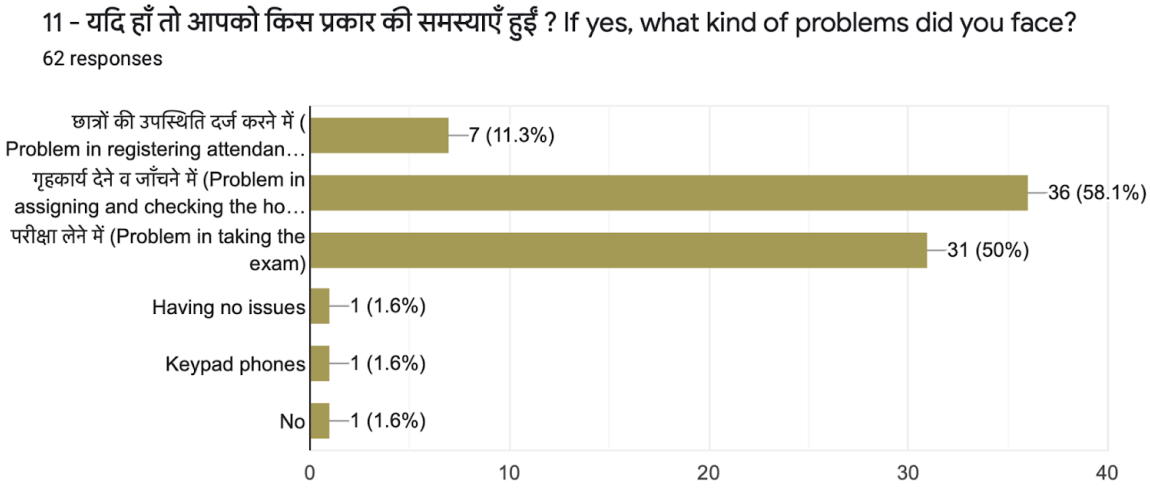

चित्र - 4.11

विश्लेषण - सर्वेक्षण में भाग लेने वाले 62 अध्यापकों ने इस प्रश्न का उत्तर दिया। इनमें से 11.3% लोगों को छात्रों की उपस्थिति दर्ज करने में समस्या हुई, 58.1% लोगों को गृहकार्य देने व जाँचने में परेशानी हुई तथा 50% अध्यापकों को ऑनलाइन कक्षाओं के दौरान परीक्षा लेने में दिक्कतों का सामना करना पड़ा। इन उत्तरदाताओं में 45.16% शिक्षक ऐसे थे, जिन्हें सिर्फ गृहकार्य देने व जाँचने में परेशानी हुई तथा 37.09% शिक्षक ऐसे थे,

जिन्हें सिर्फ परीक्षा लेने में समस्याएँ हुईं। वहीं 11.29% अध्यापकों को परीक्षा लेने, गृहकार्य देने व जाँचने तथा छात्रों की उपस्थिति दर्ज करने में भी समस्याएँ हुईं। एक उत्तरदाता को परीक्षा लेने के साथ-साथ गृहकार्य देने व जाँचने में भी परेशानी हुई। 3 उत्तरदाताओं द्वारा अन्य का विकल्प चुना गया, जिनमें से एक अध्यापक ने कीपैड फोन्स की समस्या बताई जबकि दो अन्य लोगों ने कोई समस्या न होने की बात कही।

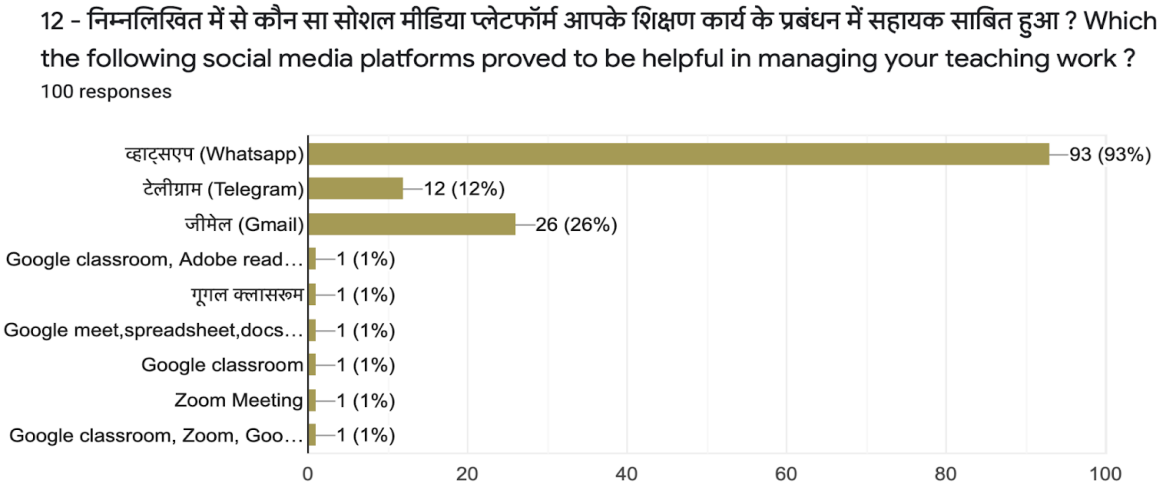

चित्र - 4.12

विश्लेषण - 93% शिक्षकों ने कहा कि व्हाट्सएप उनके शिक्षण कार्य के प्रबंधन में सहायक साबित हुआ। 12% लोगों ने टेलीग्राम तथा 26% ने जीमेल को शिक्षण कार्य के प्रबंधन में सहायक बताया। इनमें 63% लोग ऐसे थे, जिन्होंने शिक्षण कार्य के प्रबंधन के लिए सिर्फ व्हाट्सएप की सहायता ली। 4% ने सिर्फ जीमेल और एक उत्तरदाता द्वारा सिर्फ टेलीग्राम की सहायता ली गई। 15% लोगों ने व्हाट्सएप व जीमेल, 8% ने व्हाट्सएप व टेलीग्राम तथा 3% ने टेलीग्राम, व्हाट्सएप व जीमेल तीनों की सहायता शिक्षण कार्य के प्रबंधन के लिए ली। 2% लोगों ने व्हाट्सएप व जीमेल के साथ-साथ गूगल क्लासरूम का इस्तेमाल भी किया। एक उत्तरदाता ने व्हाट्सएप व जीमेल के अलावा गूगल मीट, स्प्रेडशीट, डॉक्स, एडोब रीडर, पीपीटी तथा एक ने व्हाट्सएप व जीमेल के साथ गूगल क्लासरूम, गूगल मीट, एडोब रीडर, एमएस ऑफिस आदि का प्रयोग करने की बात कही। वहीं एक उत्तरदाता ने जूम मीटिंग और एक ने गूगल क्लासरूम, एडोब रीडर, गूगल डॉक्स, गूगल स्प्रेडशीट, गूगल स्लाइड्स, गूगल जैमबोर्ड व गूगल फॉर्म्स की सहायता शिक्षण कार्य के प्रबंधन के लिए ली।

13 - लॉकडाउन के दौरान जब स्कूल बंद थे तो आपके पास अपने विषय से संबंधित किताबें व नोट्स उपलब्ध थे ? When the schools were closed during the lockdown, did you have books and notes related to your subject?
100 responses

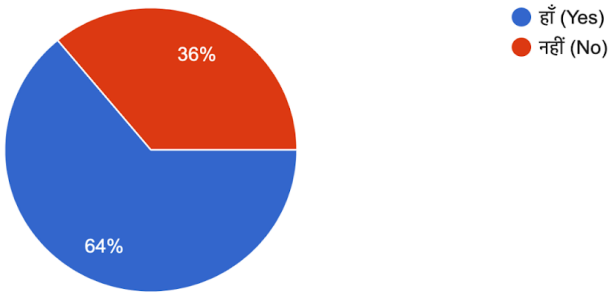

चित्र - 4.13

विश्लेषण - सर्वेक्षण में भाग लेने वाले 64% शिक्षकों ने कहा कि लॉकडाउन के दौरान जब स्कूल बंद थे तब उनके पास अपने विषय से संबंधित किताबें व नोट्स उपलब्ध थे। ऐसे लोग जिनके पास लॉकडाउन के दौरान अपने विषय से संबंधित किताबें व नोट्स उपलब्ध थे, उनमें 48.43% लोग हिंदी माध्यम स्कूलों के व 51.56% लोग अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों के अध्यापक हैं।

14 - यदि नहीं तो आपके द्वारा पाठ्य सामग्री व प्रश्नपत्र किस प्रकार तैयार किए गए ? If not, how did you prepare the course material and question paper?
48 responses

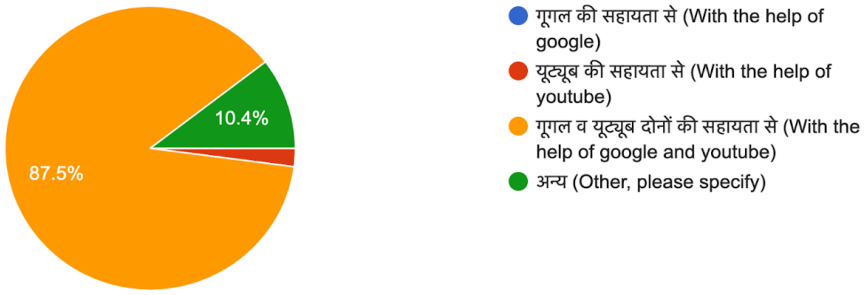

चित्र - 4.14

विश्लेषण - सर्वेक्षण में शामिल 48 लोगों ने इस प्रश्न का उत्तर दिया। 87.5% लोगों ने कहा कि लॉकडाउन के दौरान गूगल व यूट्यूब दोनों की सहायता से पाठ्य सामग्री और प्रश्नपत्र तैयार किए गए। 2.1% लोगों ने सिर्फ यूट्यूब की सहायता से पाठ्य सामग्री और प्रश्नपत्र तैयार करने की बात कही, वहीं 10.4% लोगों ने अन्य का विकल्प चुना।

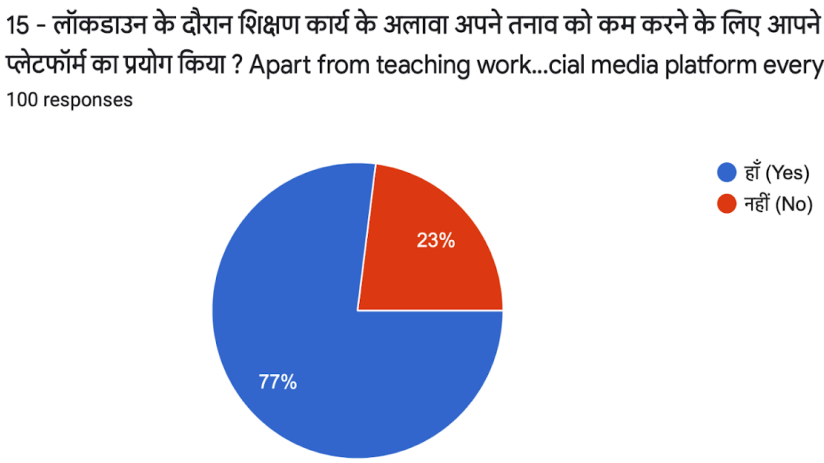

चित्र - 4.15

विश्लेषण - 77% उत्तरदाताओं ने कहा कि उन्होंने लॉकडाउन के दौरान शिक्षण कार्य के अलावा अपने तनाव को कम करने के लिए हर रोज़ किसी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल किया। 23% लोगों ने अपने तनाव को कम करने के लिए हर रोज़ किसी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का प्रयोग नहीं किया, इनमें 12% लोग अंग्रेजी माध्यम स्कूलों व 11% लोग हिंदी माध्यम स्कूलों के थे।

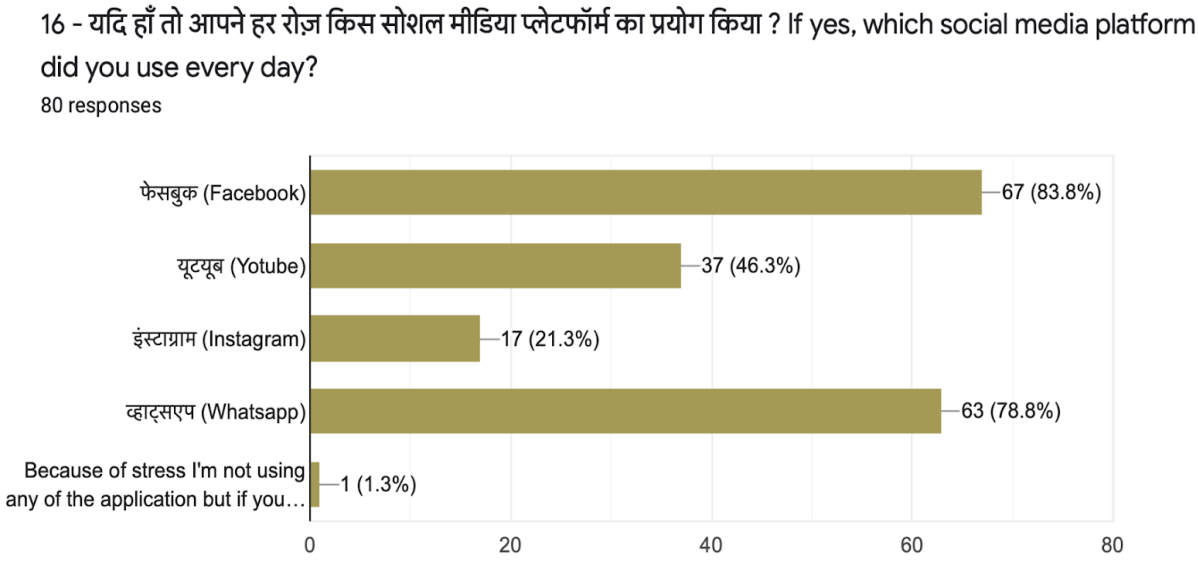

चित्र - 4.16

विश्लेषण - सर्वेक्षण में सहभागिता करने वाले 80 उत्तरदाताओं ने इस प्रश्न का जवाब दिया। 83.3% अध्यापकों ने फेसबुक, 46.3% ने यूट्यूब, 21.3%

ने इंस्टाग्राम तथा 78.8% ने व्हाट्सएप का प्रयोग करने की बात स्वीकारी। इनमें 5% लोगों ने सिर्फ फेसबुक, 10% ने सिर्फ यूट्यूब तथा 5% ने सिर्फ व्हाट्सएप का इस्तेमाल किया। वहीं 5% लोगों ने फेसबुक और यूट्यूब, 42.5% ने फेसबुक और व्हाट्सएप, 10% ने फेसबुक और यूट्युब के साथ व्हाट्सएप तथा 21.25% ने फेसबुक, यूट्यूब, इंस्टाग्राम व व्हाट्सएप का प्रयोग किया। इसके अलावा एक उत्तरदाता ने अन्य का विकल्प चुनते हुए कहा कि उनके द्वारा तनाव के कारण इनमें से किसी प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल नहीं किया जाता है किंतु खाली समय में इन सभी प्लेटफॉर्म्स का प्रयोग वे करते हैं।

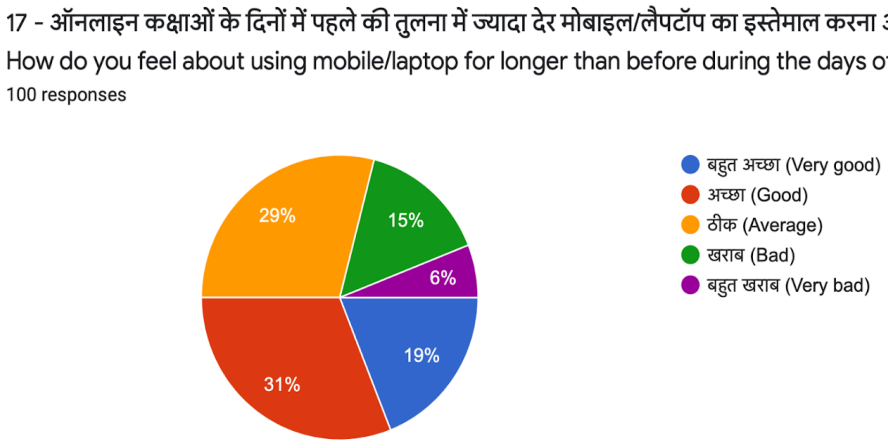

चित्र - 4.17

विश्लेषण - 19% उत्तरदाताओं ने कहा कि ऑनलाइन कक्षाओं के दिनों में पहले की तुलना में ज्यादा देर मोबाइल/लैपटॉप का इस्तेमाल करना उन्हें बहुत अच्छा लगा। 31% लोगों को अच्छा लगा व 29% लोगों को ठीक लगा। 15% लोगों को ये खराब और 6% लोगों को बहुत खराब लगा। ऐसे लोग जिन्हें ज्यादा देर मोबाइल/लैपटॉप का इस्तेमाल करना बहुत अच्छा लगा उनमें 15% अंग्रेजी माध्यम व 4% लोग हिंदी माध्यम स्कूलों के थे। इसी तरह अच्छा लगने का विकल्प चुनने वालों में 15% हिंदी माध्यम और 16% अध्यापक अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों से थे। ठीक लगने के विकल्प का चुनाव करने वालों में 17% हिंदी माध्यम व 12% उत्तरदाता अंग्रेजी माध्यम स्कूलों से संबंधित थे। खराब लगने के विकल्प का चयन करने वालों में 10% हिंदी माध्यम और 5% अंग्रेजी माध्यम स्कूलों के शिक्षक थे, वहीं बहुत खराब लगने के विकल्प का चुनाव 4% हिंदी माध्यम और 2% अंग्रेजी माध्यम स्कूलों के शिक्षकों द्वारा किया गया।

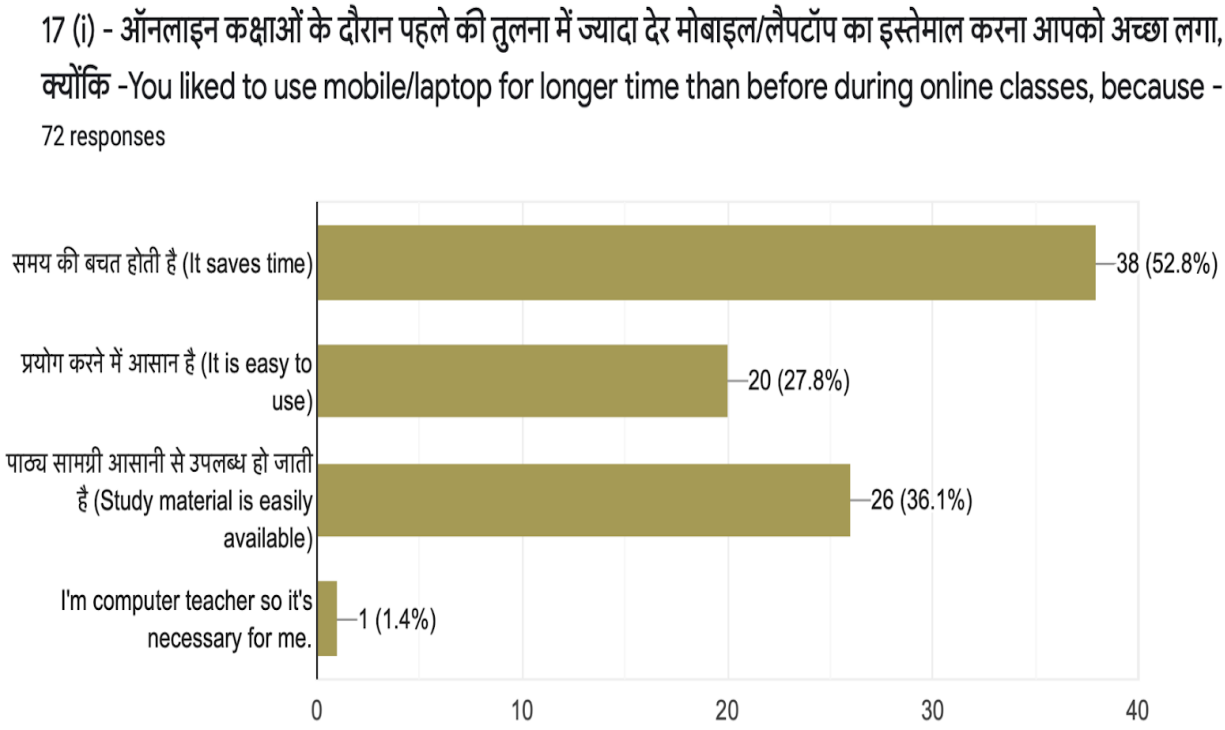

चित्र - 4.17(i)

विश्लेषण - सर्वेक्षण में सहभागिता करने वाले 72 उत्तरदाताओं ने इस प्रश्न का जवाब दिया। 52.8% अध्यापकों ने कहा कि ऑनलाइन कक्षाओं के दौरान पहले की तुलना में ज्यादा देर मोबाइल/लैपटॉप का इस्तेमाल करना इसलिए अच्छा लगा क्योंकि इससे समय की बचत होती है। 27.8% लोगों ने कहा कि प्रयोग करने में आसान होने के कारण अच्छा लगा, वहीं 36.1% लोगों को इसलिए अच्छा लगा क्योंकि इसकी सहायता से पाठ्य सामग्री आसानी से उपलब्ध हो जाती है। इनमें 43.05% लोगों को सिर्फ समय की बचत होने के कारण, 20.83% को सिर्फ प्रयोग करने में आसान होने के कारण, 26.38% को सिर्फ पाठ्य सामग्री आसानी से उपलब्ध हो जाने के कारण, 2.85% को समय की बचत व पाठ्य सामग्री आसानी से उपलब्ध हो जाने के कारण तथा 6.94% अध्यापकों को उपर्युक्त तीनों कारणों से मोबाइल/लैपटॉप का अधिक इस्तेमाल करना अच्छा लगा।

17 (ii) ऑनलाइन कक्षाओं के दौरान पहले की तुलना में ज्यादा देर मोबाइल/लैपटॉप का इस्तेमाल करना आपको खराब लगा, क्योंकि -You did not like to use mobile/laptop for l...er time than before during online classes, because -
55 responses

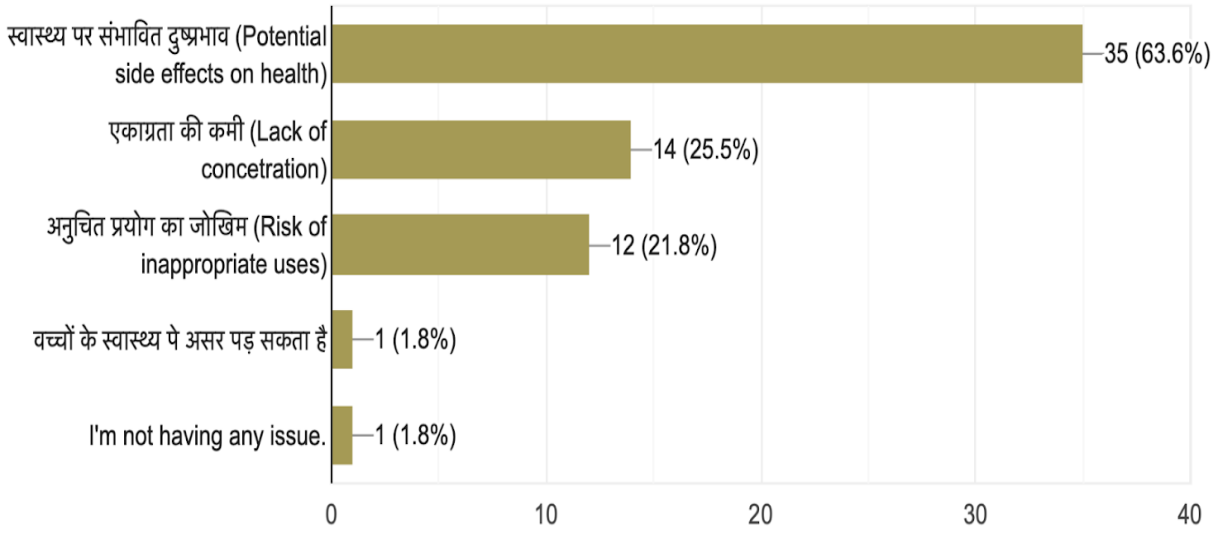

चित्र - 4.17(ii)

विश्लेषण - इस प्रश्न का उत्तर 55 अध्यापकों द्वारा दिया गया। 63.6% शिक्षकों ने कहा कि उन्हें ऑनलाइन कक्षाओं के दौरान पहले की तुलना में ज्यादा देर मोबाइल/लैपटॉप का इस्तेमाल करना इसलिए खराब लगा, क्योंकि इससे स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव पड़ने का खतरा रहता है। 25.5% लोगों ने एकाग्रता की कमी व 21.8% ने अनुचित प्रयोग का जोखिम होने के कारण मोबाइल/लैपटॉप के अधिक इस्तेमाल को खराब माना। इनमें 56.36% अध्यापकों को सिर्फ स्वास्थ्य पर पड़ने वाले संभावित दुष्प्रभाव के कारण, 18.18% को सिर्फ एकाग्रता में आने वाली कमी के कारण तथा 14.54% को सिर्फ अनुचित प्रयोग का जोखिम होने के कारण मोबाइल/लैपटॉप का अधिक प्रयोग खराब लगा। वहीं 7.27% उत्तरदाता ऐसे भी थे, जिन्हें उपर्युक्त तीनों कारणों से मोबाइल/लैपटॉप का अधिक प्रयोग पसंद नहीं आया। दो उत्तरदाताओं ने अन्य का विकल्प चुना, जिनमें से एक ने बच्चों के स्वास्थ्य पर असर पड़ने की बात कही व एक ने कोई समस्या न होने की बात कही।

18 - ऑनलाइन कक्षाओं के दौरान पहले की तुलना में ज्यादा देर मोबाइल/लैपटॉप का इस्तेमाल करने से आप पर कोई दुष्प्रभाव हुआ ?Did you have any side effects due to using mo...er than before during the days of online classes?

100 responses

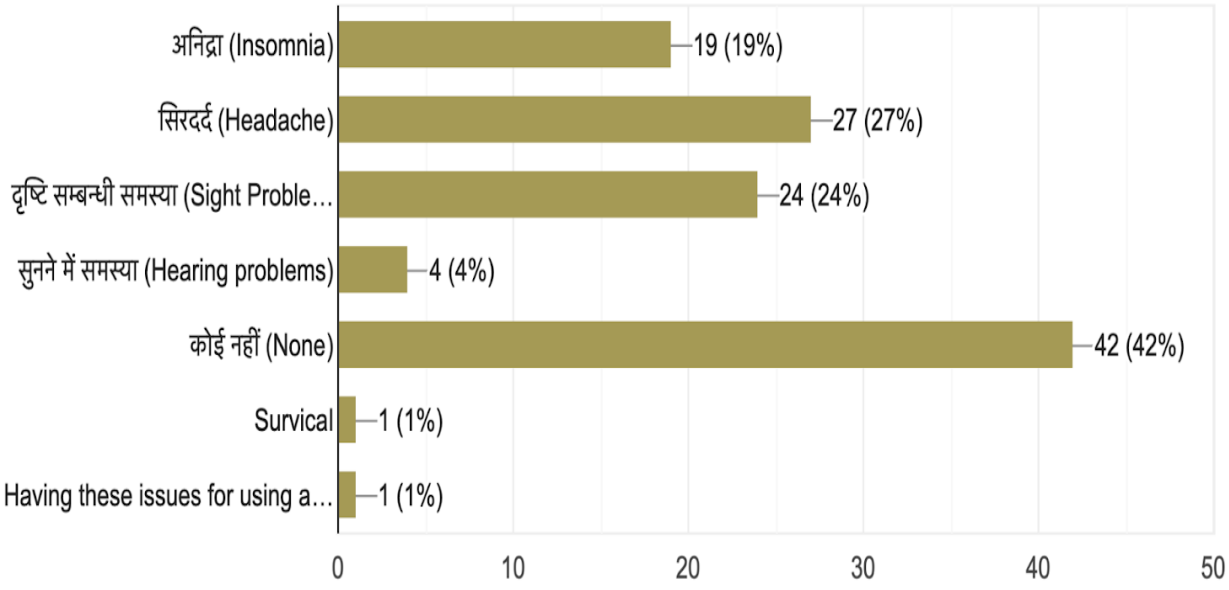

चित्र - 4.18

विश्लेषण - ऑनलाइन कक्षाओं के दौरान पहले की तुलना में ज्यादा देर मोबाइल/लैपटॉप का इस्तेमाल करने से 19% लोगों को अनिद्रा, 27% को सिरदर्द, 24% को दृष्टि संबंधी समस्या, 4% को सुनने में समस्या जैसी परेशानियाँ हुईं। 42% उत्तरदाता ऐसे भी थे, जिन्हें कोई समस्या नहीं हुई। इनमें 14% लोगों को सिर्फ अनिद्रा, 16% को सिर्फ सिरदर्द, 16% को सिर्फ दृष्टि संबंधी समस्या, 1% को सिर्फ सुनने में समस्या, 5% लोगों को सिरदर्द व दृष्टि संबंधी समस्या, 3% को अनिद्रा व सिरदर्द तथा 1% को सिरदर्द व दृष्टि संबंधी समस्या के साथ सुनने में समस्या का सामना भी करना पड़ा। वहीं एक उत्तरदाता को उपर्युक्त चारों विकल्पों के अलावा सर्वाइकल की समस्या भी हुई। एक अन्य उत्तरदाता ने उपर्युक्त चारों विकल्पों को चुनते हुए लिखा कि किसी भी स्मार्ट डिवाइस का अधिक इस्तेमाल करने से ये समस्याएँ होती हैं।

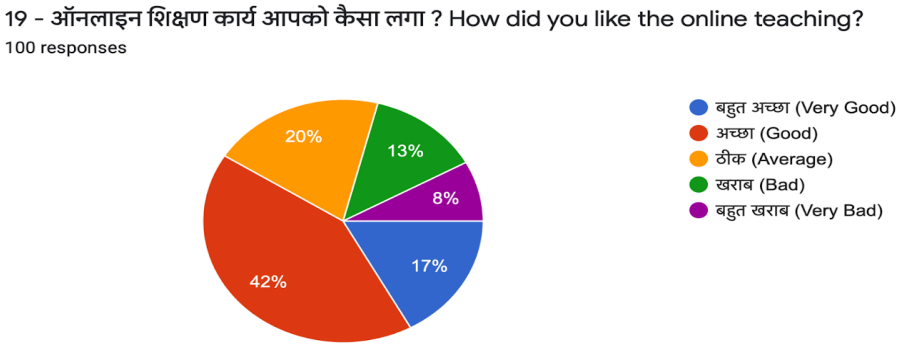

चित्र - 4.19

विश्लेषण - सर्वेक्षण में शामिल 17% लोगों को ऑनलाइन शिक्षण कार्य बहुत अच्छा लगा। वहीं 42% अध्यापकों को ऑनलाइन शिक्षण कार्य अच्छा, 20% को ठीक, 13% को खराब तथा 8% को यह बहुत खराब लगा। ऐसे शिक्षक जिन्हें ऑनलाइन शिक्षण कार्य बहुत अच्छा लगा उनमें 14% अंग्रेजी माध्यम स्कूलों व 3% हिंदी माध्यम स्कूलों से थे। इसी प्रकार अच्छा लगने का विकल्प चुनने वालों में 19% अंग्रेजी माध्यम स्कूलों व 23% हिंदी माध्यम विद्यालयों के उत्तरदाता थे। ठीक लगने के विकल्प का चुनाव करने वाले अध्यापकों में 10% अंग्रेजी माध्यम व 10% हिंदी माध्यम के स्कूलों से संबंधित थे। खराब लगने के विकल्प का चयन करने वालों में 5% अंग्रेजी माध्यम व 8% हिंदी माध्यम तथा बहुत खराब लगने का विकल्प चुनने वालों में 2% अंग्रेजी माध्यम व 6% हिंदी माध्यम स्कूलों के अध्यापक थे।

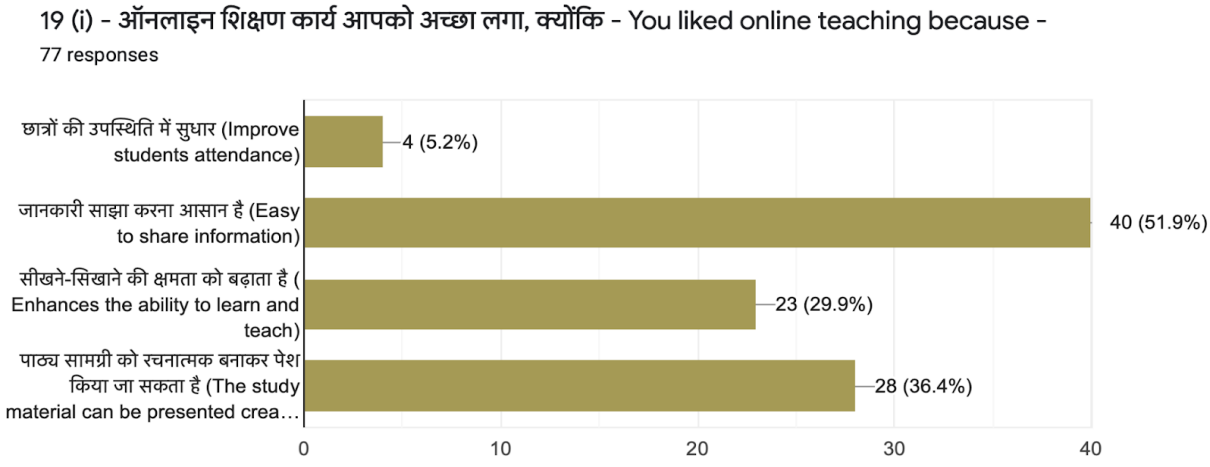

चित्र - 4.19(i)

विश्लेषण - 77 लोगों द्वारा इस प्रश्न का जवाब दिया गया। 5.2% लोगों ने कहा कि उन्हें ऑनलाइन शिक्षण कार्य इसलिए अच्छा लगा क्योंकि इससे

छात्रों की उपस्थिति में सुधार आया है। 51.9% लोगों ने कहा कि जानकारी साझा करना आसान होने के कारण अच्छा लगा। 29.9% लोगों के अनुसार यह सीखने-सिखाने की क्षमता बढ़ाता है, वहीं 36.4% अध्यापकों को ऑनलाइन शिक्षण अच्छा लगा क्योंकि इसमें पाठ्य सामग्री को रचनात्मक बनाकर पेश किया जा सकता है। इनमें 2.59% लोगों को ऑनलाइन शिक्षण कार्य अच्छा लगने का कारण सिर्फ छात्रों की उपस्थिति में सुधार था। 40.25% अध्यापकों को सिर्फ जानकारी साझा करना आसान होने के कारण, 20.77% को सिर्फ सीखने-सिखाने की क्षमता बढ़ाने के कारण, 24.67% को सिर्फ पाठ्य सामग्री को रचनात्मक बनाकर पेश किया जा सकने के कारण, 2.59% को जानकारी साझा करना आसान होने के कारण व पाठ्य सामग्री को रचनात्मक बनाकर पेश किया जा सकने के कारण तथा 6.49% को जानकारी साझा करना आसान होने व सीखने-सिखाने की क्षमता बढ़ाने के कारण के साथ पाठ्य सामग्री को रचनात्मक बनाकर पेश किया जा सकने के कारण ऑनलाइन शिक्षण कार्य अच्छा लगा। वहीं 2.59% अध्यापकों को उपर्युक्त सभी कारणों से ऑनलाइन शिक्षण कार्य अच्छा लगा।

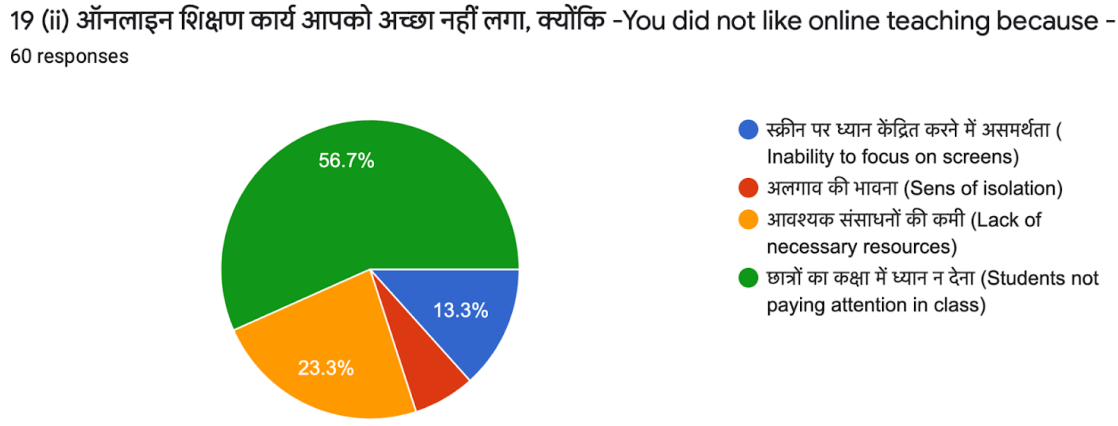

चित्र - 4.19(ii)

विश्लेषण - सर्वेक्षण में भाग लेने वाले 60 उत्तरदाताओं ने इस प्रश्न का उत्तर दिया। इनमें 58.33% लोग हिंदी माध्यम व 41.66% लोग अंग्रेजी माध्यम स्कूलों से थे। 13.3% अध्यापकों को ऑनलाइन शिक्षण कार्य अच्छा नहीं लगा क्योंकि इसमें स्क्रीन पर ध्यान केंद्रित करने में समस्या होती है। 6.7% लोगों को ऑनलाइन शिक्षण इसलिए पसंद नहीं आया क्योंकि इससे लोगों में अलगाव की भावना बढ़ती है। 23.3% लोगों को आवश्यक संसाधनों की कमी के कारण व 56.7% को छात्रों द्वारा कक्षा में ध्यान न दिए जाने के

कारण ऑनलाइन शिक्षण अच्छा नहीं लगा। ऐसे लोग जिन्हें स्क्रीन पर ध्यान केंद्रित करने में समस्या होने के कारण ऑनलाइन शिक्षण अच्छा नहीं लगा, उनमें 3.33% अध्यापक हिंदी माध्यम व 10% अंग्रेजी माध्यम स्कूलों से थे। अलगाव की भावना का विकल्प चुनने वालों में 3.33% हिंदी माध्यम व 3.33% अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों के शिक्षक थे। आवश्यक संसाधनों की कमी वाले विकल्प का चुनाव करने वालों में 18.33% शिक्षक हिंदी माध्यम स्कूलों व 5% अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों से संबंधित थे। ऐसे अध्यापक जिन्होंने छात्रों का कक्षा में ध्यान न देने का विकल्प चुना, उनमें 33.33% हिंदी माध्यम व 23.33% अंग्रेजी माध्यम स्कूलों से थे।

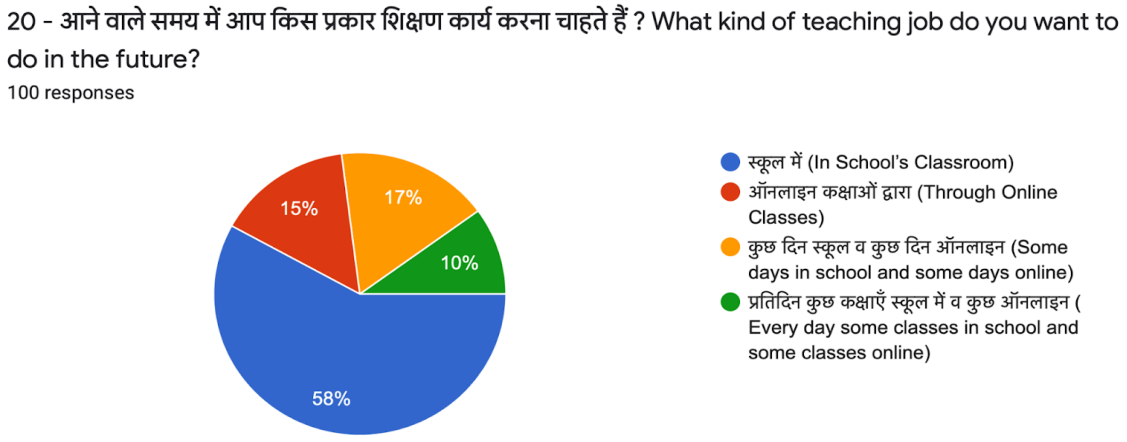

चित्र - 4.20

विश्लेषण - 58% उत्तरदाताओं ने कहा कि आने वाले समय में वे स्कूल में ही शिक्षण कार्य करना चाहेंगे। 15% लोगों ने ऑनलाइन कक्षाओं द्वारा तथा 17% ने कुछ दिन स्कूल में व कुछ दिन ऑनलाइन कक्षाओं द्वारा शिक्षण कार्य करने की इच्छा व्यक्त की। वहीं 10% ने प्रतिदिन कुछ कक्षाएँ स्कूल में व कुछ कक्षाएँ ऑनलाइन किए जाने की बात कही। आने वाले समय में स्कूल में ही शिक्षण कार्य करने की इच्छा जताने वालों में 31% हिंदी माध्यम व 27% अंग्रेजी माध्यम स्कूलों के शिक्षक थे। भविष्य में ऑनलाइन कक्षाओं द्वारा पढ़ाने का विकल्प चुनने वाले अध्यापकों में 3% हिंदी माध्यम व 12% अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों से थे। कुछ दिन स्कूल में व कुछ दिन ऑनलाइन कक्षाओं द्वारा शिक्षण कार्य करने के विकल्प का चुनाव करने वाले शिक्षकों में 10% हिंदी माध्यम व 7% अंग्रेजी माध्यम स्कूलों से संबंधित थे। ऐसे अध्यापक जिन्होंने प्रतिदिन कुछ कक्षाएँ स्कूल में व कुछ कक्षाएँ ऑनलाइन

किए जाने की इच्छा जताई, उनमें 6% हिंदी माध्यम व 4% अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों के थे।

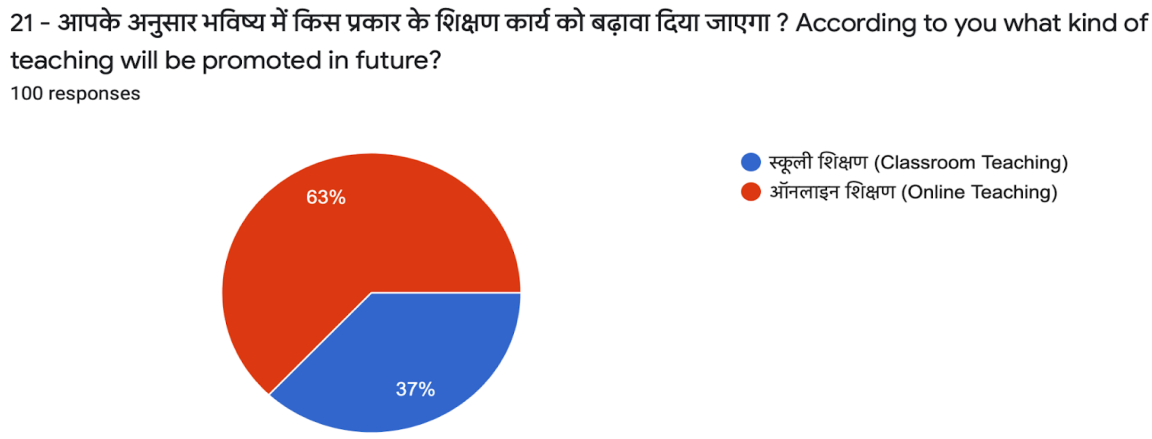

चित्र - 4.21

विश्लेषण - 63% अध्यापकों ने माना कि भविष्य में ऑनलाइन शिक्षण को बढ़ावा दिया जाएगा, वहीं 37% ने स्कूली शिक्षण को ही बढ़ावा दिए जाने की बात कही। ऐसे लोग जिनके अनुसार आने वाले समय में ऑनलाइन शिक्षण को बढ़ावा दिया जाएगा, उनमें 34% अंग्रेजी माध्यम व 29% हिंदी माध्यम विद्यालयों के शिक्षक थे। भविष्य में स्कूली शिक्षण को ही बढ़ावा दिए जाने का विकल्प चुनने वाले अध्यापकों में 16% अंग्रेजी माध्यम विद्यालयों व 21% हिंदी माध्यम स्कूलों से संबंधित थे।

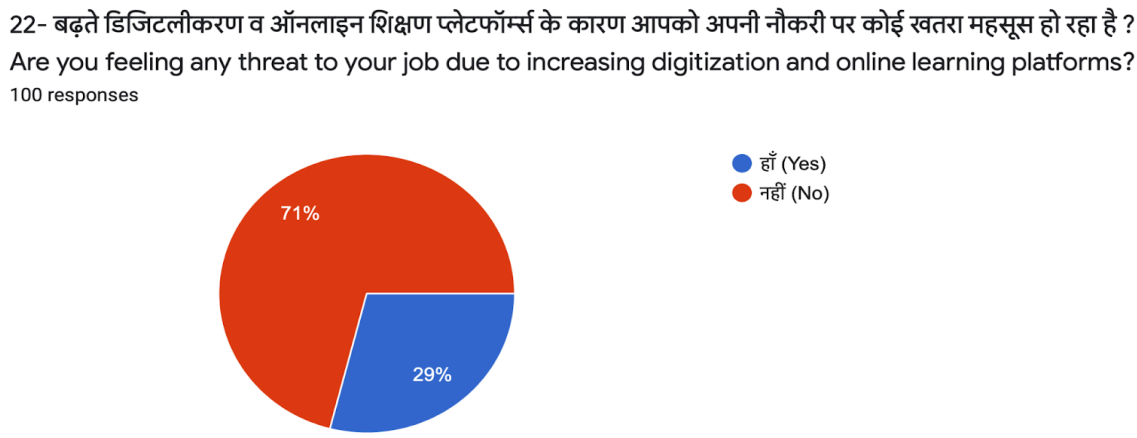

चित्र - 4.22

विश्लेषण - सर्वेक्षण में भाग लेने वाले अध्यापकों में से 71% ने कहा कि बढ़ते डिजिटलीकरण व ऑनलाइन शिक्षण प्लेटफॉर्म्स के कारण उन्हें अपनी नौकरी पर कोई खतरा महसूस नहीं हो रहा है। वहीं 29% लोगों ने अपनी

नौकरी पर खतरा महसूस होने की बात स्वीकार की। बढ़ते डिजिटलीकरण व ऑनलाइन शिक्षण प्लेटफॉर्म्स के कारण अपनी नौकरी पर कोई खतरा महसूस न करने वालों में 34% अंग्रेजी माध्यम व 29% हिंदी माध्यम विद्यालयों के अध्यापक थे। वहीं अपनी नौकरी पर खतरा महसूस करने वाले शिक्षकों में 16% अंग्रेजी माध्यम व 21% हिंदी माध्यम स्कूलों से संबंधित थे।

निष्कर्ष - कोरोना महामारी के कारण शिक्षा का क्षेत्र भी काफी प्रभावित हुआ व इसके कारण ऑनलाइन शिक्षण को बढ़ावा भी मिला। इस दौरान लगभग सभी स्कूलों में सोशल मीडिया व वीडियो बेस्ड सोशल मीडिया जैसे - गूगल मीट, जूम व माइक्रोसॉफ्ट टीम्स आदि के माध्यम से शिक्षण कार्य किया गया। विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स ने शिक्षकों व विद्यार्थियों के बीच महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। इन प्लेटफॉर्म्स की सहायता से कक्षाएँ चलीं, पाठ्य सामग्री तैयार की गई, परीक्षाएँ ली गईं तथा प्रबंधन का कार्य भी किया गया। इसके अलावा अध्यापकों द्वारा अपने तनाव को कम करने के लिए भी सोशल मीडिया का उपयोग किया गया। कुछ अध्यापकों को ऑनलाइन शिक्षण, सोशल मीडिया और इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का प्रयोग अच्छा लगा तो कुछ लोगों को खराब भी लगा। कुछ लोगों को इनके प्रयोग में समस्याओं का सामना भी करना पड़ा। कई शिक्षकों द्वारा ऑनलाइन शिक्षण के लिए इस्तेमाल किए जा रहे एप्लीकेशन्स को सीखने के लिए भी सोशल मीडिया का सहारा लिया गया।

अध्याय 5 :
निष्कर्ष एवं सुझाव

इस अध्याय में हम इस शोध के प्रमुख प्रश्नों व उन प्रश्नों से संबंधित उत्तरों से रूबरू होंगे। प्रस्तुत शोध के माध्यम से शिक्षण कार्य में सोशल मीडिया की उपयोगिता, शिक्षकों पर सोशल मीडिया का प्रभाव, शिक्षकों के मध्य सोशल मीडिया की लोकप्रियता तथा पठन-पाठन में सोशल मीडिया के प्रयोग से होने वाले लाभ व हानि का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

इस अध्याय में शोध के तीनों महत्वपूर्ण प्रश्नों के निष्कर्ष को प्रस्तुत किया जाएगा।

शोध का प्रथम प्रश्न था, महामारी के दौरान शिक्षण कार्य में किस तरह के बदलाव आए हैं ?

शोध के लिए संकलित आँकड़ों से स्पष्ट है कि महामारी के दौरान स्कूली कक्षाएँ बंद रहीं तथा शिक्षण कार्य डिजिटल शिक्षण प्रणाली द्वारा किया गया। इसके लिए गूगल मीट, जूम, माइक्रोसॉफ्ट टीम्स तथा व्हाट्सएप आदि का सहारा लिया गया। अलग-अलग स्कूलों में अलग प्लेटफॉर्म्स का उपयोग किया गया व स्कूलों में चलने वाली ऑनलाइन कक्षाओं का समय भी स्कूलों के अनुसार अलग-अलग था। सर्वेक्षण में शामिल 55% लोगों द्वारा बताया गया कि उन्होंने प्रतिदिन 3-4 घंटे ऑनलाइन शिक्षण कार्य किया। अत: स्कूली कक्षाओं से ऑनलाइन कक्षाओं पर आना तो अध्यापकों के लिए एक बड़ा बदलाव था ही, वहीं इसके कारण उनकी दिनचर्या भी परिवर्तित हुई।

इस दौरान व्हाट्सएप, टेलीग्राम व जीमेल आदि की सहायता से शिक्षण कार्य का प्रबंधन किया गया। इसके लिए सबसे अधिक 93% लोगों द्वारा व्हाट्सएप का इस्तेमाल किया गया। इस दौरान अध्यापकों द्वारा कक्षाओं के अलावा, पाठ्य सामग्री तथा प्रश्न पत्र तैयार करने के लिए व परीक्षा लेने के लिए भी डिजिटल उपकरणों व सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स का उपयोग किया गया।

शोध का द्वितीय प्रश्न था, अध्यापन में सोशल मीडिया के प्रयोग को लेकर अध्यापकों के क्या विचार हैं ?

महामारी के दौरान शिक्षण कार्य स्कूलों के भवनों से निकलकर मोबाइल व लैपटॉप पर आ गया। विभिन्न सोशल मीडिया व वीडियो वेस्ड सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर कक्षाएँ शुरू हुईं। इस बीच वे अध्यापक जो पहले से डिजिटल उपकरणों से परिचित थे, उन्हें तो कोई समस्या नहीं हुई, किंतु ऐसे अध्यापकों को समस्याएँ हुईं जो इन उपकरणों व प्लेटफॉर्म्स से परिचित नहीं थे और इनका इस्तेमाल करना नहीं जानते थे।

सर्वेक्षण में भाग लेने वाले 67% अध्यापकों ने कहा कि ऑनलाइन कक्षाओं के दौरान उन्हें डिजिटल डिवाइस की कमी, खराब इंटरनेट, डिजिटल

प्लेटफॉर्म्स का प्रयोग करते समय भाषाई समस्या तथा संवाद स्थापित करने में समस्या आदि असुविधाओं का सामना करना पड़ा। इसके चलते शिक्षण कार्य भी प्रभावित हुआ। चूँकि 73.7% शिक्षकों द्वारा ऑनलाइन शिक्षण के लिए इस्तेमाल किए गए प्लेटफॉर्म का लॉकडाउन से पहले प्रयोग नहीं किया गया था, इस कारण पहले इनका प्रयोग सीखना पड़ा। इसके लिए कुछ अध्यापकों द्वारा गूगल व यूट्यूब का सहारा लिया गया तो कुछ को संस्थानों द्वारा ट्रेनिंग भी दी गई।

59% उत्तरदाताओं ने कहा कि ऑनलाइन शिक्षण के दौरान शिक्षण कार्य के प्रबंधन में समस्याओं का सामना करना पड़ा। इस दौरान अध्यापकों को छात्रों की उपस्थिति दर्ज करने में, गृहकार्य देने व जाँचने में तथा परीक्षा लेने में परेशानियाँ हुईं। शिक्षकों द्वारा गूगल व यूट्यूब की सहायता से पाठ्य सामग्री व प्रश्न पत्र भी तैयार किए गए।

ऑनलाइन कक्षाओं के दिनों में पहले की तुलना में ज्यादा देर मोबाइल/लैपटॉप का इस्तेमाल करना 19% शिक्षकों को बहुत अच्छा, 31% को अच्छा तथा 29% को यह ठीक लगा, वहीं 15% को खराब व 6% को बहुत खराब लगा। ऑनलाइन कक्षाओं के दिनों में पहले की तुलना में ज्यादा देर मोबाइल/लैपटॉप का इस्तेमाल करना अच्छा लगने के कारणों में समय की बचत होना, प्रयोग करने में आसान होना व पाठ्य सामग्री आसानी से उपलब्ध हो जाना बताए गए। ऑनलाइन कक्षाओं के दिनों में पहले की तुलना में ज्यादा देर मोबाइल/लैपटॉप का इस्तेमाल करना खराब लगने के कारणों में स्वास्थ्य पर संभावित दुष्प्रभाव का खतरा, एकाग्रता की कमी हो जाना तथा अनुचित प्रयोग का जोखिम रहना बताए गए।

ऑनलाइन शिक्षण 17% अध्यापकों को बहुत अच्छा, 42% को अच्छा व 20% को ठीक लगा, वहीं 13% को खराब और 8% को यह बहुत खराब लगा। ऑनलाइन शिक्षण कार्य अच्छा लगने के कारणों में छात्रों की उपस्थिति में सुधार होना, जानकारी साझा करना आसान होना, सीखने-सिखाने की क्षमता में बढ़ोत्तरी होना तथा पाठ्य सामग्री को रचनात्मक बनाकर पेश किया जा सकना थे। वहीं ऑनलाइन शिक्षण कार्य अच्छा न लगने के कारणों में स्क्रीन पर ध्यान केंद्रित करने में परेशानी होना, अलगाव की भावना उत्पन्न होना, आवश्यक संसाधनों की कमी तथा छात्रों का कक्षा में ध्यान न देना थे।

58% अध्यापकों ने कहा कि भविष्य में वह स्कूलों में ही शिक्षण कार्य करना चाहते हैं। 15% लोगों ने ऑनलाइन कक्षाओं का, 17% ने कुछ दिन स्कूल व कुछ दिन ऑनलाइन का तथा 10% ने प्रतिदिन कुछ कक्षाएँ स्कूल में व कुछ

ऑनलाइन का विकल्प चुना। 63% शिक्षकों का मानना है कि आने वाले समय में ऑनलाइन शिक्षण को बढ़ावा दिया जाएगा। 29% ने कहा कि बढ़ते डिजिटलीकरण व ऑनलाइन शिक्षण प्लेटफॉर्म्स के कारण उन्हें अपनी नौकरी पर खतरा महसूस हो रहा है।

शोध का तृतीय प्रश्न था, शिक्षकों को सोशल मीडिया ने किस प्रकार प्रभावित किया है ?

ऑनलाइन शिक्षण के कारण अध्यापकों को इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों तथा सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स का इस्तेमाल करना पड़ा। इसके चलते जो अध्यापक पहले से इन उपकरणों व प्लेटफॉर्म्स का प्रयोग करते थे, उनका स्क्रीन टाइम बढ़ा। वहीं जो लोग पहले इनका उपयोग नहीं करते थे, अब उन्हें भी इनसे जुड़ना पड़ा। ऑनलाइन शिक्षण के दौरान शिक्षण कार्य करने में व इसके प्रबंधन में भी समस्याएँ हुईं।

77% शिक्षकों ने माना कि लॉकडाउन के दौरान शिक्षण कार्य के अलावा अपने तनाव को कम करने के लिए उन्होंने हर रोज़ किसी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का प्रयोग किया। सबसे अधिक लोगों द्वारा फेसबुक और व्हाट्सएप का इस्तेमाल किया गया, वहीं यूट्यूब व इंस्टाग्राम का इस्तेमाल भी लोगों ने किया।

ऑनलाइन कक्षाओं के दौरान पहले की तुलना में ज्यादा देर मोबाइल/लैपटॉप का इस्तेमाल करने से कुछ अध्यापकों पर दुष्प्रभाव भी पड़े। उन्हें अनिद्रा, सिरदर्द, दृष्टि सम्बन्धी समस्या तथा सुनने में समस्या व सर्वाइकल की परेशानियाँ हुईं। 42% लोगों को इस कारण कोई समस्या नहीं हुई।

निष्कर्ष - शोध के लिए संकलित आँकड़ों से ज्ञात होता है कि महामारी के दौरान सोशल मीडिया व वीडिया वेस्ड सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स की सहायता से पठन-पाठन का कार्य हुआ। इस दौरान शिक्षकों की दिनचर्या में भी परिवर्तन आए। कक्षाएँ लेने, पाठ्य सामग्री व प्रश्न पत्र तैयार करने तथा कार्य के प्रबंधन के लिए भी सोशल मीडिया का प्रयोग किया गया। अध्यापकों ने अपने तनाव को कम करने के लिए भी सोशल मीडिया का इस्तेमाल किया। इसके अलावा कुछ अध्यापकों को अधिक मोबाइल/लैपटॉप का इस्तेमाल करने से सिरदर्द, दृष्टि सम्बन्धी समस्या, अनिद्रा तथा सुनने में समस्या व सर्वाइकल की दिक्कत भी हुई।

कुछ अध्यापकों को सोशल मीडिया व इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का इस्तेमाल अच्छा लगा तो कुछ को खराब भी लगा। अध्यापकों द्वारा बताया गया कि ऑनलाइन शिक्षण के दौरान छात्रों की उपस्थिति दर्ज करने में, स्क्रीन पर

ध्यान केंद्रित करने में, आवश्यक संसाधनों की कमी के कारण, गृहकार्य देने व जाँचने में तथा परीक्षा लेने में समस्या होती है। इसके अलावा छात्रों का कक्षा में ध्यान न रहना भी ऑनलाइन शिक्षण की एक समस्या है। वहीं इसके कारण विद्यार्थियों की उपस्थिति में सुधार आया है, समय की बचत होती है, जानकारी साझा करना आसान हो गया है, प्रयोग करने में आसान है था सीखने-सिखाने की क्षमता में बढ़ोत्तरी हुई है। इसके अलावा पाठ्य सामग्री आसानी से उपलब्ध हो जाना व इसे रचनात्मक बनाकर पेश किया जा सकना आदि ऑनलाइन शिक्षण के लाभ हैं। सर्वेक्षण में शामिल आधे से अधिक अध्यापकों को ऑनलाइन शिक्षण अच्छा या बहुत अच्छा लगा। 63% उत्तरदाताओं ने माना कि आने वाले समय में डिजिटल शिक्षण को बढ़ावा दिया जाएगा, किंतु 58% लोगों ने भविष्य में स्कूलों में जाकर ही शिक्षण कार्य करने की इच्छा व्यक्त की।

सुझाव - प्राप्त आँकड़ों के अनुसार ज्यादातर शिक्षक लॉकडाउन से पहले इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों व ऑनलाइन शिक्षण के लिए प्रयोग किए गए सोशल मीडिया व वीडियो वेस्ड सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स से परिचित नहीं थे, जिस कारण उन्हें ऑनलाइन शिक्षण में समस्या हुई। अत: भविष्य के लिए शिक्षकों को इन उपकरणों व प्लेटफॉर्म्स के बारे में जानकारी दी जाए व इनका इस्तेमाल सिखाया जाए। खराब इंटरनेट व डिजिटल डिवाइसेस की कमी के कारण भी अध्यापकों को परेशानी हुई है। इसके लिए इंटरनेट कनेक्टिविटी दुरुस्त करवाने व डिजिटल डिवाइसेस की कमी को दूर करने की आवश्यकता है। ऑनलाइन शिक्षण अध्यापकों को पसंद तो आया, परंतु स्क्रीन टाइम बढ़ जाने व अन्य कई कारणों से उन्हें असुविधाएँ भी हुईं। चूँकि ऑनलाइन शिक्षण से कई लाभ हैं, अत: भविष्य में इसे पारम्परिक स्कूली शिक्षण के साथ मिलाकर प्रयोग में लाया जा सकता है। इससे अध्यापकों व विद्यार्थियों को बहुत अधिक देर तक डिजिटल स्क्रीन पर आँखें नहीं गढ़ानीं होंगी। अत: भविष्य में शिक्षण के लिए कुछ दिन स्कूल व कुछ दिन ऑनलाइन या प्रतिदिन कुछ कक्षाएँ स्कूल में व कुछ ऑनलाइन आदि विकल्पों पर विचार किया जा सकता है।

संदर्भ सूची

1) *India Social Media Statistics 2021*. (2021, December 14). The Global Statistics. https://www.theglobalstatistics.com/india-social-media-statistics

2) *Teens and social media use: What's the impact?*. (2019, December 21). Mayo Clinic. https://www.mayoclinic.org/healthy-lifestyle/tween-and-teen-health/in-depth/teens-and-social-media-use/art-20474437

3) *Elements of education*. (2016). Vikas publishing house. https://rgu.ac.in/wp-content/uploads/2021/02/Download_624.pdf

4) Jauhari, D. (2016). Education: concept, definition and scope. *In Contemporary India and education* (pp. 1-16). Uttarakhand Open University. https://elearning.uou.ac.in/pluginfile.php/196/mod_resource/content/1/BEDSEDE-A2.pdf

5) Ibid.

6) *Elements of education*. (2016). Vikas publishing house. https://rgu.ac.in/wp-content/uploads/2021/02/Download_624.pdf

7) Pradhan, P. (2019, October 3). *Shikshana ka arth aur paribhasha*. Hindivaani. https://hindivaani.com/शिक्षण-का-अर्थ-और-परिभाषा/

8) Waghmare, P. (2021, October 28). *Levels of teaching: Memory level, understanding level & reflective level*. Testbook. https://testbook.com/learn/levels-of-teaching/

9) *Contemporary India and education*. (n.d.). (n.p.). http://www.mgahv.in/Pdf/Dist/gen/shiksha_0003_18_03_16.Pdf

10) *History of education policy in India.* (n.d.). e-pg pathshala. http://epgp.inflibnet.ac.in/epgpdata/uploads/epgp_content/S000033SO/P000300/M013097/ET/145258955205ET.pdf

11) *National Policy on Education (1986)*. (n.d.). Amu. https://old.amu.ac.in/emp/studym/100003933.pdf

12) *Timeline - Formulation of National Education Policy*. (n.d.). Education.

https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/nep_timeline.pdf
13) Ministry of Education. (2020, September 14). *Highlights of New Education Policy-2020* [Press release]. https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1654058
14) Kumar, K.J. (2018). *Mass Communication in India* (4th Rev. ed.). Jaico.
15) Ibid.
16) Ganti, T. (2004). *Bollywood: A Guidebook to Popular Hindi Cinema* (1st ed.). Routledge.
17) Kumar, K.J. (2018). *Mass Communication in India* (4th Rev. ed.). Jaico.
18) Merriam-Webster. (n.d.). Social media. *In Merriam-Webster.com dictionary*. Retrieved January 20, 2022, from https://www.merriam-webster.com/dictionary/social%20media
19) Dictionary.cambridge. (n.d.). Social media. *In dictionary.cambridge.org dictionary*. Retrieved January 20, 2022, from https://dictionary.cambridge.org/dictionary/english/social-media
20) *India Social Media Statistics 2022 | Mobile & Internet Statistics*. (2022, February 26). Theglobalstatistics. https://www.theglobalstatistics.com/india-social-media-statistics/
21) Sharma, R. (2021, June 30). *World social media Day 2021: History and significance*. Jagranjosh. https://www.jagranjosh.com/current-affairs/world-social-media-day-2021-history-and-significance-1625038111-1
22) *Video-based social media*. (n.d.). Kentquakers. https://kentquakers.org.uk/video-based-social-media/
23) Gismondi, A. (2021, January 5). *Top 27 Social Media Apps for Your 2021 Strategy.* kubbco. https://www.kubbco.com/top-27-social-media-apps-for-your-2021-strategy/
24) *The Role of the Teacher in the Digital Age*. (2018, February 7). Euruni. https://www.euruni.edu/blog/future-prof-online-learning/

25) Pathak, R., & Sheorey, P. (2020). Impact of Digital Technology on Teaching-Learning. *Journal of critical reviews, 7*(11). http://www.jcreview.com/fulltext/197-1595749755.pdf
26) U.S. department of education. (2017). *Reimagining the Role of Technology in Education: 2017 National Education Technology Plan Update*. Tech.ed.gov. https://tech.ed.gov/files/2017/01/NETP17.pdf
27) Raja, R., & Nagasubramani, P. C. (2018). Impact of modern technology in education. *Journal of Applied and Advanced Research, 3*(Suppl.1), S33-S35. https://updatepublishing.com/journal/index.php/jaar/article/view/6790/pdf
28) Uzunboylu, H., & Uygarer, R. (2017). An Investigation of the Digital Teaching Book Compared to Traditional Books in Distance Education of Teacher Education Programs. *EURASIA Journal of Mathematics Science and Technology Education, 13*(8), 5365-5377. https://doi.org/10.12973/eurasia.2017.00830a
29) Jha, N., & Shenoy, V. (2016). Digitization of Indian Education Process: A Hope or Hype. *IOSR Journal of Business and Management, 18*(10), 131-139. https://www.iosrjournals.org/iosr-jbm/papers/Vol18-issue10/Version-3/N181003131139.pdf
30) Lin, M. H., Chen, H. C., & Liu, K. S. (2017). A Study of the Effects of Digital Learning on Learning Motivation and Learning Outcome. *EURASIA Journal of Mathematics Science and Technology Education, 13*(7), 3553-3564. https://www.ejmste.com/download/a-study-of-the-effects-of-digital-learning-on-learning-motivation-and-learning-outcome-4843.pdf
31) Alasoluy, O. E. (2021). Teachers' Awareness and Competence in the Switch from Classroom-Based to Online Teaching During COVID-19 Pandemicin Lagos, Nigeria. *Interdisciplinary Journal of Education Research, 3*(2), 23-31. https://injer.org/injer/article/view/21378/13949

32) Handayani, N. F., & Gafur, A. (2020). Professionalism of Civics Teachers Facing Educational Challenges in the Era of the Covid-19 Pandemic. *International Journal of Multicultural and Multireligious Understanding, 7*(10), 527-534. https://ijmmu.com/index.php/ijmmu/article/view/2183/1764
33) Hammond, L. D., & Hyler, M. E. (2020) Preparing educators for the time of COVID … and beyond. *European Journal of Teacher Education, 43*(4), 457-465, DOI: 10.1080/02619768.2020.1816961
34) Lischer, S., Safi, N., & Dickson, C. (2021). Remote learning and students' mental health during the Covid-19 pandemic: A mixed-method enquiry. *Nature public health emergency collection*. https://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC7784617/
35) König, J., Biela, D. J. J., & Glutsch, N. (2020). Adapting to online teaching during COVID-19 school closure: teacher education and teacher competence effects among early career teachers in Germany. *European Journal of Teacher Education, 43*(4), 608-622. https://doi.org/10.1080/02619768.2020.1809650
36) Escobar, P. S., & Morrison, A. (2020). Online teaching placement during the COVID-19 pandemic in Chile: challenges and opportunities. *European Journal of Teacher Education, 43*(4), 587-607. https://doi.org/10.1080/02619768.2020.1820981
37) Compton, L. K. L. (2009). Preparing language teachers to teach language online: a look at skills, roles, and responsibilities. *Computer Assisted Language Learning, 22*(1), 73-99. https://doi.org/10.1080/09588220802613831
38) Flores, M. A., & Gago, M. (2020). Teacher education in times of COVID-19 pandemic in Portugal: national, institutional and pedagogical responses. *Journal of Education for Teaching, 46*(4), 507-516. https://doi.org/10.1080/02607476.2020.1799709
39) Nasri, N. M., Husnin, H., Mahmud, S. N. D., & Halim, L. (2020). Mitigating the COVID-19 pandemic: a snapshot from Malaysia into the coping strategies for pre-service teachers' education. *Journal of*

Education for Teaching, 46(4), 546-553. https://doi.org/10.1080/02607476.2020.1802582
40) Nazari, M., & Seyri, H. (2021). Covidentity: examining transitions in teacher identity construction from personal to online classes. *European Journal of Teacher Education*. https://doi.org/10.1080/02619768.2021.1920921
41) Dvir, N., & Oppenheimer, O. S. (2020). Novice teachers in a changing reality. *European Journal of Teacher Education, 43*(4), 639-656. https://doi.org/10.1080/02619768.2020.1821360
42) Kandpal, K.A. (2020, April 21). *Mahamari aur social media ki bhoomika*. Educationmirror. https://educationmirror.org/2020/04/21/role-of-social-media-in-the-time-of-covid19/
43) Thakur, R. (2021, April 30). *Covid-19 ke karan shiksha par kya asar pada?* Educationmirror. https://educationmirror.org/2021/04/30/impact-on-education-due-to-covid-19-situation-in-india/
44) PAPPATHY, V. A. P. A. (2018). *Effect of instructional face book on achievement in developmental psychology of distance mode prospective teachers* [Doctoral dissertation, Manonmaniam Sundaranar University]. Shodhganga.
45) Murray, C., Heinz, M., Munday, I., Keane, E., Flynn, N., Connolly, C., Hall, T., & MacRuairc, G. (2020). Reconceptualising relatedness in education in 'Distanced' Times. *European Journal of Teacher Education, 43*(4), 488-502. https://doi.org/10.1080/02619768.2020.1806820
46) Das, S. (Ed.). (n.d.). *Methodology of social research*. http://ebooks.lpude.in/arts/ma_sociology/year_1/DSOC404_METHODOLOGY_OF_SOCIAL_RESEARCH_ENGLISH.pdf
47) Wimmer, R. D., & Dominic, J. R. (2015). *Mass media research : An introduction.* (10th ed.) Cengage Learning.
48) Ibid.

अपशिष्ट

प्रश्नावली (Questionnaire)

कृपया इस सर्वेक्षण को भरने के लिए कुछ मिनट दें। इस सर्वेक्षण का उद्देश्य कोरोना महामारी के दौरान पठन-पाठन में सोशल मीडिया की भूमिका का अध्ययन करना है। यह सर्वेक्षण बाबा साहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय (केंद्रीय विश्वविद्यालय), लखनऊ के एम.फिल. शोधार्थी के शोध के लिए किया जा रहा है।

आपकी भागीदारी के लिए धन्यवाद.

Please take a few minutes to fill out this survey. The purpose of this survey is to study the role of social media in learning during the corona pandemic. This survey is being done for the research of M.Phil. scholar of Babasaheb Bhimrao Ambedkar University (A Central University), Lucknow.

Thank you for your participation.

*Required

1. शिक्षक का नाम (Teacher's Name)*

2. लिंग (Gender) *

(Mark only one oval)

- ◯ पुरुष (Male)
- ◯ महिला (Female)
- ◯ अन्य (Other)

3. उम्र (Age) *

(Mark only one oval)

- ◯ 21-30 साल (21-30 Years)
- ◯ 31-40 साल (31-40 Years)
- ◯ 41-50 साल (41-50 Years)
- ◯ 51 साल या उससे अधिक (51 Years or more)

4. स्कूल का नाम (School's Name) *

5. स्कूल का प्रकार (Type of School) *

(Mark only one oval)

- ◯ सरकारी स्कूल (Government School)
- ◯ निजी स्कूल (Private School)
- ◯ Other: _____

6. माध्यम (Medium) *

(Mark only one oval)

- ◯ हिंदी (Hindi)
- ◯ अंग्रेजी (English)

7. मोबाइल नंबर (Mob. No.) -

1 - कोरोना महामारी के चलते लगाए गए लॉकडाउन के दौरान आपके स्कूल में होने वाली पढ़ाई पर क्या प्रभाव पड़ा?

How did the lockdown affect your school's education?

(Mark only one oval)

- स्कूल बंद रहे (Schools remain closed)
- ऑनलाइन कक्षाएँ चलीं (Online Classes)

2 - यदि ऑनलाइन कक्षाएँ चलीं तो आपने प्रतिदिन कितने घंटे ऑनलाइन शिक्षण कार्य किया ?

If online classe were held, how many hours per day did you do online teaching?

(Mark only one oval)

- 1-2 घंटे (1-2 Hours)
- 2-3 घंटे (2-3 Hours)
- 3-4 घंटे (3-4 Hours)
- इससे अधिक (More than)

3 - ऑनलाइन कक्षाओं के दौरान आपको किसी भी प्रकार की असुविधा का सामना करना पड़ा ?

Did you face any kind of inconvenience during online classes?

(Mark only one oval)

- हाँ (Yes)
- नहीं (No)
- पता नहीं (Do not know)

4 - यदि हाँ तो आपको किस प्रकार की असुविधा हुई ?

If yes, what kind of inconvenience did you face?

(Tick all that apply)

- ☐ डिजिटल डिवाइस की कमी (Lack of digital devices)
- ☐ खराब इंटरनेट की समस्या (Poor Internet)
- ☐ डिजिटल प्लेटफॉर्म्स का प्रयोग करते समय भाषाई समस्या (Linguistic problem while using digital platforms)
- ☐ संवाद स्थापित करने में समस्या (Trouble communicating)
- ☐ Other: _____

5 - ऑनलाइन कक्षाओं के दौरान हुई असुविधाओं के कारण आपका शिक्षण कार्य प्रभावित हुआ ?

Did inconveniences that occur during online classes affected your teaching?

(Mark only one oval)

- ◯ हाँ (Yes)
- ◯ नहीं (No)
- ◯ पता नहीं (Do not know)

6 - लॉकडाउन के दौरान निम्नलिखित में किस प्लेटफॉर्म पर आपके स्कूल की पढ़ाई हुई ?

On which of the following platforms were your school's classes held during the lockdown?

(Tick all that apply)

- ☐ गूगल मीट (Google Meet)
- ☐ जूम (Zoom)
- ☐ माइक्रोसॉफ्ट टीम्स (Microsoft Teams)
- ☐ Other: _____

7 - ऑनलाइन शिक्षण के लिए इस्तेमाल किए गए प्लेटफॉर्म का लॉकडाउन से पहले प्रयोग किया था ?

Did you use the platform used for online learning before the lockdown?

(Mark only one oval)

- ◯ हाँ (Yes)
- ◯ नहीं (No)

8 - यदि नहीं तो इस प्लेटफॉर्म को समझने में आपको कितना समय लगा ?

If not, how long did it take yo to understand this platform?

(Mark only one oval)

- ◯ आधे से एक घंटा (30-60 Minutes)
- ◯ दो से तीन घंटे (2-3 Hours)
- ◯ एक दिन (One Day)
- ◯ दो दिन या उससे अधिक (Two days or More)

9 - ऑनलाइन शिक्षण के लिए इस्तेमाल किए गए प्लेटफॉर्म को आपने किसकी सहायता से समझा ?

Who helped you to understand this plateform ?

(Mark only one oval)

- ◯ स्वयं सीखा (Learned by myself)
- ◯ संस्थान/स्कूल द्वारा ट्रेनिंग दी गई (Training provided by the Institute/School)
- ◯ परिवार के किसी सदस्य ने सहायता की (Get help from a family member)
- ◯ गूगल व यूट्यूब की सहायता से (With the help of google and youtube)

10 - ऑनलाइन शिक्षण के दौरान शिक्षण कार्य के प्रबंधन में समस्याओं का सामना करना पड़ा ?

Did you face any problem in managing your teaching job during online teaching?

(Mark only one oval)

- ⬭ हाँ (Yes)
- ⬭ नहीं (No)
- ⬭ पता नहीं (Do not Know)

11 - यदि हाँ तो आपको किस प्रकार की समस्याएँ हुईं ?

If yes, what kind of problems did you face?

(Tick all that apply)

- ☐ छात्रों की उपस्थिति दर्ज करने में (Problem in registering attendance of students)
- ☐ गृहकार्य देने व जाँचने में (Problem in assigning and checking the homework)
- ☐ परीक्षा लेने में (Problem in taking the exam)
- ☐ Other: _____

12 - निम्नलिखित में से कौन सा सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म आपके शिक्षण कार्य के प्रबंधन में सहायक साबित हुआ ?

Which of the following social media platforms proved to be helpful in managing your teaching work ?

(Tick all that apply)

- ☐ व्हाट्सएप (Whatsapp)
- ☐ टेलीग्राम (Telegram)
- ☐ जीमेल (Gmail)
- ☐ Other: _____

13 - लॉकडाउन के दौरान जब स्कूल बंद थे तो आपके पास अपने विषय से संबंधित किताबें व नोट्स उपलब्ध थे ?

When the schools were closed during the lockdown, did you have books and notes related to your subject?

(Mark only one oval)

- ◯ हाँ (Yes)
- ◯ नहीं (No)

14 - यदि नहीं तो आपके द्वारा पाठ्य सामग्री व प्रश्नपत्र किस प्रकार तैयार किए गए ?

If not, how did you prepare the course material and question paper?

(Mark only one oval)

- ◯ गूगल की सहायता से (With the help of google)
- ◯ यूट्यूब की सहायता से (With the help of youtube)
- ◯ गूगल व यूट्यूब दोनों की सहायता से (With the help of google and youtube)
- ◯ अन्य (Other, please specify)

15 - लॉकडाउन के दौरान शिक्षण कार्य के अलावा अपने तनाव को कम करने के लिए आपने हर रोज़ किसी भी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का प्रयोग किया ?

Apart from teaching work during the lockdown, did you use any social media platform everyday to reduce your stress?

(Mark only one oval)

- ◯ हाँ (Yes)
- ◯ नहीं (No)

16 - यदि हाँ तो आपने हर रोज़ किस सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का प्रयोग किया ?

If yes, which social media platform did you use every day?

(Tick all that apply)

- [ ] फेसबुक (Facebook)
- [ ] यूट्यूब (Yotube)
- [ ] इंस्टाग्राम (Instagram)
- [ ] व्हाट्सएप (Whatsapp)
- [ ] Other: _____

17 - ऑनलाइन कक्षाओं के दिनों में पहले की तुलना में ज्यादा देर मोबाइल/लैपटॉप का इस्तेमाल करना आपको कैसा लगा ?

How do you feel about using mobile/laptop for longer than before during the days of online classes?

(Mark only one oval)

- ◯ बहुत अच्छा (Very good)
- ◯ अच्छा (Good)
- ◯ ठीक (Average)
- ◯ बुरा (Bad)
- ◯ बहुत बुरा(Very bad)

17(i) - ऑनलाइन कक्षाओं के दौरान पहले की तुलना में ज्यादा देर मोबाइल/लैपटॉप का इस्तेमाल करना आपको अच्छा लगा, क्योंकि -

You liked to use mobile/laptop for longer time than before during onlin classes, because -

(Tick all that apply)

- [ ] समय की बचत होती है (It saves time)
- [ ] प्रयोग करने में आसान है (It is easy to use)
- [ ] पाठ्य सामग्री आसानी से उपलब्ध हो जाती है (Study material is easily available)
- [ ] Other: _____

17(ii) - ऑनलाइन कक्षाओं के दौरान पहले की तुलना में ज्यादा देर मोबाइल/लैपटॉप का इस्तेमाल करना आपको खराब लगा, क्योंकि -

You did not like to use mobile/laptop for longer time than before during online classes, because -

(Tick all that apply)

- ☐ स्वास्थ्य पर संभावित दुष्प्रभाव (Potential side effects on health)
- ☐ एकाग्रता की कमी (Lack of concentration)
- ☐ अनुचित उपयोग का जोखिम (Risk of inappropriate uses)
- ☐ Other: _____

18 - ऑनलाइन कक्षाओं के दौरान पहले की तुलना में ज्यादा देर मोबाइल/लैपटॉप का इस्तेमाल करने से आप पर कोई दुष्प्रभाव हुआ ?

Did you have any side effects due to using mobile/laptop longer than before during the days of online classes?

(Tick all that apply)

- ☐ अनिद्रा (Insomnia)
- ☐ सिरदर्द (Headache)
- ☐ दृष्टि सम्बन्धी समस्या(Sight Problems)
- ☐ सुनने में समस्या (Hearing problems)
- ☐ कोई नहीं (None)
- ☐ Other: _____

19 - ऑनलाइन शिक्षण कार्य आपको कैसा लगा ?

How did you like the online teaching?

(Mark only one oval)

- ◯ बहुत अच्छा (Very Good)
- ◯ अच्छा (Good)
- ◯ ठीक (Average)
- ◯ खराब (Bad)
- ◯ बहुत खराब (Very Bad)

19(i) - ऑनलाइन शिक्षण कार्य आपको अच्छा लगा, क्योंकि -

You liked online teaching because -

(Tick all that apply)

- ☐ छात्रों की उपस्थिति में सुधार (Improve students attendance)
- ☐ जानकारी साझा करना आसान है (Easy to share information)
- ☐ सीखने-सिखाने की क्षमता को बढ़ाता है (Enhances the ability to learn and teach)
- ☐ पाठ्य सामग्री को रचनात्मक बनाकर पेश किया जा सकता है (The study material can be presented creatively)
- ☐ Other: _____

19(ii) - ऑनलाइन शिक्षण कार्य आपको अच्छा नहीं लगा, क्योंकि -

You did not like online teaching because -

(Mark only one oval)

- ◯ स्क्रीन पर ध्यान केंद्रित करने में असमर्थता (Inability to focus on screens)
- ◯ अलगाव की भावना (Sense of isolation)
- ◯ आवश्यक संसाधनों की कमी (Lack of necessary resources)
- ◯ छात्रों का कक्षा में ध्यान न देना (Students not paying attention in class)
- ◯ Other: _____

20 - आने वाले समय में आप किस प्रकार शिक्षण कार्य करना चाहते हैं ?

What kind of teaching job do you want to do in the future?

(Mark only one oval)

- ◯ स्कूल में (In School's Classroom)
- ◯ ऑनलाइन कक्षाओं द्वारा (Through Online Classes)
- ◯ कुछ दिन स्कूल व कुछ दिन ऑनलाइन (Some days in school and some days online)
- ◯ प्रतिदिन कुछ कक्षाएँ स्कूल में व कुछ ऑनलाइन (Every day some classes in school and some classes online)

21 - आपके अनुसार भविष्य में किस प्रकार के शिक्षण कार्य को बढ़ावा दिया जाएगा ?

According to you what kind of teaching will be promoted in future?

(Mark only one oval)

- ◯ स्कूली शिक्षण (Classroom Teaching)
- ◯ ऑनलाइन शिक्षण (Online Teaching)

22 - बढ़ते डिजिटलीकरण व ऑनलाइन शिक्षण प्लेटफॉर्म्स के कारण आपको अपनी नौकरी पर कोई खतरा महसूस हो रहा है ?

Are you feeling any threat to your job due to increasing digitization and online learning platforms?

(Mark only one oval)

- ◯ हाँ (Yes)
- ◯ नहीं (No)